झारखण्ड संयुक्त प्रवेश प्रतियोगी परीक्षा बोर्ड
(JCECEB) द्वारा आयोजित

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

झारखण्ड
बी. एड.
संयुक्त प्रवेश प्रतियोगिता परीक्षा - 2022

100% पाठ्यक्रमानुसार
स्टडी गाइड बुक

परीक्षा को Crack करना हुआ आसान!
JCECEB बी. एड. परीक्षा की सम्पूर्ण तैयारी अब एक ही स्टडी गाइड बुक से संभव!

भाषा हिंदी । English Language । तार्किक योग्यता । शिक्षण अभिरुचि

मुख्य विशेषताएँ

थ्योरी
JCECEB बी. एड. पाठ्यक्रम एवं विगत वर्षों के प्रश्नों पर आधारित थ्योरी

प्रश्न
2200+ महत्वपूर्ण प्रश्नों का अध्यायवार संग्रह

परीक्षा पेपर्स
वर्ष 2019 के सॉल्व्ड पेपर्स एवं 2 प्रैक्टिस सेट्स का समावेश

Code	Price	Pages
CB952	₹ 299	360

विषय-सूची

Student's Corner — *पृष्ठ संख्या*

- ⊙ **Agrawal Examcart Help Centre** — vi
- ⊙ **Best Strategy** परीक्षा की तैयारी करने का सही तरीका! — vii
- ⊙ **Current Affairs!** की 100% सटीक तैयारी कैसे करें ? — viii
- ⊙ झारखण्ड बी.एड. का परीक्षा पाठ्यक्रम एवं परीक्षा पैटर्न — ix
- ⊙ झारखण्ड बी.एड. के पिछले वर्ष के हल प्रश्न-पत्र का विश्लेषण चार्ट — x

Section-A : हिन्दी — 1-124

1. वर्ण विचार — 1-32
2. हिंदी व्याकरणः संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण एवं अव्यय — 33-42
3. लिंग, वचन, कारक एवं काल — 43-49
4. शब्द विचार : तत्सम-तद्भव, देशज व विदेशज एवं संकर शब्द — 50-55
5. वाक्य विचार : रचना अंग एवं भेद — 56-60
6. उपसर्ग प्रत्यय — 61-67
7. विराम चिह्न एवं वर्तनी — 68-73
8. संधि — 74-83
9. पर्यायवाची शब्द — 84-90
10. विलोम शब्द — 91-99
11. वाक्यांश के लिए एक शब्द — 100-103
12. मुहावरे-लोकोक्तियाँ — 104-109
13. रिक्त स्थानों की पूर्ती — 110-111
14. वाक्यगत अशुद्धियाँ — 112-116
15. वाक्य क्रमबद्धता — 117-119
16. अपठित गद्यांश/पद्यांश — 120-124

Section-B : English — 125-169

1. Comprehension — 125-134
2. Rearranging Sentences — 135-137
3. Selecting Suitable words for the Blanks — 138-139
4. Finding out Errors in the Parts of the Sentences — 140-144
5. Articles — 145-149
6. Prepositions — 150-153

7. Synonyms 154-157
8. Antonyms 158-160
9. Idioms & Phrases 161-164
10. Miscellaneous 165-169

Section-C : शिक्षण अभियोग्यता 170-252

1. शिक्षा 170-174
2. अभिक्षमता एवं अभिवृत्ति 175-178
3. शिक्षण में रुचि 179-181
4. शिक्षण 182-192
5. बच्चे एवं शिक्षण व्यवसाय 193-198
6. अभिप्रेरणा 199-202
7. समायोजन 203-209
8. नेतृत्व के गुण 210-220
9. प्रबंधन एवं समूह प्रबंधन 221-235
10. अंत:वैयक्तिक तथा अंतर्वैयक्तिक कौशल 236
11. अधिगम 237-242
12. विद्यालयी शिक्षा से सम्बन्धित समसामयिक मुद्दों के बारे में सामान्य जागरूकता 243-252

Section-D : तार्किक योग्यता 253-339

1. सादृश्यता परीक्षण 253-257
2. विषम को ज्ञात करना 258-260
3. रक्त सम्बन्ध 261-265
4. दिशा परीक्षण 266-271
5. लुप्त पदों को ज्ञात करना 272-274
6. संख्या एवं अक्षर श्रृंखला 275-278
7. समस्या को सुलझाना 279-286
8. न्याय निगमन 287-292
9. संख्यात्मक क्षमता 293-295
10. कथन एवं निष्कर्ष 296-298
11. निष्कर्ष ज्ञात करना 299-301
12. कथन एवं अनुमान 302-305
13. तार्किक समस्या 306-309
14. आकृतियों को गिनना 310-312
15. कोडिंग–डिकोडिंग 313-318

16. शब्दों का तार्किक क्रम	319-321
17. गणितीय संक्रियाएँ	322-325
18. आकृति पूर्ति	326-330
19. दर्पण प्रतिबिम्ब	331-335
20. कथन एवं तर्क	336-339
सॉल्व्ड पेपर	**1–9**
➢ झारखण्ड बी. एड. संयुक्त प्रवेश परीक्षा, 08.06.2019 (हल प्रश्न-पत्र)	1-9
प्रैक्टिस सेट्स	**10–25**
➢ प्रैक्टिस सेट–1	10-17
➢ प्रैक्टिस सेट–2	18-25

अध्याय 1 वर्ण विचार

हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों के नामकरण का श्रेय जॉर्ज ग्रियर्सन को जाता है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य को चार भागों में विभाजित किया है—

1. आदिकाल (वीरगाथा काल–सम्वत् 1050 – 1375)
2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल–सम्वत् 1375 – 1700)
3. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल–सम्वत् 1700 – 1900)
4. आधुनिककाल (गद्यकाल–सम्वत् 1900 से अब तक)

तत्कालीन सांस्कृतिक चेतना के आधार पर डॉ. रामकुमार वर्मा ने हिन्दी साहित्य को पाँच कालों में विभाजित किया है—

1. सन्धिकाल (सम्वत् 750 – 1000)
2. चारणकाल (सम्वत् 1000 – 1375)
3. भक्तिकाल (सम्वत् 1375 – 1700)
4. रीतिकाल (सम्वत् 1700 – 1900)
5. आधुनिककाल (सम्वत् 1900 से अब तक)

अनेक विचार–विमर्श के पश्चात् आज रामचन्द्र शुक्ल के काल विभाजन को ही आधार माना जाता है।

1. आदिकाल (सम्वत् 1050 – 1375)

आदिकाल को विभिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न नामों से पुकारा है—

चारण काल	—	ग्रियर्सन
वीरगाथा काल	—	रामचन्द्र शुक्ल
सन्धि चारण काल	—	डॉ. रामकुमार वर्मा
वीर काल	—	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
सिद्ध सामन्त काल	—	राहुल सांकृत्यायन
अपभ्रंश काल	—	डॉ. बच्चन सिंह
आरम्भिक काल	—	मिश्रबन्धु
आदि काल	—	हजारी प्रसाद द्विवेदी
बीजवपन काल	—	महावीर प्रसाद द्विवेदी

इन सभी विद्वानों द्वारा दिए मतों के आधार पर 'आदिकाल' ही सर्वाधिक युक्तिसंगत है। आदिकाल में धार्मिकता, वीरगाथात्मकता व शृंगारिकता की प्रधानता थी। इस काल को विभिन्न विद्वानों द्वारा अनेक नामों से पुकारा गया।

आदिकाल में दो भाषाएँ प्रमुख थीं **डिंगल व पिंगल**। आदिकाल में **आल्हा छंद** बहुत प्रचलन में था। यह वीर रस का बड़ा ही लोकप्रिय छन्द था।

- आदिकालीन साहित्य तीन भागों में विभक्त था—
  (1) सिद्ध साहित्य
  (2) नाथ साहित्य
  (3) रासो साहित्य

सिद्ध साहित्य

- सिद्धों की संख्या **84** मानी जाती है। इन सिद्धों द्वारा जनभाषा में लिखा गया साहित्य 'सिद्ध साहित्य' कहलाता है। सिद्ध कवियों की रचनाएँ दो रूपों में मिलती हैं– '**दोहा कोष**' तथा '**चर्यापद**'। 84 सिद्धों में **सरहपा, शबरपा, कण्हपा, लुइपा, डोम्भिपा, कुक्कुरिपा** आदि प्रमुख हैं। सरहपा प्रथम सिद्ध माने जाते हैं।
- बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के सिद्ध योगियों के द्वारा लिखित काव्य 'सिद्ध साहित्य' कहलाता है।

प्रमुख सिद्ध कवि

- **सरहपा**—**'दोहा कोष'** इनकी प्रमुख रचना है। इस पुस्तक में गुरु की सेवा के महत्व को दर्शाया गया है तथा बाह्य आडम्बर और पाखण्ड का विरोध किया है।
- **शबरपा**—**'चर्यापद'** इनकी प्रसिद्ध कृति है। ये सहज जीवन जीने पर बल देते हैं तथा मोह माया के त्याग की बात करते हैं। शबरपा ने सरहपा से ज्ञान की प्राप्ति की थी।
- **लुइपा**—लुइपा **शबरपा** के शिष्य थे व 84 सिद्धों में इनका स्थान सबसे ऊँचा है। इनकी समस्त रचनाओं में रहस्य की भावना निहित है।
- **डोम्भिपा**—**'डोम्बिगीतिका,' 'योगचर्या' और 'अक्षर द्विकोपदेश'** इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।
- **कण्हपा**—कण्हपा की रचनाएँ दार्शनिक विषयों पर आधारित हैं तथा इनकी संख्या 74 मानी गई है।

नाथ साहित्य

सिद्धों की भोग प्रधान योग साधना के विरोध स्वरूप नाथ पंथियों की हठ योग साधना का आरम्भ हुआ। नाथ साहित्य के प्रवर्तक **गोरखनाथ** माने जाते हैं। गोरखनाथ **मत्स्येन्द्र नाथ** के शिष्य थे। नाथों की संख्या नौ मानी गई है। नाथ पंथियों ने जातिपात, ऊँच–नीच और वर्ण भेद का विरोध किया है और निवृत्ति मार्ग पर बल दिया।

रासो साहित्य

- रासो साहित्य में रचित **काव्य वीरगाथापरक** है।
- रासो परम्परा का प्रसिद्ध ग्रन्थ है **'चन्दबरदाई' कृत 'पृथ्वीराजरासो'**
- **'पृथ्वीराज रासो'** को इस परम्परा का श्रेष्ठ महाकाव्य माना जाता है।
- आदिकाल का यह प्रथम विशालकाय महाकाव्य है। इसमें 68 समय (सर्ग) है। इस ग्रन्थ में राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है तथा ओज व माधुर्य गुण हैं।

रासो परम्परा के प्रमुख रचनाकार

पृथ्वीराज रासो	—	चंदबरदाई
परमाल रासो	—	जगनिक
संदेश रासक	—	अब्दुल रहमान
खुमाण रासो	—	दलपति विजय
बीसलदेव रासो	—	नरपति नाल्ह
हम्मीर रासो	—	शारंगधर
विजयपाल रासो	—	नल्ह सिंह भाट
श्रावकाचार	—	देवसेन
उपदेश रसायन रास	—	जिन दत्त सूरी
चन्दनबाला रास	—	आसगु
स्थूलिभद्र रास	—	जिनधर्म सूरी
भारतेश्वर बाहुबलीरास	—	शालिभद्र सूरी
रेवन्तगिरी रास	—	विजयसेन
नेमिनाथ रास	—	सुमतिगणि
पदावली	—	विद्यापति
जयमयंक जस चंद्रिका	—	मधुकर
जयचन्द प्रकाश	—	भट्ट केदार

- आदिकाल में बौद्ध एवं जैन साहित्य के साथ–साथ लौकिक साहित्य भी लिखा। लौकिक साहित्य देशभाषा डिंगल में उपलब्ध है। लौकिक साहित्य को देशभाषा साहित्य भी कहा जाता है।

अमीर खुसरो

अबुल हसन यमीनुद्दीन अमीर खुसरो (1253-1325) चौदहवीं सदी के लगभग दिल्ली के निकट रहने वाले एक प्रमुख कवि शायर, गायक और संगीतकार थे। उनका परिवार कई पीढ़ियों से राजदरबार से सम्बंधित था। स्वयं अमीर खुसरो ने आठ सुल्तानों का शासन देखा था। अमीर खुसरो प्रथम मुस्लिम कवि थे जिन्होंने हिन्दी शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दी, हिन्दवी और फारसी में एक साथ लिखा। उन्हे खडी बोली के आविष्कार का श्रेय दिया जाता है। वे अपनी पहेलियों और मुकरियों के लिए जाने जाते हैं। सबसे पहले उन्हीं ने अपनी भाषा के लिए **हिन्दवी** का उल्लेख किया था। वे फारसी के कवि भी थे। उनको दिल्ली सल्तनत का आश्रय मिला हुआ था। उनके ग्रंथों की सूची लम्बी है। साथ ही इनका इतिहास स्रोत रूप में महत्त्व है।

मध्य एशिया की लाचन जाति के तुर्क सैफुद्दीन के पुत्र अमीर खुसरो का जन्म सन् (652 हि.) में एटा उत्तर प्रदेश के पटियाली नामक कस्बे में हुआ था। लाचन जाति के तुर्क चंगेज खाँ के आक्रमणों से पीडित होकर बलबन (1266–1286 ई.) के राज्यकाल में शरणार्थी के रूप में भारत में आ बसे थे। खुसरो की माँ बलबन के युद्धमंत्री इमादुतुल मुल्क की पुत्री तथा एक भारतीय मुसलमान महिला थी। सात वर्ष की अवस्था में खुसरो के पिता का देहान्त हो गया। किशोरावस्था में उन्होंने कविता लिखना प्रारम्भ किया और 20 वर्ष के होते–होते वे कवि के रूप में प्रसिद्ध हो गए। खुसरो में व्यावहारिक बुद्धि की कोई कमी नहीं थी। सामाजिक जीवन की खुसरो ने कभी अवहेलना नहीं की। खुसरो ने अपना सारा जीवन राज्याश्रय में ही बिताया। राजदरबार में रहते हुए भी खुसरो हमेशा कवि, कलाकार, संगीतज्ञ और सैनिक ही बने रहे। साहित्य के अतिरिक्त संगीत के क्षेत्र में भी खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने भारतीय और ईरानी रागों का सुन्दर मिश्रण किया और एक नवीन राग शैली इमान, जिल्फ, साजगरी आदि को जन्म दिया। भारतीय गायन में कव्वाली और सितार को इन्हीं की देन माना जाता है। इन्होंने गीत के तर्ज पर फारसी में और अरबी गजल के शब्दों को मिलाकर कई पहेलियाँ और दोहे भी लिखे हैं।

कुछ प्रमुख कृतियाँ—तुहफा–तुस–सिगर, बाकिया नाकिया, तुगलकनामा, नुह–सिफिर

भाषा शैली—अमीर खुसरो ने फारसी तथा हिन्दी भाषा में मिश्रित कविताओं की भी रचना की थी। इस प्रकार की उनकी कुछ कवितायें प्राप्त हैं जिनमें पहला वाक्य फारसी का तथा दूसरा वाक्य हिन्दी भाषा का है। खुसरो ने अपने फारसी साहित्य में भी कुछ हिन्दी शब्दों का प्रयोग किया है।

आदिकाल के अध्ययन की प्रमुख समस्याएँ

बोलचाल की भाषा का सबसे प्राचीन उपलब्ध हल्का–सा रूप हमें अशोक के शिलालेखों तथा प्राचीन बौद्ध और जैन ग्रन्थों में मिलता है। इस काल में भी बोली–भेद था। इन धर्मग्रन्थों की भाषा से यह स्पष्ट होता है कि उस समय उत्तर भारत में बोली के तीन भिन्न रूप थे—पूर्वी, पश्चिमी और पश्चिमोत्तरी। दक्षिणी रूप का कोई उल्लेख नहीं मिलता, परन्तु इन धर्मग्रन्थों की भाषा को देखने से यह प्रतीत नहीं होता कि वह किसी बोली का प्रथम साहित्यिक रूप हो। इस विषय में डॉ. धीरेन्द्र वर्मा का मत है–"मध्यकाल के उदाहरण अधिक मात्रा में पहले–पहल अशोक की धर्मलिपियों (शिलालेखों) में पाये जाते हैं। यहाँ यह प्राकृतिक प्रारम्भिक अवस्था में नहीं है, किन्तु पूर्ण विकसित रूप में है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि "यह भाषा इससे पहले ही साहित्यिक रूप प्राप्त कर चुकी थी। बौद्धों की पालि ही उसका प्रथम साहित्यिक रूप नहीं था परन्तु उसे सम्भावित पहले रूप के प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। इस भाषा को जब बौद्ध मत के प्रभाव से साहित्यिक और धार्मिक रूप प्राप्त हुआ तो यह 'पालि' कहलाने लगी। पालि शब्द की उत्पत्ति संस्कृत पंक्ति शब्द से हुई है।" पहले 'त्रिपिटक' की मूल पंक्तियों के लिए इसका प्रयोग होता था। पंक्ति से पंति –पत्ती = पट्टी = पाटी = पालि यह रूप हुआ है। इस पालि को पंक्ति, मागधी या मागधी निरुक्ति भी कहते थे। बौद्ध लोग पालि को आदि भाषा मानते थे। उनका कहना है— "आदि कल्प में उन्नत मनुष्यगण, ब्रह्मगण, बुद्धगण एवं वे व्यक्तिगण जिन्होंने कभी कोई शब्दालाप नहीं सुना, जिसके द्वारा भाव–प्रकाशन किया करते थे, वही मागधी भाषा मूल भाषा है।" बौद्धों का यह आग्रह धार्मिक आग्रह मात्र है। सभी धर्मों के अनुयायी अपने धर्मग्रन्थों की भाषा को ही विश्व की आदि भाषा मानते आये हैं।

'प्राकृत' शब्द के दो अर्थ माने गये हैं —पहला, जनभाषा (प्रकृति जनानां भाषा प्राकृतम्), दूसरा, प्रकृति या मूल से उत्पन्न अर्थात् संस्कृत की पुत्री। पहले अर्थ के अनुसार वेद से पहले भी प्राकृतें थीं, जिनमें से एक आगे चलकर ऋग्वेदीय साहित्यिक भाषा बन गयी। सामान्य बोलचाल की प्राकृत भाषाएँ अपने साहित्यिक रूपों से प्रभावित होती थीं और उन्हें प्रभावित करती थीं। वेदों में अनेक प्राकृत शब्द और प्रयोग मिलते हैं।

कुछ विद्वान प्राकृत को संस्कृत से प्राचीन मानते हैं। काव्यालंकार के टीकाकार नमिसाधु ने प्राकृत को जनसामान्य का सहज वाग्व्यापार (परस्पर बोलचाल का साधन) माना है। इसमें व्याकरण के नियमों का पालन आवश्यक नहीं था। इस प्रकार जनसामान्य की भाषा को 'प्राकृत कहा जा सकता है। अपभ्रंश के

काव्य 'गउडबहो' (गरुड वध) के रचयिता वाक्यपतिराय ने प्राकृत को समस्त भाषाओं का उद्गम और अन्त माना था।

पालि की उत्पत्ति के विषय में चन्द्रबली पाण्डेय का मत द्रष्टव्य है। आप कहते हैं–"प्राकृतों के महत्त्व का प्रधान कारण यह हुआ कि व्रात्यों में दो ऐसे पंथ निकल आये जो परम्परा के पालन करने अथवा ब्राह्मणभक्त बनने में उतने प्रसन्न न थे, जितना कि अपना मार्ग निकालने या मनुष्य मात्र को निर्वाण दिलाने में मग्न। निदान उन्होंने द्विजी की त्याग 'मानुषी' को अपना लिया। आरम्भ में 'मागधी' का व्यवहार रहा, पर सम्प्रदाय की माँग उससे पूरी न हो सकी। मागधी थी भी मानुषी भाषा। स्वयं गौतम की प्राकृत वाणी उससे भिन्न थी। मागधी पालि से सर्वथा भिन्न मगध देश की भाषा थी। इसी कारण बौद्ध ग्रन्थों में मागधी को 'मानव भाषा' कहा है और पालि को 'देवगणों की भाषा'। जब बौद्धों को एक व्यापक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता पड़ी, तब उनकी दृष्टि भाषा के शिष्ट तथा चलित रूप पर पड़ी। उसके शिष्ट रूप का ग्रहण तो इसलिए असम्भव था कि वह द्विजों की वाणी थी और जनता से कुछ दूर थी। मागधी का प्रचार इसलिए असम्भव था कि वह प्रान्तीय तथा अति सामान्य भाषा थी। निदान निश्चित हुआ कि देववाणी के चलित या मानुषी रूप को ग्रहण किया जाये।" पालि के प्रकृति–विवेचन से प्रकट होता है कि पालि पंक्ति या लिखित भाषा थी। अतः हम उस कहीं की चलित अर्थात् बोलचाल की भाषा नहीं कह सकते। हाँ, इतना अवश्य कह सकते हैं कि वह ब्रह्मर्षिदेश और अन्तर्वेद की चलित भाषा के आधार पर बनी थी और साम्प्रदायिक आग्रह के कारण कुछ मागधी भी हो गई थी। बौद्धकाल की वही राजभाषा थी और चलित राष्ट्रभाषा भी। पालि के विषय में अभी तक यह विवाद चल रहा है कि वह पूर्वी प्रदेश की भाषा थी या पश्चिमी प्रदेश की ? उसके कृत्रिम रूप का यह एक प्रबल प्रमाण है। अधिकांश विद्वानों ने उसे पश्चिमी प्रदेश की ही भाषा माना है, क्योंकि गौतम बुद्ध पूर्वी भारत के निवासी थे, अतः पालि को उनकी मातृभाषा या जनसामान्य की भाषा नहीं माना जा सकता।

पालि के प्रभुत्व में आ जाने का परिणाम यह हुआ कि संस्कृत के प्रति लोग कुछ विरक्त हो गये और साहित्यिक प्राकृतों को विशेष महत्त्व देने लगे। पाणिनि के परिश्रम को सफल बनाने के लिए संस्कृत को व्याकरण की जंजीरों में और भी अधिक जकड़ दिया गया। इस प्रकार संस्कृत और प्राकृतों का भेद बढ़ता गया, परन्तु जनसामान्य द्वारा प्राकृतों का पक्ष लिया गया और संस्कृत के आधार पर उनका व्याकरण भी रचा गया। अब बौद्धों ने ब्राह्मणों को परास्त करने, तर्क द्वारा समझाकर अपने संघ में लाने के लिए तथा शास्त्रार्थ एवं शास्त्र–चिन्तन के लिए संस्कृत की आवश्यकता का अनुभव किया। निदान, उन्होंने भी संस्कृत का स्वागत किया ! उनके योग से संस्कृत पनप उठी और 'गाथा के रूप में उसकी एक अलग शाखा निकल आयी। बाद्धों में से हीनयानियों ने तो पालि का पल्ला पकड़ना अपना धर्म समझा, परन्तु महायानियों ने अपनी महत्ता के कारण उसकी उपेक्षा की और लोकमंगल के लिए संस्कृत को उभार दिया। जैनों ने भी उसे अपनाकर उसकी वृद्धि में योग दिया। पालि के एक कृत्रिम भाषा होने का एक प्रमाण यह है कि वह अपनी कृत्रिमता के कारण जनता में अधिक प्रचार न पा सकी और इसी कारण आगे चलकर बौद्ध विद्वानों को बाध्य होकर संस्कृत को अपनाना पड़ा। इसका एक कारण यह भी था कि ब्राह्मणों से शास्त्रार्थ संस्कृत में ही करना सम्भव था और ब्राह्मणों को पराजित किये बिना बौद्ध–धर्म का प्रचार–प्रसार सम्भव नहीं था। इसी कारण बौद्धों को संस्कृत अपनानी पड़ी।

पालि किस प्रान्त की भाषा थी, इस पर विद्वानों के भिन्न–भिन्न मत हैं। **रीस डेविस** इसे कोसल की भाषा मानते हैं, अन्य लोग मगध की, परन्तु पालि के गठन पर विचार करने से यह किसी पूर्वी प्रान्त की भाषा नहीं लगती। डॉ. बाबूलाल सक्सेना उस काल की भाषा के दो रूप मानते हैं–पालि और अशोकी प्राकृत। अशोक मगध का सम्राट था, इसलिए उसकी भाषा मागधी ही होनी चाहिए।

पालि में बौद्ध धर्म के मूल ग्रन्थ, अन्य टीकाएँ तथा पर्याप्त कथासाहित्य, काव्य, कोश, व्याकरण आदि हैं। धम्मपद एवं जातक–पालि के प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इस भाषा में भी बोली–भेद है। एक ही शब्द के अनेक रूप मिलते हैं। स् का सर्वत्र अस्तित्व और श का अभाव, र् का अस्तित्व और ल् से भेद, इस बात को प्रमाणित करते हैं कि यह पश्चिमी भाग की भाषा है। त्रिपिटक के भी सभी अंश एक ही समय के लिखे हुए नहीं हैं।

अशोकी प्राकृत–अशोक के शिलालेख भारत के सभी भागों में पाये जाते हैं। इनकी भाषा का समष्टि रूप से नाम 'अशोकी प्राकृत' पड़ गया है। इनमें उत्तर–पश्चिमी, मध्यदेशी और पूर्वी बोलियों के रूप मिलते हैं। सम्भव है, इन लेखों का मूल अर्द्धमागधी में रहा हो और जिन–जिन प्रदेशों में ये शिलालेख खोदे गये हों, वहीं की बोलियों में उनका अनुवाद कर दिया गया हो। डॉ. श्यामसुन्दरदास भी उस काल में चार बोलियों का अस्तित्व स्वीकार करते हैं। इन लेखों की लिपियाँ भी दो हैं–ब्राह्मी और खरोष्ठी।

पालि और अशोकी प्राकृत की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. प्राचीनकाल की ऋ, लृ, ऐ और औ ध्वनियों का लोप।
2. ऐ और औ के स्थान पर ए और ओ का प्रयोग।
3. संयुक्त व्यंजनों की अनुरूपता; जैसे–धर्म का धम्म।
4. विसर्ग और अन्तिम व्यंजनों का लोप।
5. 'र' ध्वनियों के साथ आने वाली 'त' वर्गीय ध्वनियाँ क्रमशः ट वर्ग में बदल गईं, जैसे–प्रथम = पठम।
6. प के स्थान पर ज और व के स्थान पर ब का प्रयोग।
7. केवल एक स् का प्रयोग।
8. संगीतात्मक स्वराघात का लोप–बलात्मक स्वराघात की प्रवृत्ति।
9. द्विवचन का लोप।
10. संज्ञाओं में अकारान्त की प्रवृत्ति।
11. कालों, कारकों और वाच्यों के अपेक्षाकृत कम रूपों का प्रयोग।
12. क्रियार्थक संज्ञा का अधिक प्रयोग।

2. भक्तिकाल (1375 – 1700)

भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का **स्वर्णयुग** कहा जाता है। हिन्दी के वास्तविक साहित्य का प्रारम्भ भक्त कवियों की रचनाओं से ही होता है।

भक्तिकाल में भक्ति की दो धाराएँ प्रवाहित हुईं, **निर्गुण तथा सगुण**।

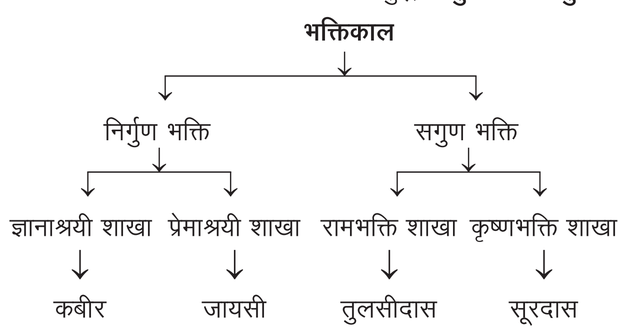

निर्गुण भक्ति

ज्ञानाश्रयी शाखा

ज्ञानाश्रयी शाखा में कवियों ने ज्ञान, प्रेम और उपासना पर बल दिया है। ज्ञानाश्रयी शाखा में भगवान के स्वरूप का विवेचन किया गया है। इस धारा में भगवान के साक्षात्कार तथा उसके प्रति अनन्य प्रेम को ही उपासना का मूल तत्व माना गया है। ज्ञानाश्रयी शाखा के कवियों की मान्यता है कि मुक्ति केवल सहज प्रेम, ज्ञान और सदाचारपूर्ण जीवन को अपनाकर ही मिल सकती है। सन्त कवियों ने समाज में व्याप्त बाह्य आडम्बरों, अन्धविश्वासों, रूढ़ियों आदि का खण्डन किया है। इन संत कवियों ने निर्गुण तथा निराकार ब्रह्म की उपासना पर ही बल दिया है।

- हिन्दी में ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रथम कवि सन्त कबीर माने जाते हैं। कबीर स्वामी रामानन्द के शिष्य थे। कबीर के काव्य में भक्ति भावना, बाह्य आडम्बर, तीर्थ, व्रत, रोजा, नमाज आदि का विरोध मिलता है।
- सन्त काव्य के प्रमुख कवि हैं—**रैदास, चरनदास, दरिया साहब, नानक देव, दादू, सहजोबाई, मलूकदास, सुन्दरदास, धर्मदास** आदि।

प्रेमाश्रयी शाखा

सामाजिक रूढ़ियों से हटकर स्वच्छन्द प्रेम तथा प्रगाढ़ प्रणय–भावना ही इस काव्य का मूल विषय रहा है।

- प्रेमाश्रयी शाखा के अधिकांश कवि सूफी हैं। इनके काव्यों में लोक–कथाओं, इतिहास तथा कल्पना का मिश्रण मिलता है।
- इस काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं—**जायसी, मंझन, कुतुबन** आदि।
- भाषा की दृष्टि से इस शाखा के अधिकांश कवियों ने अवधी भाषा का प्रयोग किया है।
- इस काव्यधारा में **'मुल्ला दाऊद'** का प्रमुख स्थान है। इनकी प्रमुख रचना **'चन्दायन'** है। यह सूफी काव्यधारा का प्रथम काव्य है।
- इसकी भाषा अवधी तथा इसे दोहा–चौपाई छन्द में लिखा गया है। चान्दायन का मूल नाम 'लोरकहा' है।
- **'कुतुबन'** की **'मृगावती'** प्रमुख रचना है। दोहा–चौपाई शैली में इसकी रचना हुई तथा अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है।
- कवि मंझन की प्रमुख रचना है—**'मधुमालती'**। इसकी रचना अवधी भाषा तथा दोहा–चौपाई छन्दों के प्रयोग से हुई है।
- **'पद्मावत'** मलिक मुहम्मद जायसी की प्रमुख रचना है। इनका जन्म जायसनगर रायबरेली में होने के कारण इनका नाम जायसी पड़ा। 'पद्मावत्' इनका 1540 ई. में लिखा महाकाव्य है। इसके अतिरिक्त इनकी अन्य रचनाएँ हैं– **'अखरावट', 'आखिरी कलाम' 'चित्ररेखा' और 'कहरानामा'**। इसमें अवधी भाषा का प्रयोग है तथा दोहा–चौपाई छन्द को अपनाया गया है। इसमें राजा रत्नसेन और महारानी पद्मावती का वर्णन है।

सगुण भक्ति

रामभक्ति शाखा

- इस शाखा के कवियों ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र का वर्णन किया है। रामभक्तों के काव्य में राम का लोकोपकारी रूप व्यक्त हुआ है।
- **वाल्मीकि** की **'रामायण'** को राम भक्ति का आदिग्रन्थ माना जाता है।
- रामकथा को जनमानस तक पहुँचाने का श्रेय तुलसीदास को जाता है।
- रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं—**अग्रदास, ईश्वर दास, नाभादास, केशवदास, सेनापति, तुलसीदास** आदि।
- अग्रदास, रामानन्द की शिष्य परम्परा के कवि थे।
- नाभादास तुलसीदास के समकालीन थे। ये अग्रदास के शिष्य थे। इनकी प्रमुख रचना **'अष्टयाम'** है।
- केशवदास राम भक्ति शाखा के विशिष्ट कवि थे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने **केशवदास** को **'कठिन काव्य का प्रेत'** कहा है। इनकी विशिष्ट कृति है **'रामचन्द्रिका'**।
- तुलसीदास रामानन्द के शिष्य थे। इनके ग्रन्थों की कुल संख्या 12 है। जिनमें 5 बड़े तथा 7 छोटे सम्मिलित हैं। इनकी प्रमुख रचना **'रामचरितमानस'** है। **रामचरितमानस** महाकाव्य है जिसमें 7 काण्ड हैं। **बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यककाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड, उत्तरकाण्ड।** रामराज्य का वर्णन रामचरितमानस के 'उत्तर काण्ड' में किया गया है। नाभादास ने तुलसीदास को 'कलिकाल का वाल्मीकि' कहा है। रामचरित मानस की रचना **2 वर्ष 7 माह 26 दिन** में हुई थी।

कृष्णभक्ति शाखा

- कृष्णभक्ति धारा के सभी कवियों ने श्रीकृष्ण की विविध लीलाओं, क्रीड़ाओं और सौन्दर्य का सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है।
- कृष्ण भक्त कवियों में **सूरदास** का प्रमुख स्थान है। ये वल्लभाचार्य के शिष्य थे।
- सूरदास की मृत्यु पर दु:खी होकर विट्ठलनाथ ने कहा था—
  'पुष्टिमार्ग को जहाज जात है सो जाको कछु लेनौ होय सो लेउ।'
- सूरदास की प्रमुख रचना है—**'सूरसागर'**। 'सूरसागर' गेय मुक्तक काव्य है तथा ब्रज भाषा में लिखा गया है।
- वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने **1565** ई. में आठ कवियों को लेकर **'अष्टछाप'** की स्थापना की। इसमें चार वल्लभाचार्य के शिष्य थे— **कुम्भनदास, सूरदास, परमानन्द दास व कृष्णदास।**
  चार स्वयं के शिष्य हैं—**गोविन्द स्वामी, नंददास, छीतस्वामी व चतुर्भुजदास।**
- मीरा कृष्ण की अनन्य भक्त थीं। उनके काव्य में कृष्ण के विरह की आकुलता रची बसी थी। मीरा की कृष्ण के प्रति आसक्ति चरम रूप में प्रकट होती है—**मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।** मीराबाई की भाषा राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है जिसमें गुजराती भाषा का विशेष पुट है। मीराबाई के पद **'मीराबाई की पदावली'** नाम से संकलित हैं।
- रसखान ने गोस्वामी विट्ठलनाथ से वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षा ली थी। रसखान का वास्तविक नाम **'सैय्यद इब्राहीम'** था। रसखान कृष्ण के अनन्य भक्त थे। रसखान की कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति को देखकर भारतेन्दु जी ने लिखा था—
  'इन मुलसमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दू बारिए'।
  तुलसीदास ने अपनी 'रामचरितमानस' सर्वप्रथम रसखान को सुनाई थी। रसखान तुलसीदास के समकालीन थे।

भक्ति आन्दोलन का उदय, विकास और दार्शनिक पृष्ठभूमि

भक्ति आन्दोलन मध्यकालीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास में एक

महत्त्वपूर्ण पड़ाव था। इस काल में सामाजिक–धार्मिक सुधारकों की धारा द्वारा समाज विभिन्न तरह से भगवान की भक्ति का प्रचार–प्रसार किया गया। यह एक मौन क्रान्ति थी।

यह अभियान सिक्खों के पहले गुरु बाबा नानक द्वारा भारतीय उप महाद्वीप में भगवान की पूजा के साथ जुड़े रीति रिवाजों के लिए उत्तरदायी था। गुरुद्वारे में गुरबानी का गायन, ये सभी मध्यकालीन इतिहास में (800–1700) भारतीय भक्ति आंदोलन से उत्पन्न हुए हैं।

इतिहास

भक्ति आन्दोलन का आरम्भ दक्षिण भारत में आलवारों एवं नायनारों से हुआ जो कालान्तर में (800 ई. से 1700 ई. के बीच) उत्तर भारत सहित सम्पूर्ण दक्षिण एशिया में फैल गया।

इस हिन्दू क्रांतिकारी अभियान के नेता शंकराचार्य थे जो एक महान विचारक और जाने–माने दार्शनिक रहे। इस अभियान को चैतन्य महाप्रभु, नामदेव, तुकाराम, जयदेव ने और अधिक मुखरता प्रदान की। इस अभियान की प्रमुख उपलब्धि मूर्ति पूजा को समाप्त करना रहा।

भक्ति आंदोलन के नेता रामानंद ने राम को भगवान के रूप में लेकर इसे केन्द्रित किया। उनके बारे में बहुत कम जानकारी है, परन्तु ऐसा माना जाता है कि वे 15वीं शताब्दी के प्रथमार्ध में रहे। उन्होंने सिखाया कि भगवान राम सर्वोच्च भगवान हैं और केवल उनके प्रति प्रेम और समर्पण के माध्यम से तथा उनके पवित्र नाम को बार–बार उच्चारित करने से ही मुक्ति पाई जाती है।

चैतन्य महाप्रभु एक पवित्र हिन्दू भिक्षु और सामाज सुधारक थे तथा वे सोलहवीं शताब्दी के दौरान बंगाल में हुए। भगवान के प्रति प्रेम भाव रखने के प्रबल समर्थक, भक्ति योग के प्रवर्तक, चैतन्य ने ईश्वर की आराधना श्रीकृष्ण के रूप में की।

श्री रामानुजाचार्य, भारतीय दर्शनशास्त्री थे और उन्हें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वैष्णव संत के रूप में मान्यता दी गई है। रामानंद ने उत्तर भारत में जो किया वही रामानुज ने दक्षिण भारत में किया। उन्होंने रुढ़िवादी कुविचार की बढ़ती औपचारिकता के विरुद्ध आवाज उठाई और प्रेम तथा समर्पण की नींव पर आधारित वैष्णव विचाराधारा के नए सम्प्रदाय की स्थापना की। उनका सर्वाधिक असाधारण योगदान अपने मानने वालों के बीच जाति के भेदभाव को समाप्त करना।

बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के अनुयायियों में संत शिरोमणि रविदास, भगत नामदेव और संत कबीर दास शामिल हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भगवान की स्तुति के भक्ति गीतों पर बल दिया।

प्रथम सिख गुरु और सिख धर्म के प्रवर्तक, गुरु नानक जी भी निर्गुण भक्ति संत थे और समाज सुधारक थे। उन्होंने सभी प्रकार के जाति भेद और धार्मिक शत्रुता तथा रीति रिवाजों का विरोध किया। उन्होंने ईश्वर को एक रूप माना तथा हिन्दू और मुस्लिम धर्म की औपचारिकताओं तथा रीति रिवाजों की आलोचना की। गुरु नानक का सिद्धान्त सभी लोगों के लिए था। उन्होंने हर प्रकार से समानता का समर्थन किया।

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में भी अनेक धार्मिक सुधारकों का उत्थान हुआ। वैष्णव सम्प्रदाय के राम के अनुयायी तथा कृष्ण के अनुयायी अनेक छोटे वर्गों और पंथों में बंट गए। राम के अनुयायियों में प्रमुख संत कवि तुलसीदास थे। वे अत्यन्त विद्वान थे और उन्होंने भारतीय दर्शन तथा साहित्य का गहरा अध्ययन किया। उनकी महान कृति 'रामचरितमानस' जिसे जन साधारण द्वारा 'तुलसी रामायण' कहा जाता है, हिन्दू श्रद्धालुओं के बीच अत्यन्त लोकप्रिय है। उन्होंने लोगों के बीच श्री राम की छवि सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, दुनिया के स्वामी और परब्रह्म के साकार रूप से बनाई।

कृष्ण के अनुयायियों ने 1585 ईसवी में हरिवंश के अंतर्गत राधा बल्लभी पंथ की स्थापना की। सूरदास ने ब्रजभाषा में सूर सागर की रचना की, जो श्री कृष्ण के मोहक रूप तथा उनकी प्रेमिका राधा की कथाओं से परिपूर्ण है।

प्रभाव

- भक्ति आन्दोलन के द्वारा हिन्दू धर्म ने इस्लाम के प्रचार, जोर–जबरजस्ती एवं राजनैतिक हस्तक्षेप का कड़ा मुकाबला किया।
- इसका इस्लाम पर भी प्रभाव पड़ा।

भक्ति आन्दोलन की कुछ विशेषताएँ

- यह आन्दोलन न्यूनाधिक पूरे दक्षिणी एशिया (भारतीय उपमहाद्वीप) में फैला हुआ था।
- यह लम्बे काल तक चला।
- इसमें समाज के सभी वर्गों (निम्न जातियाँ, उच्च जातियाँ, स्त्री–पुरुष, सनातनी, सिख, मुसलमान आदि) का प्रतिनिधित्व रहा।

भक्ति आन्दोलन के बारे में विद्वानों के विचार

बालकृष्ण भट्ट के लिए भक्तिकाल की उपयोगिता अनुपयोगिता का प्रश्न मुस्लिम चुनौती का सामना करने से सीधे–सीधे जुड़ गया था। इस दृष्टिकोण के कारण भट्ट जी ने मध्यकाल के भक्त कवियों का काफी कठोरता से विरोध किया और उन्हें हिन्दुओं को कमजोर करने का जिम्मेदार भी ठहराया। भक्त कवियों की कविताओं के आधार पर उनके मूल्यांकन के बजाय उनके राजनीतिक सन्दर्भों के आधार पर मूल्यांकन का तरीका अपनाया गया। भट्ट जी ने मीराबाई व सूरदास जैसे महान कवियों पर हिन्दू जाति के पौरुष पराक्रम को कमजोर करने का आरोप मढ़ दिया। उनके मुताबिक समूचा भक्तिकाल मुस्लिम चुनौती के समक्ष हिन्दुओं में मुल्की जोश जगाने में नाकाम रहा। भक्त कवियों के गाये भजनों ने हिन्दुओं के पौरुष और बल को खत्म कर दिया।

- रामचन्द्र शुक्ल जी ने भक्ति को पराजित, असफल एवं निराश मनोवृत्ति की देन माना था। अनेक अन्य विद्वानों ने इस मत का समर्थन किया जैसे, बाबू गुलाब राय आदि। डॉ. राम कुमार वर्मा का मत भी यही है –: मुसलमानों के बढ़ते हुए आतंक ने हिन्दुओं के ह्रदय में भय की भावना उत्पन्न कर दी थी। इस असहायावस्था में उनके पास ईश्वर से प्रार्थना करने के अतिरिक्त अन्य कोई साधन नहीं था।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सर्वप्रथम इस मत का खंडन किया तथा प्राचीनकाल से इस भक्ति प्रवाह का सम्बन्ध स्थापित करते हुए अपने मत को स्पष्टतः प्रतिपादित किया। उन्होंने लिखा–"यह बात अत्यन्त उपहासास्पद है कि जब मुसलमान लोग उत्तर भारत के मन्दिर तोड़ रहे थे तो उसी समय अपेक्षाकृत निरापद दक्षिण में भक्त लोगों ने भगवान

की शरणागति की प्रार्थना की। मुसलमानों के अत्याचार से यदि भक्ति की धारा को उमड़ना था तो पहले उसे सिन्ध में, फिर उसे उत्तरभारत में, प्रकट होना चाहिए था, पर हुई वह दक्षिण में।"

भक्ति आन्दोलन के प्रमुख सन्त

- अलवर (लगभग दूसरी शताब्दी से आठवीं शताब्दी तक, दक्षिण भारत में)
- नयनार (लगभग 5वीं शताब्दी से 10वीं शताब्दी तक, दक्षिण भारत में)
- आदि शंकराचार्य (788 ई. से 820 ई.)
- रामानुज (1017–1137)
- बासव (12वीं शती)
- माध्वाचार्य (1238–1317)
- नामदेव (1270–1309, महाराष्ट्र)
- एकनाथ–गीता पर भाष्य लिखा, विठोबा के भक्त
- सन्त ज्ञानेश्वर (1275–1296, महाराष्ट्र)
- जयदेव (12वीं शताब्दी)
- निम्बकाचार्य (13वीं शताब्दी)
- रामानन्द (15वीं शती)
- कबीरदास (1440–1510)
- दादू दयाल (1544–1603, कबीर के शिष्य थे)
- गुरु नानक (1469–1538)
- पीपा (जन्म 1425)
- पुरन्दर (15वीं शती कर्नाटक)
- तुलसीदास (1532–1623)
- चैतन्य महाप्रभु (1468–1533, बंगाल में)
- शंकरदेव (1499–1569, असम में)
- वल्लभाचार्य (1479–1531)
- सूरदास (1483–1563, बल्लभाचार्य के शिष्य थे)
- मीराबाई (1498–1563, राजस्थान में, कृष्ण भक्ति)
- हरिदास (1478–1573, महान संगीतकार जिन्होंने भगवान विष्णु के गुण गाये)
- तुकाराम (शिवाजी से समकालीन, विठल के भक्त)
- समर्थ रामदास (शिवाजी के गुरु, दासबोध के रचयिता)
- त्यागराज (मृत्यु 1847)
- रामकृष्ण परमहंस (1836–1886)
- भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद (1896–1977)

भक्तिकाल के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

कबीर	बीजक (साखी, सबद, रमैनी)
दादू	हरडेवाणी
नानक	गुरु ग्रंथ साहिब
रैदास	बानी
मुल्ला दाऊद	चन्दायन
कुतुबन	मृगावती
मंझन	मधुमालती
जायसी	पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, कहरानामा, चित्ररेखा, मसलानामा
सुंदरदास	सुंदर विलाप
मलूकदास	ज्ञान बोध, रत्नखान
उसमान	चित्रावली
ईश्वरदास	सत्यवती कथा
नंददास	रूप मंजरी, रास पंचाध्यायी
नरोत्तमदास	सुदामा चरित
मीराबाई	नरसी जी का मायरा, गीत गोविन्द की टीका, रागगोविन्द
हित हरिवंश	हित चौरासी
सूरदास	सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी
अग्रदास	रामाष्टयाम, राम भजन मंजरी
बलभद्र मिश्र	हनुमन्नाटक
नाभादास	भक्तमाल
शेख नबी	ज्ञान दीपक
परमानन्द दास	परमानंद सागर
कृष्णदास	जुगलमान चरित्र
स्वामी हरिदास	हरिदास जी के पद
रसखान	प्रेम वाटिका, सुजान रसखान, दानलीला

3. रीतिकाल (सम्वत् 1700 – 1900)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार रीतिकाल की समय सीमा सम्वत् 1700 से 1900 तक मानी गई है। राजनीति की दृष्टि से यह काल मुगलों के वैभव का काल माना जाता है तो चरमोत्कर्ष के साथ ही उत्तरोत्तर ह्रास और पतन का काल भी माना जाता है। इस काल में पूरा समाज दो भागों में विभक्त था–शासक और शासित। सामन्तवाद का बोलबाला था। नारी मनोरंजन तथा विलास का कारण बनकर रह गई थी।

साहित्य की दृष्टि से यह काल काफी समृद्ध रहा। इस काल के कवि किसी न किसी राजा के आश्रय में रहते थे। राजाओं के लिए ही वह साहित्य का सृजन किया करते थे। राजा से उन्हें धन भी मिलता था तथा प्रतिष्ठा भी। इसमें आश्रयदाताओं की रुचि को ध्यान में रखकर ही काव्य लिखा जाता था। काव्य में विलासिता की प्रधानता थी। इस काल में प्रबन्ध काव्य की तुलना में मुक्तक काव्य, शृंगार, वीर, करुण व शान्त रस का प्रयोग किया गया। ब्रज भाषा की प्रधानता थी।

- रीतिकाल के लिए प्रयुक्त किए गए अन्य नाम है—
  - **अलंकृत काल**
  - **शृंगार काल**
  - **कलाकाल**
  - **उत्तर मध्यकाल**
- मिश्र बंधुओं ने इसे **'अलंकृत काल'** तथा विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसे **'शृंगार काल'** कहा है।
- बिहारी सतसई रीतिकाल की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जा सकती है।

संस्कृत में रीति शब्द का प्रयोग आचार्य वामन ने किया। उनके अनुसार **"विशिष्ट पद रचना रीतिः"** अर्थात् विशेष प्रकार की पद रचना ही रीति है। आचार्य वामन ने **'रीति सम्प्रदाय'** का प्रवर्तन किया।

- अधिकांश रीतिकवियों ने अपने रीति निरूपण में संस्कृत काव्यशास्त्र के ग्रन्थों को आधार बनाया है। इनमें—

भरतमुनि	—	नाट्यशास्त्र
भामह	—	काव्यालंकार
दण्डी	—	काव्यादर्श
आनन्दवर्धन	—	ध्वन्यालोक
विश्वनाथ	—	साहित्य दर्पण

रीतिकाल के कवियों को तीन वर्गों में बाँटा गया है—

(1) रीतिबद्ध कवि

(2) रीतिसिद्ध कवि

(3) रीतिमुक्त कवि

(1) रीतिबद्ध कवि—रीतिबद्ध कवि वे कवि हैं जिन्होंने लक्षण ग्रन्थों की रचना की है; जैसे—**देव, चिन्तामणि, मतिराम, भूषण, जसवन्त सिंह, कुलपति मिश्र, भिखारीदास, पद्माकर, ग्वाल कवि।**

(2) रीतिसिद्ध कवि—रीतिसिद्ध कवि वे कवि हैं जिन्होंने लक्षण ग्रन्थ नहीं लिखे किन्तु रीति की जानकारी का उपयोग अपने काव्य ग्रन्थों में किया; **जैसे—बिहारी।**

(3) रीतिमुक्त कवि—रीतिमुक्त कवि वे कवि हैं जिन्होंने न तो रीति की जानकारी का कभी उपयोग किया और न ही लक्षण ग्रन्थों की रचना की। प्रमुख रीतिमुक्त कवि है—**घनानन्द, बोधा, आलम** तथा **ठाकुर आदि।**

- रीतिकालीन कवि केशव को **'कठिन काव्य का प्रेत'** कहा जाता है क्योंकि उनकी कविता अत्यधिक क्लिष्ट है।
- बिहारी की सतसई के विषय में कहा गया है कि

'सतसइया के दोहरे ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगें घाव करैं गम्भीर।।'

- आचार्य विश्वनाथ मिश्र के अनुसार भूषण का वास्तविक नाम **'घनश्याम'** था। भूषण नाम उनकी उपाधि थी जो कि चित्रकूट के राजा **रुद्रशाह सोलंकी** ने इन्हें सम्मान स्वरूप दी थी।
- रीतिमुक्त कवि घनानन्द दिल्ली के सम्राट मोहम्मदशाह के दरबार में मीर मुंशी थे तथा **सुजान** नामक दरबारी नर्तकी से प्रेम करते थे, परन्तु उसने इनका साथ नहीं दिया। अतः इनकी कविता में वियोग की प्रधानता है। इन्हें **'प्रेम की पीर के कवि'** कहा जाता है।
- रीतिमुक्त कवि आलम औरंगजेब के पुत्र के आश्रित कवि थे। शेख नाम की रंगरेजिन से इन्होंने प्रेम विवाह किया। यह जन्म से ब्राह्मण थे बाद में मुसलमान बन गए।

रीतिकालीन कवि एवं उनकी रचनाएँ

कृपाराम	हिततरंगिणी
केशवदास	रसिक प्रिया, कवि प्रिया
मतिराम	ललित ललाम, अलंकार पंचाशिका, रसराज, सतसई, वृत्त कौमुदी।
भूषण	शिवाबावनी, छत्रसाल दशक, शिवराज भूषण, अलंकार प्रकाश
बिहारी	सतसई
देव	भाव विलास, शब्द रसायन, सुखसागर तरंग, अष्टयाम, रस विलास।
घनानन्द	सुजान हित, कृपाकंद, वियोग बेलि, इश्क लता, प्रेम पद्धति, प्रेम सरोबर।
पद्माकर	जगद्विनोद, पद्माभरण, गंगा लहरी, प्रबोध पचासा, प्रतापसाहि।
रसलीन	अंगदर्पण, रस प्रबोध
भिखारीदास	काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय, छन्द प्रकाश, छन्दार्णव पिंगल, रस सारांश
ग्वाल कवि	नखशिख, रस रूप, कवि दर्पण
कवि गोप	रामचन्द्र भूषण, रामालंकार, रामचन्द्राभरण।
मण्डन	रस रत्नावली, रस विलास, काव्य रत्न, नैन पचासा।
कुलपति मिश्र	रस रहस्य, नखशिख, दुर्गा भक्ति तरंगिणी।
जसवन्त सिंह	आनन्द विलास, भाषा भूषण, अनुभव प्रकाश, सिद्धान्त बोध।
चिन्तामणि	कविकुल कल्पतरु, शृंगार मंजरी, काव्य विवेक
आलम	आलम केलि
बोधा	इश्कनामा, विरह वारीश
ठाकुर	ठाकुर शतक
द्विजदेव	शृंगार बत्तीसी, शृंगार लतिका, कवि कल्पद्रुम
प्रताप साहि	शृंगार मंजरी, शृंगार शिरोमणि, अलंकार चिन्तामणि, काव्य विनोद।
सोमनाथ	शृंगार विलास, प्रेम पच्चीसी, रस पीयूष निधि।
सूदन	सुजान चरित

4. आधुनिक काल (1900 से अब तक)

आधुनिक युग साहित्य के विस्तार और व्यापकता की दृष्टि से हिन्दी–साहित्य के इतिहास का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण काल है। इसमें पद्य के साथ–साथ गद्य का बहुमुखी विस्तार हुआ है। इसलिए विवेचन की सुविधा के लिए आचार्य शुक्ल ने इस काल को पहले दो खण्डों में विभाजित किया है–गद्य-खण्ड और पद्य-खण्ड। तत्पश्चात् इन दोनों खण्डों को क्रमशः तीन उत्थानों में विभक्त कर दिया है–

(1) प्रथम उत्थान–सम्वत् 1925-50,

(2) द्वितीय उत्थान–सम्वत् 1950-75,

(3) तृतीय उत्थान–सम्वत् 1975 से अब तक।

हिन्दी साहित्य के इतिहास के कुछ अन्य लेखकों ने इस काल को क्रमशः भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग और प्रगतिवादी युग में विभक्त किया। यह विभाजन सर्वथा संगत नहीं प्रतीत होता, क्योंकि इनमें से 'छायावादी–युग' ने जितना आधुनिक हिन्दी कविता को प्रभावित किया है गद्य को प्रभावित नही कर सका है। इसलिए गद्य-साहित्य को इसके अन्तर्गत पूर्ण रूप से नहीं माना जा सकता। कुछ आलोचकों ने इस काल के विभिन्न साहित्यांगों के प्रतिनिधि साहित्कारों के नाम पर इसे प्रेमचन्द-प्रसाद-शुक्ल युग माना है, परन्तु हम प्रगतिवादी और प्रयोगवादी युगों का नामकरण किसी भी एक या अनेक साहित्यकारों के नाम पर नहीं

कर सकते, क्योंकि अभी हमें प्रगतिवादी तथा प्रयोगवादी युगों में किसी भी ऐसे समर्थ साहित्यकार के दर्शन नहीं हो सके हैं जो सब पर छाया रहा हो, भारतेन्दु के समान सबका प्रेरणा–स्रोत रहा हो।

आधुनिक काल के सरल एवं संक्षिप्त विवेचन के लिए बाबू गुलाबराय ने इस काल का जो विभाजन किया है, वह संगत प्रतीत होता है। उन्होंने इस काल को–गद्य और पद्य दो खण्डों में विभाजित कर गद्य की विभिन्न विधाओं; जैसे नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आलोचना आदि का अलग–अलग पूरा इतिहास एक साथ प्रस्तुत किया है। इस इतिहास को उन्होंने न जो विभिन्न उत्थानों में ही विभाजित किया हैऔर न व्यक्ति–विशेषों के नाम पर उनका नामकरण ही किया है। अस्तु, हम आधुनिक–काल के विवेचन में इसी पद्धति का अनुसरण करना अधिक उचित समझते हैं। विशुद्ध ऐतिहासिक विवेचन की दृष्टि से शुक्ल जी का काल–विभाजन संगत अवश्य है परन्तुअध्ययन की दृष्टि से बाबू गुलाबराय की पद्धति ही अधिक सरल और संगत प्रतीत होती है, परन्तु ऐसा करते समय हम देश को आजादी मिलने से पूर्व के साहित्य तथा उसके बाद के साहित्य को दो भागों में विभाजित कर विवेचन करना पसन्द करेंगे। क्योंकि इन दोनों कालों के साहित्य में पर्याप्त अन्तर मिलता है।

आधुनिक युग में हिन्दी गद्य के विकास को निम्न शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है–

(1) भारतेन्दु युग

(2) द्विवेदी युग

(3) छायावादी युग

(4) प्रगतिवादी युग

(5) प्रयोगवादी युग

(6) नई कविता

(1) भारतेन्दु युग

- आधुनिक काल का प्रथम चरण भारतेन्दु युग के नाम से जाना जाता है। इसमें भारतीय नवजागरण की चेतना को सर्वप्रथम प्रतिष्ठित करने का श्रेय **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** को है।
- भारतेन्दु जी ने हिन्दी गद्य को परिमार्जित करके एक नया स्वरूप प्रदान किया तथा गद्य की अनेक विधाओं में साहित्य का सृजन किया।

  इस युग में भारतेन्दु जी ने **'हरिश्चन्द्र मैगजीन'** तथा **'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका'** जैसी पत्रिकाओं का सम्पादन करके हिन्दी के प्रचार तथा प्रसार को एक नया मोड़ दिया।
- निबन्ध, नाटक तथा कहानी जैसी गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास किया।
- भारतेन्दु युग में राष्ट्र प्रेम की भावना, सामाजिक दुर्दशा का चित्रण, शृंगारिकता, भक्ति की भावना, हास्य व्यंग्य तथा प्रकृति का चित्रण बहुत ही सुन्दर रूप में हुआ है।
- भारतेन्दु युग के प्रमुख रचनाकर हैं—**पण्डित प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', ठाकुर जगमोहन सिंह, राधाकृष्णदास, श्यामाचरण गोस्वामी, किशोरी लाल गोस्वामी, अम्बिकादत्त व्यास।**
- **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** (1850-1885)—भारतेन्दु जी ने हिन्दी गद्य तथा पद्य की सभी विधाओं में रचना की है। इनकी रचनाएँ राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत हैं। इन्होंने सत्रह नाटकों तथा प्रहसनों की रचना की। इनमें से प्रमुख हैं—**मौलिक नाटक—'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'सत्य हरिश्चन्द्र', 'श्री चन्द्रावली', 'विषस्य विषमौषधम्', 'भारत दुर्दशा', 'नील देवी', 'अंधेर नगरी', प्रेमजोगिनी तथा 'सती प्रताप'। अनुदित नाट्य रचनाएँ—'विद्यासुन्दर', 'पाखण्ड विडम्बना', 'कर्पूर मंजरी', 'भारत जननी', 'मुद्रा राक्षस', 'दुर्लभ बंधु' आदि।**

  काव्यकृतियाँ—'प्रेममलिका', 'प्रेम माधुरी', 'प्रेम तरंग', 'प्रेम प्रलाप' आदि।
- **प्रतापनारायण मिश्र** (1856-1895)—प्रताप नारायण मिश्र भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को अपना गुरु व आदर्श मानते थे। ये भारतेन्दु मण्डल के प्रमुख लेखकों में से एक थे। **'हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान'** इनका प्रसिद्ध नारा था। इनके प्रमुख नाटक हैं—**'कलिकौतुक' 'कलिप्रभाव', 'हठी हम्मीर'।**

  कविताएँ—**'प्रेम पुष्पावली', 'मन की लहर'।**

  अनुदित गद्य कृतियाँ—**'नीतिरत्नावली', 'कथामाला'** आदि।

  प्रतापनारायण मिश्र ने **'ब्राह्मण पत्र'** निकाला। इसमें वह देश की सामाजिक समस्याओं पर निबन्ध लिखा करते थे।
- **बालकृष्ण भट्ट** (1844-1915)—भारतेन्दु युग में बालकृष्ण भट्ट का प्रमुख स्थान है। बालकृष्ण भट्ट को रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी का **'एडीसन'** कहा है। हिन्दी में निबन्धों का सूत्रपात बालकृष्ण भट्ट जी ने ही किया। भट्ट जी ने 33 वर्षों तक **'हिन्दी प्रदीप'** का सम्पादन एवं प्रकाशन किया। इनके प्रमुख उपन्यास है—**'नूतन ब्रह्मचारी', और सौ अजान एक सुजान।**

  नाटक—**'आचार विडम्बन'**।
- **बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन** (1855-1922)—प्रेमघन उच्चकोटि के गद्यकार थे। सन् 1881 में मिर्जापुर से **'आनन्द कादम्बिनी'** नामक पत्र निकाला। इसके अतिरिक्त **'नागरी नीरद'** नाम से भी एक साप्ताहिक पत्र निकाला। इनका प्रसिद्ध नाटक **'भारत सौभाग्य'** है। प्रेमघन ने खड़ी बोली का परिमार्जन किया। गद्य में निबन्ध, आलोचना, नाटक तथा प्रहसन लिखकर अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया। गद्य में खड़ी बोली के शब्दों का सुन्दर रूप में प्रयोग किया है तथा खड़ी बोली गद्य के प्रथम आचार्य थे।

भारतेन्दु युग की प्रमुख पत्रिकाएँ–

- **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**—'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' 'कविवचन सुधा', 'बाला बोधिनी'।
- **प्रतापनारायण मिश्र**—'ब्राह्मण'
- **बालकृष्ण भट्ट**—'हिन्दी प्रदीप'
- **बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'**—'आनन्द कादम्बिनी'

(2) द्विवेदी युग

सन् 1900 से लेकर 1920 तक का हिन्दी साहित्य आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से इतना अधिक प्रभावित है कि इस कालखण्ड को द्विवेदी युग की संज्ञा दी गई। **'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी'** ने सन् 1903 में **'सरस्वती'** के प्रकाशन द्वारा हिन्दी को एक विशाल वट वृक्ष का रूप

प्रदान किया। इसमें हिन्दी साहित्य के विविध रूपों और शैलियों का विकास हुआ। गद्य–पद्य में खड़ी बोली की पूर्ण प्रतिष्ठा का श्रेय महावीर प्रसाद द्विवेदी को जाता है। सर्वप्रथम द्विवेदी जी ने ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली में काव्य रचना के लिए अपने युग के कवियों को प्रेरित किया। इस युग को डॉ. नगेन्द्र ने जागरण सुधार काल भी कहा है।

- द्विवेदी युगीन कविताओं में राष्ट्रीयता की भावना, इतिवृत्तात्मकता, प्रकृति चित्रण, खड़ी बोली हिन्दी का प्रचुरता से प्रयोग हुआ है।
- द्विवेदी युग के प्रमुख कवि हैं—**मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', जगन्नाथ दास रत्नाकर, रामनरेश त्रिपाठी, श्रीधर पाठक, नाथूराम शर्मा 'शंकर' आदि।**
- **अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'** (1865-1947)—खड़ी बोली हिन्दी काव्य में हरिऔध जी का प्रमुख स्थान है।
- आपके प्रमुख नाटक हैं—**'प्रद्युम्न विजय' (1893) तथा 'रुक्मिणी परिणय' (1894)**।
- प्रमुख उपन्यास है—**'ठेठ हिन्दी का ठाठ' (1899) तथा 'अधखिला फूल' (1907)।**
- प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं—**उपदेश कुसुम, प्रेम प्रपंच, पुष्प विनोद, विनोद वाटिका, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे, पद्यप्रसून, प्रियप्रवास, पारिजात, वैदेही वनवास, हरिऔध सतसई, रस कलश और फूल और पत्ते आदि।**
- **'प्रियप्रवास' (1914 ई.)** हरिऔध द्वारा लिखा खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है। इस महाकाव्य में श्रीकृष्ण के मथुरा गमन, राधा एवं गोपियों की विरह व्यथा, पवन दूती प्रसंग, यशोदा की व्यथा, उद्धव गोपी संवाद, उद्धव राधा संवाद का मार्मिक निरूपण हुआ है। प्रियप्रवास के कथानक को 17 सर्गों में विभक्त किया गया है। प्रियप्रवास में हरिऔध ने श्रीकृष्ण को भगवान न मानकर एक महापुरुष, लोकसेवक, जननायक के रूप में दर्शाया है। इस महाकाव्य पर इन्हें मंगलाप्रसाद पारितोषिक पुरस्कार मिला।
- **मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964 ई.)**—मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों में इनका प्रमुख स्थान है। इन्होंने **'रसिकेन्द्र'** उपनाम ने ब्रजभाषा में कविता लिखी।
- गुप्त जी की देशप्रेम और राष्ट्रीय चेतना को देखकर गाँधीजी ने उन्हें **'राष्ट्रकवि'** कहा था। राष्ट्रकवि के रूप में गुप्त जी **भारत भारती (1912 ई.)** से लोकप्रिय हुए। **'भारत भारती'** के आरम्भ में कवि ने ईश्वर की स्तुति या उनकी वन्दना न करके बल्कि देशप्रेम और अपनी भाषा के प्रति प्रेम को दर्शाया है—

  'मानस भवन में आर्यजन जिनकी उतारें आरती।
  भगवान भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।।'

- मैथिलीशरण गुप्त की प्रमुख रचनाएँ हैं—**रंग में भंग (1909 ई.), जयद्रथ वध (1910 ई.), भारत भारती (1912 ई.), पंचवटी (1925 ई.), झंकार (1929 ई.), साकेत (1931 ई.), यशोधरा (1932 ई.), द्वापर (1936 ई.), जयभारत (1952 ई.), विष्णुप्रिया (1957 ई.)** आदि।
- गुप्त जी द्वारा रचित **'साकेत'** महाकाव्य नायिका प्रधान महाकाव्य है। इस रचना का मुख्य उद्देश्य उर्मिला जैसे उपेक्षित नारी पात्र को महिमामण्डित करना है। उर्मिला ही इस महाकाव्य की **'नायकत्व'** की अधिकारिणी है। साकेत नायिका प्रधान महाकाव्य है। **'साकेत'** का नामकरण **'स्थान'** के आधार पर किया गया है। यह अयोध्या का दूसरा नाम है। इस महाकाव्य में कुल बारह सर्ग हैं। जिसमें से दो सर्ग अत्यन्त महत्वपूर्ण आठवाँ सर्ग तथा नवम सर्ग। आठवें सर्ग में चित्रकूट में हुई सभा में कैकेयी के अनुताप का वर्णन किया गया है, जबकि नवम् सर्ग में उर्मिला की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण हुआ है। उर्मिला की विरह व्यथा का वर्णन करते हुए एक स्थान पर गुप्त जी ने लिखा है—

  'मुझे फूल मत मारो
  मैं अबला बाला वियोगिनी कुछ तो दया विचारो।।
  होकर मधु के मीत मदन पटु तुम कटु गरल न गारो।।
  मुझे विकलता तुम्हें विफलता ठहरो श्रम परिहारो।।'

द्विवेदी युग की प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ

- **महावीर प्रसाद द्विवेदी** — सरस्वती (1903)
- **रूद्रदत्त शर्मा** — हितवाणी (1904)
- **मदन मोहन मालवीय** — अभ्युदय (1907)
- **बाल गंगाधर तिलक** — केसरी (1908)
- **कृष्णकान्त मालवीय** — मर्यादा (1909)
- **गणेश शंकर विद्यार्थी** — प्रताप (1913)

(3) छायावाद (1920-1936 ई.)

- छायावादी युग में जहाँ एक तरफ वेदना और पीड़ा के गीत गाए गये वहीं दूसरी ओर स्फूर्ति, आत्मविश्वास और प्रेरणा के भी गीत गाए गए।
- **डॉ. रामकुमार वर्मा** के अनुसार—**जब परमात्मा की छाया आत्मा में और आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने लगती है, तो छायावाद की सृष्टि होती है।**
- जयशंकर प्रसाद को **छायावाद का प्रवर्तक** माना जाता है।
- छायावादी युग में आत्मानुभूति की प्रधान अभिव्यक्ति, सूक्ष्म भावाभिव्यक्ति की प्रधानता, प्रेम विरह और करुणा की मार्मिक अभिव्यक्ति, सौन्दर्य के प्रति आकर्षण तथा सौन्दर्य की सूक्ष्म अभिव्यक्ति हुई है।
- छायावादी युग के प्रमुख स्तम्भ हैं—**जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पंत व सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला।**
- **जयशंकर प्रसाद (1890-1937)**—जयशंकर प्रसाद छायावादी युग के प्रतिनिधि कवि हैं। इनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं—

  कामायनी, आँसू, चित्राधार, लहर, झरना आदि।

- नाटक—**चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जनमेजय का नागयज्ञ, कामना, एक घूँट, विशाखा, राज्यश्री, कल्याणी, अजातशत्रु और प्रायश्चित।**
- उपन्यास—**कंकाल, तितली और इरावती (अपूर्ण रचना)**
- कहानी संग्रह—**प्रतिध्वनि, छाया, आकाशदीप, आँधी और इन्द्रजाल** आदि।
- निबन्ध—**काव्य और कला।**
- **'कामायनी'** महाकाव्य प्रसाद की **कालजयी कृति** है।
- **सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (1897-1961)**—निराला **मुक्तछन्द के प्रवर्तक** माने जाते हैं। उनकी कविता में नवजागरण का सन्देश, प्रगतिशील चेतना तथा राष्ट्रीयता का स्वर विद्यमान है। निराला, प्रेम, विद्रोह और क्रान्ति के कवि हैं।

- निराला जी को **'बसंत के अग्रदूत'** भी कहा जाता है।
- कविता संग्रह—**अनामिका, परिमल, गीतिका।**
- काव्य कृति—**तुलसीदास, राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति**
- गद्य रचनाएँ—**लिली, चतुरी–चमार, अलका, प्रभावती, बिल्लेसुर बकरिहा और निरूपमा।**
- **सरोजस्मृति**—हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ **शोक गीत** है।
- निराला जी की रचना **'तुम और मैं'** में उनका रहस्यवादी स्वर मुखरित हुआ है।
- निराला जी पूँजीपतियों द्वारा सामान्य जनता के शोषण का विरोध करते हुए मुक्त छन्द की कविता **'कुकुरमुत्ता'** में कहते हैं—

  "अबे सुन बे गुलाब
  भूल मत, जो पाई खुशबू रंगो आब।
  खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
  डाल पर इतरा रहा कैपेटालिस्ट।"

- इसी प्रकार एक गरीब भिखारी की दयनीय दशा का चित्रण करते हुए **'भिक्षुक'** कविता में वह कहते हैं—

  "वह आता
  दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता
  पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
  चल रहा लकुटिया टेक
  मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को
  मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता—
  दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।।"

- **सुमित्रानन्दन पंत (1900-1977)**—सुमित्रानन्दन को प्रकृति के सुकुमार कवि के रूप में जाना जाता है। सुमित्रानन्दन का प्रारम्भिक नाम **गुसाईदत्त** था। इनके साहित्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।
- पंत जी के **'पल्लव'** को छायावाद का **'मैनीफेस्टो'** (**घोषणा पत्र**) कहा है।
- पंत जी की प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं—**उच्छवास, वीणा, पल्लव, गुंजन, ग्रन्थि।**
- अरविन्द जी के नवचेतनावाद से प्रभावित रचनाएँ—**स्वर्णधूलि, स्वर्ण किरण, युगपथ, अतिमा, कला और बूढ़ा चाँद, चिदम्बरा।**
- पंत की प्रगतिवादी रचनाएँ—**ग्राम्या, युगान्त, युगवाणी।**
- कहानी—**परी, रानी, क्रीड़ा, ज्योत्सना।**
- महाकाव्य—**लोकायतन, सत्यकाम।**
- **चिदम्बरा** पर पंत जी को **ज्ञानपीठ पुरस्कार** मिला।
- **लोकायतन** पर **सोवियत पुरस्कार** मिला।
- **महादेवी वर्मा (1907-1987)**—महादेवी वर्मा को **'आधुनिक युग की मीरा'** कहा जाता है। उनके काव्य में वेदना और दुख व्याप्त है।
- काव्य संग्रह—**नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत और दीपशिखा।**
- यामा में उनकी छायावादी युग की मुख्य–मुख्य कविताएँ संकलित है।

प्रमुख छायावादी कवि एवं उनकी रचनाएँ

जयशंकर प्रसाद

- **काव्य—कानन कुसुम, महाराणा का महत्व, झरना, आँसू, लहर, कामायनी, प्रेमपथिक।**
- **नाटक—स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जनमेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री, कामना, एक घूँट।**
- **कहानी संग्रह—छाया, प्रतिध्वनि, आकशदीप, आँधी, इन्द्रजाल**
- **उपन्यास—कंकाल, तितली, इरावती।**

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

- **काव्य—अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, अपरा, कुकुरमुत्ता, नए पत्ते, अर्चना, सरोज स्मृति, आराधना**
- **कहानी व रेखाचित्र—चतुरी चमार, सखी, सुकुल की बीबी, लिली**
- **उपन्यास—अप्सरा, अलका, निरुपमा, प्रभावती, कुल्लीभाट, काले कारनामे।**

सुमित्रानन्दन पंत

- **काव्य—उच्छवास, ग्रन्थि, वीणा, पल्लव, गुंजन**
- **स्वर्ण काव्य—कला और बूढ़ा चाँद**
- **आत्मकथा—साठ वर्ष : एक रेखांकन**
- **महाकाव्य—लोकायतन, सत्यकाम**
- **कहानियाँ—परी, रानी, क्रीड़ा, ज्योत्सना**

महादेवी वर्मा

- **काव्य—नीहार, रश्मि, नीरजा,सांध्यगीत, यामा**

(4) प्रगतिवाद

- जनजीवन से जुड़े सुख–दुख की अभिव्यक्ति पहली बार प्रगतिवादी काव्य में दिखाई दी। प्रगतिवाद का मूल आधार साम्यवाद है। हिन्दी का **'प्रगतिवादी'** काव्य मार्क्सवाद से प्रभावित है। मार्क्सवाद के प्रवर्तक हैं जर्मनी अर्थशास्त्री कार्ल मार्क्स (1818-1883 ई.)। मार्क्सवाद ने समाज को दो वर्गों में विभक्त किया है– शोषक वर्ग और शोषित वर्ग। शोषक वर्ग में पूँजीपति, जमींदार व उद्योगपति आदि आते हैं, जबकि शोषित वर्ग में मजदूर, श्रमिक, किसान और गरीब जनता आती है। एक गरीब बालक का चित्रण करते हुए कवि **दिनकर** लिखते हैं—
  'श्वानों को मिलता दूध–वस्त्र भूखें बालक अकुलाते हैं।
  माँ की छाती से चिपक ठिठुर जाड़े की रात बिताते हैं।।'
- जनजीवन और उससे जुड़े सुख–दुख की अभिव्यक्ति पहली बार प्रगतिवादी काव्य में सच्चे अर्थों में हुई है।
- निराला की **'वह तोड़ती पत्थर'**, **'नए पत्ते'** व **'कुकुरमुत्ता'**, पंत की **'ज्योत्सना'** तथा **'युगवाणी'** कविताओं में प्रगतिवाद का स्वर स्पष्ट दिखाई देता है।
- भारत देश जो कि सोने की चिड़िया कहलाता था, उसी देश की जनता को बेकारी और भुखमरी से बिलखते देख कवि हृदय कह उठता है—
  'दोपहरी पर तू तपरत, मेरा उर देख पिघलता है।
  अरबों का है विनियोग तुझे दो समय न भोजन मिलता है। (डॉ. वत्स)

- प्रमुख प्रगतिवादी कवि हैं—**नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल त्रिलोचन, शिवमंगल सिंह सुमन।**
- **नागार्जुन (1911-1998 ई.)**—प्रगतिवादी कवियों में नागार्जुन का प्रमुख स्थान है। आरम्भ में ये **'यात्री'** के नाम से काव्य रचना करते थे। इनका वास्तविक नाम **'वैद्यनाथ मिश्र'** है।
- प्रमुख काव्य कृतियाँ—**युगधारा (1956 ई.), सतरंगे पंखों वाली (1959 ई.), प्यासी पथराई आँखें (1962 ई.) और भस्मांकुर।**
- अपने देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को देखकर कवि ने अपनी पीड़ा को इस तरह व्यक्त किया—

  'रामराज्य में अबकी रावण नंगा होकर नाचा है।
  सूरत शक्ल वही है भैया बदला केवल ढाँचा है।।'
- **केदारनाथ अग्रवाल**—केदारनाथ अग्रवाल सच्चे अर्थों में जनवादी कवि माने जाते हैं।
- इनका पहला कविता संग्रह **'फूल नहीं रंग बोलते हैं'** परिमल में प्रकाशित हुआ था।
- इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—**युग की गंगा, नींद के बादल, लोक और अलोक, आग का आइना, पंख और पतवार, अपूर्वा, बोले बोल अनमोल, आत्म गंध आदि प्रमुख हैं।**

प्रगतिवादी कवियों ने अपने काव्य में यथार्थ स्थिति का चित्रण किया है। अकाल से पीड़ित व्यक्तियों की व्यथा का वर्णन करते हुए केदारनाथ अग्रवाल ने कहा है—

"बाप बेटा बेचता है
भूख से बेहाल होकर
धर्म धीरज प्राण खोकर
राष्ट्र सारा देखता है
बाप बेटा बेचता है।"

हमारे देश को आजादी मिलने के बाद पूँजीवाद ने यहाँ अपनी जड़ें मजबूत कीं। जिससे देश की व्यवस्था में असमानता दिखाई दी। इसका यथार्थ चित्रिण करते हुए कवि नागार्जुन लिखते हैं कि—

'देश हमारा भूखा नंगा घायल है बेकारी है।
मिले न रोटी रोजी भटके दर–दर बने भिखारी से।।'

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को देखकर कवि नागार्जुन लिखते हैं—

"रामराज्य में अबकी रावण नंगा होकर नाचा है।
सूरत शक्ल वही है भैया बदला केवल ढाँचा है।"

(5) प्रयोगवाद

- अज्ञेय को प्रयोगवादी काव्यधारा का प्रवर्तक माना जाता है। अज्ञेय ने तारसप्तक (1943 ई.) के प्रकाशन द्वारा प्रयोगवाद का प्रारम्भ किया। इन्होंने प्रयोगवादी कवियों को **'नई राहों के अन्वेषी'** कहा है।
- तारसप्तक में एक ही प्रकार की भाव चेतना के तार में पिरोए सात कवियों की रचनाओं को चार तार सप्तकों में संकलित किया गया है।
- **प्रथम तारसप्तक** (1943) के प्रमुख कवि हैं—नेमिचन्द्र जैन, गजानन माधव मुक्तिबोध, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजा कुमार माथुर, रामविलास शर्मा, अज्ञेय।
- **दूसरा तारसप्तक** (1951)—भवानी प्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती।
- **तीसरा तारसप्तक** (1959)—प्रयाग नारायण त्रिपाठी, कुंवर नारायण, कीर्ति चौधरी, केदारनाथ सिंह, मदन वात्स्यायन, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना।
- **चौथा सप्तक** (1979)—अवधेश कुमार, स्वदेश भारती, सुमन राजे, राजेन्द्र किशोर, श्रीराम वर्मा, नन्द किशोर आचार्य, राजकुमार कुम्भज।
- तार सप्तक के सम्पादक अज्ञेय जी ने **'सैनिक', 'विशाल भारत', 'प्रतीक' और अंग्रेजी त्रैमासिक 'वाक्' का सम्पादन किया। इसके साथ ही इन्होंने 'साप्ताहिक दिनमान' का भी सम्पादन किया।**
- **भवानी प्रसाद मिश्र** (1913-1985 ई.)—मिश्र जी दूसरे तारसप्तक के प्रमुख कवि थे। इनका प्रथम काव्य संग्रह है—**'गीतफरोश'।**
- **'बुनी हुई रस्सी'** (1972) के लिए आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
- **कविता संग्रह**—गीतफरोश, गाँधी पंचशती, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, त्रिकाल संध्या
- **बाल कविताएँ—तुकों के खेल**
- **संस्मरण—जिन्होंने मुझे रचा**
- **निबन्ध संग्रह—कुछ नीति कुछ राजनीति।**
- **गजानन माधव मुक्तिबोध** (1917-1964 ई.)—मुक्तिबोध प्रथम तारसप्तक के कवि थे। ये हिन्दी के प्रमुख आलोचक, निबंधकार, कहानीकार तथा उपन्यासकार थे। इन्हें प्रगतिशील कविता और नई कविता के बीच का सेतु कहा जाता है।
- इनका वास्तविक नाम **'गजानन माधव'** था तथा **'मुक्तिबोध'** इनका उपनाम था।
- 1945 में हंस पत्रिका के सम्पादन मण्डल में शामिल हुए।

  प्रमुख कृतियाँ—**चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी–भूरी खाक धूल, ब्रह्म राक्षस, अंधेरे में आत्मसंवाद।**
- **'अंधेरे में'** मुक्तिबोध की 45 पृष्ठों की बहुत लम्बी कविता है।
- मुक्तिबोध मानव मात्र की पीड़ा को स्वयं में अनुभव करते हैं। इसलिए **'चाँद का मुँह टेढ़ा है'** काव्य संग्रह में वह कहते हैं—

  पलभर में सबसे गुजरना चाहता हूँ
  प्रत्येक उर में से तिर जाना चाहता हूँ
  इस तरह खुद ही को दिए–दिए फिरता हूँ
  अजीब है जिन्दगी।।
  बेवकूफ बनने के खातिर ही
  सब तरफ अपने को लिए–लिए फिरता हूँ।

प्रमुख प्रयोगवादी कवि उवं उनकी रचनाएँ

अज्ञेय

काव्य संग्रह—इत्यलम्, हरी घास पर क्षणभर, बावरा अहेरी, इन्द्र धनुष रौंदे हुए, कितनी नावों में कितनी बार, आँगन के पार द्वार।

उपन्यास—शेखर एक जीवनी (1941 प्रथम भाग) प्रकाशित हुआ, शेखर एक जीवनी (1944 द्वितीय भाग) प्रकाशित हुआ, नदी के द्वीप (1952), अपने–अपने अजनबी (1961)।

- **यात्रा वृत्तांत—अरे यायावर रहेगा याद (1953), एक बूँद सहसा उछली (1960)**
- **कहानी संग्रह—विपथगा, परम्परा, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल।**
- मुक्तिबोध—**चाँद का मुँह टेढ़ा, भूरी–भूरी खाक धूलि, ब्रह्म राक्षस, अंधेरे में**
- धर्मवीर भारती—**ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष, कनुप्रिया, अंधायुग, देशान्तर**
- उपन्यास—**गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा**
- कुँवर नारायण—**चक्रव्यूह, आत्मजयी**
- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना—**काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, एक सूनी नाव, कुआनो नदी, खूँटियों पर टँगे लोग, जंगल का दर्द।**
- केदारनाथ सिंह—**जमीन पक रही है, अकाल सारस, बाघ, यहाँ से देखो**
- नरेश मेहता—**बोलने दो चीड़ को, मेरा समर्पित एकान्त**
- रघुवीर सहाय—**सीढ़ियों पर धूप, हँसो–हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गए हैं।**

अष्टछाप के कवि

वल्लभाचार्य के शिष्य

1. सूरदास
2. कुंभनदास
3. परमानन्द दास
4. कृष्ण दास

विट्ठलनाथ के शिष्य

5. छीत स्वामी
6. गोविन्द स्वामी
7. चतुर्भुज दास
8. नंद दास

तारसप्तक के कवि

- **प्रथम तारसप्तक** (1943)—नेमिचन्द्र जैन, गजानन माधव, मुक्तिबोध, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजा कुमार माथुर, रामविलास शर्मा, अज्ञेय।
- **दूसरा तारसप्तक** (1951)—भवानी प्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती।
- **तीसरा तारसप्तक** (1959)—प्रयाग नारायण त्रिपाठी, कुंवर नारायण, कीर्ति चौधरी, केदारनाथ सिंह, मदन वात्स्यायन, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना।
- **चौथा तारसप्तक** (1979)—अवधेश कुमार, स्वदेश भारती, सुमन राजे, राजेन्द्र किशोर, श्रीराम वर्मा, नन्द किशोर आचार्य, राजकुमार कुम्भज।

(6) नई कविता

नई कविता के नामकरण के कारण 'नई कविता' का नामकरण प्रयोगशील अज्ञेय की देन है। इस नाम को स्वीकार कर लेने के प्रमुख रूप से तीन कारण हैं। पहला कारण तो 'प्रयोगवाद' की बदनामी से बचने का प्रयास है। अपनी नकारात्मक मान्यताओं के कारण 'प्रयोगवाद' प्रायः बदनामी से संयुक्त हो गया था और जीवनगत एवं काव्यगत मूल्यों के प्रति आस्था रखने वाले कवि 'प्रयोगवाद' से अपने आपको दूर ही रखना चाहते थे। नामकरण का दूसरा कारण पूर्ववर्ती कवियों से विषय–वस्तु और शैली की भिन्नता के द्योतन का प्रयत्न है। 'नई कविता' का कवि न तो प्राचीन कवियों के समान अपने आपको किसी वर्ग–विशेष अथवा जीवन के पक्ष–विशेष से सम्बद्ध रखना चाहता था और न वह प्रयोगवाद की गहन निबिड़ता, असम्बद्ध अनुभव खण्डों की अभिव्यक्ति भाषा के नितान्त वैयक्तिक प्रयोग, अतिशय प्रयोगशीलता आदि को साग्रह ग्रहण करने वाले कवियों की पंक्ति में खड़ा होना चाहता था। उसने साधारण चरित्र के वैशिष्ट्य को नहीं, उसके साधारण जीवन को ही सार्थकता देने का प्रयत्न किया। 'नई कविता' के नामकरण का तीसरा कारण था–समसामयिक युगबोध वाली कविता की प्रवृत्ति–विशेष के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की इच्छा, जिससे दुनियाँ की दौड़ में हम बहुत पीछे न रह जाएँ। सन् 1950 को लगभग विदेशों में समसामयिक कविता को नई कविता' कहने का रिवाज जोरों से चला । राजेन्द्रप्रसाद सिंह ने सन् 1956 में 'विदेशों में नई कविता' की रचना की। कविता के अतिरिक्त कुछ उपन्यासों के नाम भी इसी पद्धति पर रखे गए, यथा–'नया आदमी' (शिवचन्द्र शर्मा) तथा 'जंजीरें और नया आदमी' (भैरवप्रसाद गुप्त) नवीनता व्यंजक नामकरण के फैशन के कारण ही 'नई कविता' नाम रखा गया। सारांश यह है 'प्रयोगवादी' एवं 'नवस्वच्छन्दतावादी मान्यताओं को समाहित करती हुई 'नई कविता' अपने पथ पर अग्रसर हुई और प्रचार एवं व्यापक परिवेश को आत्मसात् करके चलने वाली कविता का नाम 'नई कविता प्रसिद्ध हुआ।

नई कविता का प्रादुर्भाव

नई कविता मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया से निर्मित हुई है। इससे पूर्व छायावादी या प्रगतिवादी काव्य की प्रक्रिया बिलकुल भिन्न थी। रोमांटिक कवि आवेशयुक्त होकर अनायास स्वच्छन्द प्रवाह के रूप में भावाभिव्यक्ति करते थे। नए कवि अनुभूत मानसिक प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करते हैं और भावावेश को संयमित करके ज्ञानात्मक संवेदन के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यही कारण है कि नई कविता का पूरा विन्यास गद्य भाषा के अधिक निकट है; यथा—

'मन की सीपी में' शीर्षक गीत में दिनकर सोनवलकर ने अन्तर्मन का आध्यात्मिक निरूपण किया है—

अन्तर में बहती रहे प्रेम–सरिता
ज्योति से मिले ज्योति
अन्धविश्वास। राग–द्वेष। कर्मकाण्ड,
भस्म हो जाएँ सभी
तेजस्वी लपटों में।
बच रहे आनन्द–मात्र
चैतन्य रूप। निर्विकार।
करुणामय से एकात्म
गले मिलें व्यक्त से अव्यक्त
किरणें सब दौड़ पड़ें सूरज की तरफ।
सुगन्ध एकाकार हो सौंदर्य से;

स्वर से भी हो जाएँ ॐकार रूप
चेतन बने विराट।

नई कविता में तनाव

नई कविता में हमें साधारण मध्यवर्गीय लोगों के व्यक्ति–जीवन की झाँकी मिलती है। कवि अपनी बाह्य परिस्थितियों और अपनी मनःस्थितियों से परिचित है और बाह्य–पक्ष तथा आत्म–पक्ष के द्वन्द्व से उत्पन्न तनाव को व्यक्त करता है। यह तनाव कभी आत्मालोचन के रूप में प्रकट होता है और कभी कवि–प्रकृति का विषादमय वर्णन करता है, कभी तनाव आत्म–विश्वास से लुप्त होकर गरज उठता है, कभी यह नपुंसक अहंकार का विस्फोट बनता है, तो कवि आस्था और प्रेम की बात करने लगता है।

नई कविता में द्वन्द्व रूप

नई कविता में आज का जीवन चित्रित हुआ है। आज का जीवन वैविध्यमय एवं विषम है और सभ्यता ह्रास–ग्रस्त है, आज के जीवन में तनाव है। वह तनाव आज की कविता में व्यक्त हुआ है। नई कविता प्रायः द्वन्द्व रूप में स्थित है। उसमें हृदय एवं सहज रस और रमणीयता भी है। उसमें नवीन विषय, नवीन उपमाएँ एवं नवीन प्रतीक योजना भी है। इसमें कविता के विविध स्तर हैं–सुकोमल, तीव्र गीतात्मक स्वर भी है और तीव्र आलोचना का स्वर भी है। यह स्वर कभी कवि के आत्मालोचन के रूप में प्रकट होता है और कभी समाजोन्मुख आलोचना करता है। नई कविता में प्रकृति के रमणीय एवं कोमल दृश्य भी हैं और हृदय की रसात्मक अनुभूतियों के मार्मिक चित्र भी। नई कविता की विविध शैली, शिल्प एवं भाव पद्धतियाँ प्रसिद्ध हैं। नई कविता एक काव्य प्रकार का नाम है जिसके अन्तर्गत व्यक्तिगत शैलियाँ, शिल्प; रचना–विधान और विविध जीवन दृष्टियाँ हैं।

बाह्य के प्रति संवेदशील

जैसे छायावादी कवि रीतिकालीन कवियों से स्वभाव में भिन्न थे वैसे ही नए कवि छायावादियों से अपने स्वभाव के कारण भिन्न हैं। नया कवि बाह्य के प्रति संवेदनशील है और इस संवेदना को आत्मपरक रूप में व्यक्त करता है। उसके पास छायावादियों अथवा प्रगतिवादियों की भाँति दार्शनिक विचारधारा नहीं है। नए कवियों में बहुतेरे लोग, व्यक्तिगत भावना के धरातल पर समाज के शोषकों और उत्पीड़कों के विरुद्ध हैं और उन्हें समाज के भीतर गरीब मध्यवर्गीय जनता के साथ लगाव है। नई कविता समाज और सभ्यता की समस्याओं और प्रश्नों के प्रति भी जागरूक है। इसमें एक प्रगतिशील परम्परा की लीक भी मिलती है। कवि अपनी मानसिक प्रतिक्रिया को उत्पन्न करने वाले द्वन्द्वों को और उनसे उत्पन्न तनाव को जानकर उनकी व्याख्या करता है।

युगबोध नई कविता में सर्वत्र मुखरित है; यथा

अब कोई नहीं आता
घर के पारम्परिक उत्सव में
जहाँ कभी जुड़ते थे मेले
वहाँ अब सिर्फ पिता
और सबसे छोटा लड़का
दोनों विवश अकेले
अलग–अलग संसार जीते हुए।

–दिनकर सोनवलकर

नवीन मूल्यों की पुकार

सर्वत्र बढ़ती हुई व्यक्तिगत स्वार्थ साधन, बेईमानी, चोरबाजारी, घूसखोरी एवं अनैतिक आचरण आदि ने परम्परागत मानव–मूल्यों की जड़ें हिला दीं। ईश्वर के अस्तित्व के सम्मुख विज्ञान ने पहले ही प्रश्नचिह्न लगा रखा था, अब मार्क्सवादी दर्शन भी अति तार्किक कसौटी पर खरा नहीं उतर सका। इस विघटित अवस्था एवं तज्जन्य मूल्यगत शून्यता के कारण कवि परम्परा विश्वासों एवं मूल्यों के प्रति विद्रोह कर बैठा।

कहने और करने के बीच के छद्म को सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने निर्भीकता से उजागर किया है

हम ले चलेंगे
हम ले चलेंगे
चिल्लाते मिलते हैं।
बस अड्डे पर कुली
और मंच पर नेता
देखते ही देखते
सिर पर से बक्स गायब हो जाता है।
ओर मंच से जबाव।

नई कविता छायावादी, प्रगतिवादी और प्रयोगवादी भावबोध से भिन्न आधुनिक भाव बोध की कविता है। नई कविता का युग सन् 1962 से प्रारम्भ होता है। नए कवियों की रुचि नवगीत की ओर ही रही है। इसीलिए डॉ. शम्भूनाथसिंह ने सम्भावना प्रकट की है कि 'भविष्य की नई कविता उत्तरोत्तर गीतिकाव्य की दिशा में अग्रसर होती जाएगी।' नई कविता के अन्तर्गत निम्नलिखित नवीन भावबोध के रूपों का उदय हुआ है–

(क) मानव के भविष्य के प्रति आस्था;
(ख) सृजनात्मक व्यक्तित्व की खोज और आत्मोपलब्धि,
(ग) कलाहीन अमूर्त सत्य की अभिव्यक्ति,
(घ) अजनबीपन और अकेलपन का बोझ,
(ङ) मूल्यहीनता और उत्तरदायित्व का दर्शन।

नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं–

(1) वैयक्तिकता–नई कविता में वैयक्तिकता के दो रूप हैं–नए मानवीय मूल्यों में बँधे रहने से यह प्रवृत्ति अनुभूति के प्रति ईमानदारी ले आई है। उदाहरण के लिए अज्ञेय की 'जितना, तुम्हारा सच है' कविता देखिए–

जितना तुम्हारा सच है।
उतना ही कहो
पीठ से टोह कर नहीं, मन के उन्मेष से
उसे जानो, उसे पकड़ो मत।
उसी के हो लो।
तुम नहीं व्याप सकते; तुममें जो व्यापा है।
उसी को निबाहो।

(क) यह वैयक्तिकता दायित्वपूर्ण है। इसका सामाजिकता से विरोध नहीं है। नई कविता में जीवन की सम्भावनाओं का दृढ़ संकेत है, किन्तु वैयक्तिकता का, 'अहं भाव का' प्राधान्य होने से वह दुर्बोध हो गई है।

(ख) वैयक्तिक स्वतन्त्रता ने उच्छृंखल मनोवृत्तियों की सृजना की है। यह नई कविता का गलनशील अंग है। ऐसी कविताएँ पत्र–पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित हो रही हैं। इनमें कवि विद्रोही–सा दिखाई पड़ता है।

(2) मानवता के प्रति नवीन दृष्टिकोण—नई कविता में मानवीय मूल्यों के अन्वेषण एवं प्रतिष्ठा का प्रयास है। इसमें वर्गवाद को त्याग कर मानवीय भविष्य के प्रति अडिग आस्था व्यक्त की गई है। इसमें नर में नारायण के निवास की कल्पना मानव में मुक्तगान से सम्बद्ध है। अज्ञेय जी को शब्दों में

आस्था न काँपे,
मानव फिर मिट्टी का भी देवता हो जाता है,

(3) बौद्धिकता—नईकविता में बौद्धिकता का प्राधान्य है। वह मर्म को स्पर्श करने में असमर्थ रही है।

(4) यथार्थवादिता का आग्रह—नई कविता में यथार्थवादिता का आग्रह है। पहले यथार्थवाद मार्स से प्रभावित था, किन्तु नई कविता में यह कवि की चिन्तन प्रणाली और भावलोक का अंग बन गया है। इसका रूप कहीं–कहीं प्रकृतिवाद हो गया है, जिसमें नारी को 'नर–सेवित बीज कुण्ड नर शिशु की धात्री' कहा गया है। नई कविता में यथार्थवाद के नाम पर यथातथ्यवाद का भोंड़ा चित्रण भी सामने आया है।

(5) कुण्ठा, निराशा, सन्देह की अभिव्यक्ति—आज के आण्विक युग में भी भावी युग के सपनों के आगे प्रश्नचिह्न लगा हुआ है। नई कविता में कुण्ठा, निराशा और सन्देह–प्राधान्य है। केदारनाथ ने लिखा है—

रात किसी बच्चे ने बुद्धिमूर्ति के आगे
ऊषा का एक नाम मंत्र गुनगुनाया था !
क्या यह सच है !

डॉ. बच्चन ने नई कविता के अनुभूति पक्ष का अत्यन्त मार्मिक शब्दों में विश्लेषण किया है, उन्होंने लिखा है कि "नई कविता भी नए मानवीय मूल्यों से बँधी हुई है, पर ये मूल्य भी अभी अस्पष्ट और उलझे हुए हैं। इन मानवीय मूल्यों को व्यक्ति–सत्य के रूप में देखने के अभ्यासी कवि उन्हें व्यापक सत्य नहीं बना सके। जिन कवियों में व्यक्ति–सत्य को व्यापक सत्य बनाने की प्रेरणा निरन्तर क्रियाशील रही है, वे अपने माध्यमों के द्वारा ही सरल पर गूढ़ अर्थव्यंजक रचनाएँ दे सके हैं। अज्ञेय के **'बावरा अहेरी'** तथा **'इन्द्र धनुष रौंदे हुए'** में उस प्रकार की अनेक रचनाएँ मिल जाएँगीं। जिन कवियों का सत्य व्यक्ति–सत्य से आगे बढ़कर व्यक्तिबद्ध हो गया, वे गूढ़ ही गूढ़ अप्रस्तुतों और प्रतीकों के प्रयोग द्वारा पाठकों को चौंका–चौंकाकर अपने पाण्डित्य का रोब गोलिब करने लगे। नए कवियों की श्रेणियों में कुछ ऐसे लोग भी घुस गए जिनका सत्य न तो व्यक्ति–सत्य कहा जा सकता है, और न व्यक्ति बद्ध–सत्य। ये लोग अप्रस्तुतों और प्रतीकों की खोज में हिन्दुस्तान से दूर भागकर यूरोप के पुस्तकालयों की पुरानी अलमारियों झाँकने लगे।

कलापक्षान्तर्गत प्रमुख प्रवृत्तियाँ

नई कविता का शिल्पविधान भी नवीन है। इस शिल्प–विधान की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं—

(1) नवीन अप्रस्तुत विधान—नई कविता में नवीन प्रतीक एवं अप्रस्तुतों का बाहुल्य है, अधिकांशतः अप्रस्तुत नवीन हैं। ये अप्रस्तुत अर्थबोध कराने में सझम नहीं हैं। कुछ अप्रस्तुत इस प्रकार हैं—नयन–भोर की दो ओस बूंदें; विज्ञान धुएँ का अजगर; जीवन में लौटी मिठास–गीत की आखिरी लकीर, धूप–शिशुवदन पर माँ की हँसी का प्रतिबिम्ब, रूप–निष्काम पूजा सा; उतरती–चढ़ती भावनाएँ–थर्मामीटर का पारा; लज्जालु आँखें–बिजली स्टोव; चेतना–छिपकली; बाँह–चिकना चीड; देह–कनकंचपे की कली। इन अप्रस्तुतों में अधिकांश में नवीनतम का आग्रह है। इनमें अर्थ की गम्भीरता या दुरूहता दूर नहीं होती है।

यौन उपमान

नई कविता में यौन उपमानों का प्रयोग बहुतायत से हुआ है। मुक्तिबोध और भवानीप्रसाद मिश्र जैसे कुछ प्रौढ़ कवियों को छोड़कर अन्य सभी कवियों ने तवायफ, वेश्या जैसे उपमानों का खुलकर प्रयोग किया है; यथा—

(i) **अपूर्व दिशा के नितंब पर**
स्खलित करता है अपने शौर्य को तेजस्वी सूर्य।

(ii) **नावें कई यात्रियों को उतार कर वेश्याओं की तरह**
थकी पड़ी हैं घाट में।

(iii) **वेश्यायी स्वर्ग में फोड़ों की तरह उत्सव फूटता है।**

—श्रीकान्त वर्मा

(2) प्रतीक विधान—नई कविता में प्रतीकों की प्रचुरता है। अज्ञेय की 'नदी के द्वीप', सागर तट की सीपियाँ' कविताओं के शीर्षक स्वयं प्रतीक हैं, किन्तु इन कविताओं में और भी प्रतीक हैं। 'नदी के द्वीप' प्रतीक से व्यक्तित्व के प्रति सहज निष्ठा और व्यक्ति की मूल्य मर्यादा आभासित होने लगती है। दुष्यन्त कुमार ने जीवन की वास्तविकताओं की लपट में लगने वाले स्वप्नों को 'मोम का घोड़ा' प्रतीक से व्यक्त किया है। इन प्रतीकों में समानता का अभाव होने से दुर्बोधता आ गई है। डॉ. बच्चनसिंह ने नई कविता के पौराणिक प्रतीकों के सम्बन्ध में लिखा है–'नई कविता में पौराणिक प्रतीक भी गृहीत हुए हैं, जो मुख्यतः महाभारत के पात्र हैं। कर्ण, द्रोण, एकलव्य, अभिमन्यु, अश्वत्थामा, चक्रव्यूह, आदि ऐसे ही प्रतीक हैं। इनमें से कुछ तो उपयुक्त सन्दर्भ में प्रयुक्त होने से काफी व्यंजक हो गए हैं और कुछ अन्यथा–स्थान में पड़ जाने से अर्थच्युत और निस्तेज।'

नई कविता में बिम्ब–योजना का प्राधान्य है और ये बिम्ब प्रतीकात्मक एवं सांकेतिक हैं। नई कविता गहरी संवेदनाओं को उद्दीप्त करके अनुभुतियों के नए और अछूते आयामों का उद्घाटन करने के लिए प्रतीकात्मक और सांकेतिक बिम्बों की योजना करती है। यह बिम्ब योजना नई कविता के उपचेतन मन के सिद्धान्त से प्रभावित होने के कारण विश्लिष्ट या खण्डित होती है। काव्यगत बिम्ब उपचेतन मन से ही उद्भूत होते हैं और जिस तरह स्वप्न और दिवास्वप्न के बिम्ब खण्डित प्रतीकात्मक होते हैं, उसी प्रकार काव्य बिम्ब भी। यह मुक्त आसंग मुक्त–चेतना–प्रवाह का परिणाम है। इन खण्डित बिम्बों के संकेत से ऐसे संवेदनों की उपलब्धि होती है जो कवि के संवेदनों से प्रायः भिन्न होते हैं। अतः नई कविता शब्द या अर्थ प्रधान नहीं, बिम्ब–प्रधान है। नई कविता में वैयक्तिक प्रतीकों का बाहुल्य है। नई कविता में व्यक्त आधुनिक भाव–बोध, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवीन जीवन–मूल्यों के कारण बिलकुल नवीन हो गया है और इसके लिए अप्रयुक्त एवं ताजे प्रतीक हुए हैं और यह ताजगी वैयक्तिक प्रतीकों में ही उपलब्ध होती है।

(3) नई लय एवं प्रवाहमयता—नवीन कविता में मुक्त छन्द प्रयुक्त है। उसमें लय एवं आन्तरिक तुकों और कड़ियों की प्रवाहमयता का भी ध्यान रखा गया है। इन्होंने शब्दगत और अर्थगत दोनों प्रकार की लय को स्थान दिया है। एक उदाहरण देखिए—

जो मैं हूँ
वह एक पुञ्ज है दुर्दम आकांक्षा का
पर उसके बल पर
जो मेरा है बार–बार देता हूँ !

(4) जनभाषा के शब्द, मुहावरे, टोन तथा लय–नई कविता में जनभाषा के शब्द, मुहावरे, टोन तथा लय को अपनाकर उसे सरलतर किया गया। नए कवियों का प्रयास उसे सामान्य जन–जीवन के निकट लाने का रहा है, किन्तु इसमें उन्हें विशेष सफलता नहीं मिली है।

नई कविता के दोष

नई कविता में विद्वान समीक्षकों ने कुछ दोष भी बताए हैं, वे निम्नलिखित हैं–

(1) भावशून्य बौद्धिकता–नई कविता में भावशून्य बौद्धिकता के कारण अभिव्यक्ति मर्मस्पर्शी नहीं हो सकी है। बुद्धि, तर्क एवं व्यंग्य का भौंड़ा प्रदर्शन है, जिससे कविता क्लिष्ट एवं शुष्क ही नहीं, अरुचिकर हो गई है।

(2) वैचित्र्य प्रदर्शन एवं अस्पष्टता–नई कविता की संवेदना अत्यन्त व्यक्ति बद्ध हो गई है। अतः उसमें वैचित्र्य प्रदर्शन एवं अस्पष्टता का प्राधान्य हो गया है। इन कवियों ने अर्थहीन खोखले प्रतीक एवं ऊटपटांग अप्रस्तुत विधान से अपनी कविताओं को अस्पष्ट बना दिया है।

(3) साधना का अभाव–नई कविता शास्त्रीय आधार से रहित होने के कारण मर्यादा से विहीन है। उसमें ठोस एवं मर्यादित चिन्तन–मनन का अभाव है।

मूल्यांकन–नई कविता के वर्तमान स्वरूप के सम्बन्ध में तीन प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं–

(1) रसास्वादन की समस्या,

(2) प्रतीकों की जटिलता, तथा

(3) बिम्ब–विधान की अस्पष्टता।

नई कविता में प्राचीन रुढ़ियों को त्याग दिया गया है। साथ ही रस को बौद्धिक रूप में ग्रहण न कर, उसकी बौद्धिक परिभाषा प्रस्तुत की जा रही है। प्रतीकों की जटिलता के कारण नई कविता बोधगम्यता खो रही है। वह सहृदय–संवेद्य न रहकर अकविता बन गई है। नई कविता ने नए बिम्ब अपनाए हैं, जो कहीं–कहीं बेतुके और नाममात्र के लिए नवीन हैं, किन्तु उनका औचित्य सन्देहास्पद है।

नई कविता में इतनी गद्यमयता है कि उसका आस्वाद ग्रहण करने के लिए सहृदय भी धैर्य धारण नहीं कर सकता । गद्य में भी एक रस होता है, लेकिन प्रयोग की होड़ में जो रचनाएँ नई कविता के नाम से निर्मित हो रही हैं, उनमें गद्य का रस भी नहीं है। नई कविता में असम्बद्धता एवं शब्दों का दुरुपयोग भी आस्वादन में बाधक है। प्रयोग की होड़ एवं विचारों की असम्बद्धता से विकर्षण ही अधिक उत्पन्न होता है, अतः यह श्रेष्ठ काव्य तो क्या साधारण काव्य भी नहीं रह गया।

निष्कर्ष

नई कविता के क्षेत्र में परिपक्व और अपरिपक्व दोनों प्रकार के कवि हैं। कुछ लोक विरोधी रचनाएँ करते हैं और दूसरे पूर्णतः लोकोन्मुख। आज की कविता का मूल प्रश्न जीवन और जगत के ज्ञान के अधूरेपन या पूरेपन, विकास–ग्रस्तता या शुद्धता के प्रश्न के साथ अटूट रूप में जुड़ा हुआ है। नए कवि को ज्ञानपक्ष की अत्यन्त आवश्यकता है। आज के विषमताग्रस्त समाज में कवि के लिए उत्पीड़न की समस्या व्यक्त करना और उसका समाधान प्रस्तुत करता है। नई कविता में भी दो दल बन गए हैं–एक उच्चवर्ग और दूसरा निचले गरीब मध्यवर्ग का। उनकी वर्गीय प्रवृत्तियाँ उनके काव्य तथा साहित्य सम्बन्धी सिद्धान्तों में स्पष्ट व्यक्त होती हैं। आज का लेखक ईमानदार है तथा अपने और युग के प्रति उत्तरदायी है। उसे अपने आत्मचेतस् का विश्वचेतस् के हाथ सौंपना होगा।

प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

धूमिल

धूमिल के तीन काव्य–संग्रह प्रकाशित हैं–

- संसद से सड़क तक
- कल सुनना मुझे
- सुदामा पांडे का प्रजातंत्र

उन्हें मरणोपरांत 1979 में 'कल सुनना मुझे' काव्य संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

धूमिल की कुछ सबसे लोकप्रिय कविताएँ हैं–मोचीराम, बीस साल बाद, पटकथा, रोटी और संसद, लोहे का स्वाद आदि।

डॉ. धर्मवीर भारती

कुछ प्रमुख कृतियाँ–ठण्डा लोहा (1952), अंधा युग (1954), कनुप्रिया (1959), सात गीत वर्ष (1959),सपना अभी भी (1993), आद्यन्त (1999)

भवानी प्रसाद मिश्र

कुछ प्रमुख कृतियाँ–गीत फरोश, चकित है दुख, गाँधी पंचशती, अँधेरी कविताएँ, बुनी हुई रस्सी, व्यक्तिगत, खुशबू के शिलालेख, परिवर्तन जिए, त्रिकाल संध्या, अनाम तुम आते हो, इदंन मम्, शरीर कविता, फसलें और फूल, मान–सरोवर दिन, संप्रति, नीली रेखा तक, कालजयी।

नरेन्द्र शर्मा

कुछ प्रमुख कृतियाँ–शूल–फूल (1934), कर्ण–फूल (1936), प्रभात–फेरी (1938), प्रवासी के गीत (1939), कामिनी (1943), मिट्टी और फूल (1943), पलाश–वन (1943), हंस माला (1946), रक्तचंदन (1949), अग्निशस्य (1950), कदली–वन (1953), द्रौपदी (1960), प्यासा–निर्झर (1964), उत्तर जय (1965), बहुत रात गये (1967), सुवर्णा (1971), सुवीरा (1973)

शंभुनाथ सिंह

कुछ प्रमुख कृतियाँ–रूप रश्मि,माता भूमिः, छायालोक, उदयाचल, दिवालोक, जहाँ दर्द नीला है, वक्त की मीनार पर (सभी गीत संग्रह)

सेनापति (जन्म सं. 1643)

इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ **'कवित्त रत्नाकर'** है, जिसमें पाँच तरंग हैं। प्रथम तीन तरंगों में क्रमशः श्लेष, श्रृंगार एवं ऋतु वर्णन है। चौथी–पाँचवीं तरंगों में क्रमशः 'रामायण' और 'राम रसायन' का वर्णन है। रामकथा का वर्णन भक्ति और पांडित्यपूर्ण है। इससे इनकी उत्कृष्ट भक्ति–भावना एवं कवित्व शक्ति का परिचय मिलता है।

संत काव्य की विशेषताएँ, प्रमुख कवि एवं रचनाएँ

उद्‌भव–संत मत का आविर्भाव हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना है। देश की विचित्र परिस्थितियों ने इस मत को जन्म दिया। संतों ने इन विचित्र परिस्थितियों का पूर्ण सामंजस्य करके देश का बड़ा उपकार किया। संतों ने उस सामान्य भक्ति मार्ग की स्थापना की, जो हिन्दू और मुसलमान–दोनों के बीच समान रूप से रखा जा सकता था। संत–मत में केवल हिन्दुओं और मुसलमानों के धर्म का ही समन्वय नहीं हुआ, वरन् गोरखपन्थियों के हठयोग, वेदान्तियों के ज्ञानवाद, सूफियों के प्रेमवाद तथा वैष्णवों के अहिंसावाद और प्रपत्तिवाद का भी सुन्दर और सफल समन्वय हुआ। उसमें सामाजिक समन्वय का भी विशेष महत्त्व है। इस प्रकार के समन्वय द्वारा संत–मत ने हिन्दी साहित्य और हिन्दी–भाषी प्रदेश दोनों को गौरवान्वित किया है। इसी कारण संत–मत के सिद्धान्तों का अध्ययन हिन्दी–साहित्य के विद्यार्थी के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

संत–मत के प्रमुख सिद्धान्त

नाम की उपासना–संत लोग निर्गुणवादी होने के कारण प्रायः नाम की उपासना करते थे। ये लोग रूढ़िवाद और मिथ्या आडम्बर के विरोधी थे। गुरु को करीब–करीब ईश्वर के समान महत्ता देते थे। 'जाति–पाँति' पूछे नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि को होई' के अनुसार इनके मत में जाति–पाँति का कोई महत्त्व नहीं था। ये लोग साधारण धर्म तो मानते थे, किन्तु साम्प्रदायिकता का वर्णाश्रम सम्बन्धी विशेष धर्म के पक्ष में थे। वैयक्तिक साधना पर इन लोगों ने विशेष जोर दिया है।

महात्मा कबीरदास इस मत के प्रवर्त्तक थे तथा नानक, **रैदास, दादूदयाल, मलूकदास, सुन्दरदास खण्डेलवाल** आदि इसे आगे बढ़ाने वाले थे। संत–मत के सामान्य सिद्धान्तों का हम संक्षेप में विवेचन कर रहे हैं–

(1) ईश्वर–संत–मत वाले एकेश्वरवादी हैं। ये निराकर रूप की उपासना करने वाले हैं। उनका ईश्वर ऐसा है जो मुसलमान और हिन्दू धर्म में समान रूप से ग्राह्य है। वह संसार के प्रत्येक कण–कण में व्याप्त, ज्योतिस्वरूप, अलख और निरंजन है। उसकी प्राप्ति योग और निर्गुण भक्ति से जिसमें ज्ञान का प्राधान्य है, सम्भव है। ऐसे ईश्वर की प्राप्ति में गुरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है, जिसे संत–मत वालों ने ईश्वर के समान ही महत्त्व दिया–

मोको कहाँ ढूंढ़ता बंदे, मैं तो तेरे पास में,
कहै 'कबीर' सुनो भई साधो, सब साँसों की साँस में।

(2) माया–सत्पुरुष से उत्पन्न माया ही सृष्टि की सृजन–शक्ति है। यह सत्य भी और मिथ्या भी। ''माया के दुइं रूप हैं, सत्य मिथ्या संसार''। संसार को भ्रम में डालने वाली मिथ्या माया का ही कबीर ने अधिक खण्डन किया है।

(3) हठयोग–हठयोग का तात्पर्य बलपूर्वक ब्रह्म से मिलन है। यह मिलन शरीर के अंगों तथा श्वास पर अधिकार प्राप्त कर उनका उचित संचालन करते हुये एवं मन को एकाग्र कर परमात्मा के दिव्य स्वरूप का मनन करते हुये आत्मा के समाधिस्थ हो जाने पर होता है। इस प्रकार शारीरिक और मानसिक परिश्रम के द्वारा ही ब्रह्म की अनुभूति करना–हठयोग का आदर्श है। गोरखनाथ द्वारा चलाए हुए एक हठयोग का कबीर व अन्य कुछ निर्गुणिए संतों पर भी बड़ा प्रभाव पड़ा। नाथपंथ में अंतः साधना हृदय पक्ष–शून्य थी। उसमें प्रेमतत्व का अभाव था। कबीर को यह बात खटकी और उन्होंने नाथपंथ की आलोचना व्यंग्यपूर्वक की–

झिलमिल झगरा झूलते बाकी रही न काहु।
गोरख अटके कालपुर कौन कहावै साहु।।
बहुत दिवस से हिंडिया सुन्नि समाधि लगाइ।
करहा पड़िया गाड़ में दूरि परा पछिताइ।।

(4) सूफी मत–सूफी मत का संत मत पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। आत्मा–परमात्मा का सम्बन्ध जो सूफी मत वाले मानते हैं तथा प्रेम की पीर का महत्त्व जो सूफी मत में है, प्रायः वही संत लोग भी स्वीकार करते हैं। सूफी मत के अनुसार आत्मा–परमात्मा के एकीकरण में शैतान बाधा डालता है और निर्गुण मत के अनुसार माया। खुदा से मिलने के लिए बन्दे को अपनी आत्मा का परिष्कार करना पड़ता है। उसके लिए शरीयत, तरीकत, हकीकत और मारिफत-चार दशाएँ मानी गई हैं। इस मत प्रभाव यत्र–तत्र संत–मत की रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है।

(5) रहस्यवाद–कबीर का रहस्यवाद अद्वैतवाद और सूफी–मत के मिश्रण से बना है। इसमें आत्मा को स्त्री रूप में और परमात्मा को पुरुष रूप में मानकर दोनों का मिलन करवाया है। जब तक ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती तब तक आत्मा विरहिणी के समान दुःखी रहती है। जब आत्मा परमात्मा से मिल जाती है तब रहस्यवाद के आदर्श की पूर्ति हो जाती है। कबीर के अतिरिक्त संत–मत के अन्य कवियों ने भी इसी रहस्यवाद पर लिखा है, पर उनमें कबीर की सी अनुभूति की तीव्रता नहीं है।

(6) रूपक–संतों ने अपने गूढ़ और गम्भीर भावों को रूपक द्वारा प्रकट किया है। कहीं–कहीं ये रूपक बहुत ही अस्पष्ट हो गए हैं। कबीर ने भी इन रूपकों को विशेषकर दो रूपों में बाँधा है। एक, उलटबाँसी के रूप में तथा दूसरे, आश्चर्यजन घटनाओं की सृष्टि के लिए। इन दोनों का सम्बन्ध रहस्यवाद से है। इन रूपकों के सम्बन्ध में एक बात उल्लेख योग्य है, वह यह है कि ये भावना की अभिव्यक्ति में सहायक नहीं होते हैं, यथा–

साईं के संग सासुर आई।
संग न सूती, स्वाद न माना, गा जीवन सपने की नाईं।

संत मत के मूल सिद्धान्तों का विवेचन करने के पश्चात् अब हम उसके आध्यात्मिक, नैतिक आदर्शों का भी उल्लेख करेंगे।

पहले **आध्यात्मिक और नैतिक** आदर्शों को ही लीजिये। संत–मंत में आत्मशुद्धि का बड़ा महत्त्व था। वास्तव में हठयोग, वैष्णव भक्ति और सूफी मत–इन तीनों भाव–धाराओं में आत्म–शुद्धि की प्रधानता थी और नैतिक आदर्श बहुत कुछ एक से थे, केवल उनकी प्राप्ति की विधि में अन्तर था। संत जीवन की प्रयोगशाला में सत्य का अनुसंधान करते थे तथा साक्षात्कार किए हुए सत्य–खण्डों की अभिव्यक्ति साखी में करते थे। संत–मत के आध्यात्मिक और नैतिक आदर्श इस प्रकार थे–

(1) आत्म–संयम–काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान और अहन्ता का त्याग।

(2) अपरिग्रह–सांसारिक पदार्थों के संग्रह का त्याग।

(3) इन्द्रिय संयम–निद्रा, स्वादिष्ट आहार, माँसाहार, मादक वस्तु आदि का त्याग (कामिनी त्याग)।

(4) मानसिक संयम–कपट, आशा, तृष्णा, निद्रा और मन की चंचलता का त्याग।

(5) आचार और व्यवहार–सम्बन्धी संयम-दुर्जन-संग-त्याग, तीर्थ-व्रत में आस्था का त्याग, अन्य देवता की पूजा का त्याग तथा वेश–भूषा सम्बन्धी आडम्बर का त्याग। इस निषेधात्मक आत्म–निग्रह के अतिरिक्त संत–मत में कुछ विधेयात्मक कर्म भी निर्धारित थे। चरित्र को ज्ञान से बढ़कर माना गया है।

निर्गुण

संत मत के सिद्धान्तों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि इस पर भिन्न–भिन्न सम्प्रदायों और आचार्यों की छाप पड़ी हुई है। इसका विशेष कारण यही है कि संत–मत का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ था, जब कि समन्वय की बड़ी आवश्यकता थी। इन भिन्न–भिन्न सम्प्रदायों के सिद्धान्तों का संत–मत में बड़ा ही सुन्दर तथा सफल समन्वय हुआ है। संत–मत ने इन सम्प्रदायों की मुख्य–मुख्य तथा उपयोगी बातों को ग्रहण किया। संत–मत पर जिन–जिन सम्प्रदायों ने प्रभाव डाला है, वे निम्नलिखित हैं–

(1) सन्त–मत पर मुसलमानी प्रभाव–संत–मत पर मुसलमानी प्रभाव तीन रूपों में उलब्ध होता है–

(क) राजनीतिक परिस्थितियों के कारण–संत–मत का आविर्भाव जिस युग में हुआ, उस समय की राजनीतिक परिस्थितियाँ बड़ी विचित्र

थीं। मुसलमानों का शासन उत्तर भारत में पूर्णतया प्रतिष्ठित हो जाने से हिन्दुओं के धर्म तथा संस्कृति पर आघात होने की आशंका थी। उस समय एक ऐसे सामान्य धर्म की स्थापना की आवश्यकता थी, जिसमें न तो हिन्दू धर्म का ही अस्तित्व मिटे और न उनका मुसलमानी धर्म से ही कोई विरोध हो। इसके लिए संतों को कुछ मुसलमानी प्रभावों को भी ग्रहण करना पड़ा।

(ख) मूर्ति-पूजा की उपेक्षा के रूप में–मूर्ति-पूजा आदि पूजा की विधियों और बाह्याडम्बरों का तिरस्कार सिद्धों और हठयोगियों दोनों ने किया। इन्हीं की परम्परा के कारण संत–मत में बाह्य–विधानों के प्रति घोर उपेक्षा–बुद्धि का पूर्ण प्रचार था। मुसलमानों के कारण सन्तों की इस प्रवृत्ति को बहुत प्रोत्साहन मिला। इस प्रकार संत–मत पर मुसलमानी प्रभाव मूर्ति–पूजा के खण्डन के रूप में भी मिलता है।

(ग) सूफी–मत के प्रेमवाद के कारण–संत-मत पर मुसलमानी प्रभाव सूफी–मत के रूप में भी दृष्टिगोचर होता है। सूफी फकीर सन्तों से पहले भारतवर्ष में आकर बस गए थे। अतः इन फकीरों का हिन्दू जनता पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। संतों ने भी सूफियों से प्रेमवाद ग्रहण किया। वास्तव में इस 'प्रेमवाद' का संत-मत में विशेष महत्त्व है। इसका कारण यही है कि बिना प्रेम के सन्त-मत नाथपन्थ की भाँति शुष्क रह जाता। सूफियों के प्रेम–तत्व के ग्रहण से ही संत–मत में रमणीयता आ गई और जनता का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुआ।

(2) संत-मत पर शंकर के अद्वैतवाद का प्रभाव–संत–मत पर शंकर के अद्वैतवाद का बड़ा गहरा प्रभाव है। शंकर के अद्वैतवाद में, जो ईसा की 8वीं सदी में प्रादुर्भूत हुआ, आत्मा और परमात्मा की वस्तुतः एक ही सत्ता है। माया के कारण ही परमात्मा में नाम और रूप का अस्तित्व है। इस माया से छुटकारा पाना ही, मानों आत्मा और परमात्मा की पुनः एक सत्ता की स्थापना करना है। आत्मा और परमात्मा एक ही शक्ति के दो भाग हैं जिन्हें माया के परदे ने अलग कर दिया है। जब उपासना या ज्ञानार्जन द्वारा माया नष्ट हो जाती है, तब दोनों भागों का पुनः एकीकरण हो जाता है। संत–मत के प्रवर्तक कबीर इस बात का प्रतिपादन एक रूपक द्वारा करते हैं

जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है, बाहिर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जलहिं समाना यहु तथ कथहु गियानी।।

इसी अद्वैत–भावना का संत मत पर प्रभाव पड़ा है।

(3) रामानन्द का प्रभाव–संत मत पर स्वामी रामानन्द के सिद्धान्तों की बड़ी गहरी छाप है। इसका कारण यही है कि संत–मत के प्रवर्तक महात्मा, कबीरदास जी रामानन्द जी के शिष्य थे। जैसा कि उन्होंने कहा है–"काशी में हम प्रगट भये हैं, रामानन्द चेताए।" रामानुज के विशिष्टाद्वैत में विष्णु और लक्ष्मी की उपासना की प्रतिष्ठा थी और मूर्ति–पूजा–आचार आदि को स्वीकार किया था। रामानन्द भी इसी सम्प्रदाय के थे, परन्तु उन्होंने आधार शासन ढीला कर दिया था, उन्होंने उपासना के स्थान पर प्रेम–लीला–भक्ति की प्रतिष्ठा की। लक्ष्मी–विष्णु के स्थान पर राम–सीता को आलम्बन बनाया, परन्तु रामानन्द स्वतन्त्र चित्त थे। उन्होंने अपने शिष्यों को मुक्त छोड़ दिया कि वे राम को चाहे जिस रूप में स्वीकार करें। इसी कारण कबीर ने राम को ऐसे रूप में स्वीकार किया जिसका निर्देश न तो रामानुजाचार्य की परम्परा में मिलता है और न उस पर स्वामी रामानन्द ने ही प्रकाश डाला था। संत–मत वालों पर रामानन्द का प्रभाव सबसे अधिक इस बात में पड़ा कि उन्होंने अपने मत में माँस–भक्षण–निषेध, वैष्णवी दया आदि को बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया।

(4) सन्त-मत पर वैष्णवों का प्रभाव–सन्त मत पर वैष्णव भावनाओं का भी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। वैष्णव भावना की सबसे महत्त्वपूर्ण बात व्यक्तिगत ईश्वर की कल्पना और उसकी भक्ति है। सन्त मत वाले निर्गुण के उपासक हैं, किन्तु अनेक पदों में उन्होंने इसी निर्गुण से व्यक्तिगत प्रेम का सम्बन्ध जोड़ लिया है। कभी वे हरि को जननी कहते हैं, कभी अपने को राम की बहुरिया मानते हैं, परन्तु मूल भावना में कोई अन्तर नहीं है। तुलसी की तरह सन्त–मत के प्रवर्तक कबीर भी कहते हैं

जरि जाव ऐसा जीवनां राम सूं प्रीति न होई।

वैष्णव धर्म मानने वाले भक्ति को ही सब कुछ मानते हैं, यहीं उनके मत का सार है। कबीर भी यही मानते हैं। परन्तु इस भक्ति की प्राप्ति में माया बाधक है, जो दो प्रकार की है। वैष्णव कवि तुलसी की तरह कबीर भी माया के दो रूप मानते हैं

माया है दुइ भाँति की, देखी ठोक बजाय।
एक मिलावै राम से, एक नरक लै जाय।।

संतों ने प्रेमतत्व वैष्णवों से ग्रहण किया, यथा–

मेरे संगी दो जणां, एक वैष्णों एक राम।
वो है दाता मुकतिका, जे सुमिरावै राम।।

वैष्णवों के अनुसार इस भक्ति की प्राप्ति के साधन गुरु–भक्ति और नाम–कीर्तन हैं। सन्त–मत वालों ने गुरु की भक्ति को बहुत महत्ता दी है। कबीर ने तो उसे गोविन्द से बढ़कर माना है। नाम–कीर्तन की महत्ता का प्रतिपादन भी सन्तकवियों ने पर्याप्त किया है। वैष्णव भक्ति का दूसरा अंग इष्टदेव के प्रति रति की भावना है। सन्त–मत वालों ने इसका वर्णन स्थान–स्थान पर रहस्यवाद की भावना के अन्तर्गत किया है। सन्त–मत पर वैष्णवों के लोकवाद का भी गहरा प्रभाव पड़ा है। सन्त–मत में जो लोक–भावना का प्राधान्य है, वह उसकी वैष्णव प्रभावना के ही फलस्वरूप है। सन्तों में जो ऐकान्तिक और वैयक्तिक साधना के साथ–साथ लोकोपकार की प्रवृत्ति मिलती है, वह इसी का परिणाम है। सन्त–मत वालों ने इसी प्रकार परम्परागत रूढ़िवाद पर आधारित लोक–जीवन के खोखलेपन का निर्देशन किया है।

(5) सन्त मत पर सिद्धों और हठयोगियों का प्रभाव–सन्तों पर सिद्धों और हठयोगियों का प्रभाव कई रूपों में पड़ा है। सबसे बड़ी बात यह है कि सिद्धों और हठयोगियों–दोनों ने ब्रह्म–पूजा, जाति–पाँति, तीर्थाटन इत्यादि की निस्सारता बताई और शास्त्रज्ञ विद्वानों को फटकारा। यही परम्परा आगे चलकर सन्तों ने भी अपने ढंग पर जारी रखी। सिद्धों और हठयोगियों ने रहस्यदर्शी बनकर शास्त्रज्ञ विद्वानों का तिरस्कार करने और मनमाने रूपकों के द्वारा अटपटी बानी में पहेलियाँ बुझाने का मार्ग सन्तों को प्रदर्शित किया। उन्होंने सन्तों को घट के भीतर चक्र, नाड़ियाँ, शून्य वेश आदि मानकर साधना करने की बात और नाद, बिन्दु, सुरति, निरति ऐसे शब्दों को उद्धरण करना सिखाया

दीपक ग्यान सबद धुनि घंटा, परम पुरिख तहाँ देव अनन्ता।
परम परकास सकल उजियारा, कहै कबीर मैं दास तुम्हारा।

सन्त कवियों ने अप्रत्यक्ष रूप में नाथपन्थी साधना का खण्डन किया–

अवधू अच्छर है सो न्यारा।
जो तुम पवना गगन चढ़ाओ, करो गुफा में बासा।।
गगना पवना दोनों बिनसै, कहाँ गया जोग तुम्हारा।।

(6) ध्यान सम्प्रदाय का प्रभाव–नाथपन्थी साधक घरवार त्याग संन्यासी बन जाया करते थे और हठयोग की कृच्छ साधना में डूबे रहते थे। प्रेम–भावना का उनके लिए कोई महत्त्व न था। इनके विपरीत सन्त–साधक सद्‌गृहस्थ थे और गृहस्थ जीवन को शुचितर बनाते हुए अपनी मानसिक या अन्तःसाधना में निमग्न रहते थे। इस प्रकार उन्होंने संसार बिना त्यागे, गृहस्थ जीवन बिताते हुए लोक–परलोक दोनों की साधना की। सन्त लोग पलायनवादी नहीं वरन् कर्मण्य साधक थे और संसार के बीच रहते हुए आत्म–निग्रह करने में विश्वास करते थे। इसके विपरीत नाथ सम्प्रदाय में संसार के जंजालों से मुक्त हो संन्यास धारण कर साधना करने का विधान था। इसमें नारी और गृहस्थ जीवन के प्रति गहरी अवहेलना की भावना थी। सन्तमत से पूर्व प्रचलित ध्यान सम्प्रदाय ने जीवन की सापेक्षता और गृहस्थ जीवन के प्रति विशेष आग्रह और विश्वास प्रकट किया था, जिसे सन्तों ने अपनाया। कबीर ने स्पष्ट कहा था–

जपिए नाम, जपिए अनु।।

अर्थात् भगवान के नाम का जप करो और अन्न का जाप करो। अन्न का जाप अर्थात् स्वयं परिश्रम करके अन्न प्राप्त करना । कबीर स्वयं सद्‌गृहस्थ थे, उनके घरद्वार, पत्नी–पुत्र–पुत्री सभी कुछ था और वे कपड़ा बुनकर जीविका प्राप्त करते थे। ध्यान सम्प्रदाय में शास्त्र मत पर आस्था न रखकर स्वानुभूतिजन्य ज्ञान को ही श्रेष्ठ माना है। कबीर ने गुरु निर्देशित एवं स्वानुभूति से प्राप्त ज्ञान का प्रामाण्य माना है–

'पाछे लागा जाइ था, लोक वेद के साथ।
आगे ते सतगुरु मिला, दीपक दीया हाथ।।

यहाँ सतगुरु से अभिप्राय ब्रह्मा से है और दीपक ज्ञान का प्रतीक है। ध्यान सम्प्रदाय में सापेक्ष व्यक्तिगत मन ही निरपेक्ष और समष्टिगत मन हो जाता है, साधना की सिद्धि की अवस्था में इस क्रिया को वे उन्मनी अवस्था' मानते हैं। सन्त कबीर भी मन की दो अवस्थाएँ मानते हैं–'इन मन' और 'उन मन'।

'मन लागा उन मन्न सौं, गगन पहुँचा जाय।
मन लागा उन मन्न सौं, इनमन मनहिं बिलग्ग।।'

इस प्रकार सन्त मत पर ध्यान सम्प्रदाय का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है सन्त मत के प्रवर्तक कबीर ने समकालीन मत एवं सम्प्रदायों के उपयोगी एवं व्यावहारिक तत्वों को छाँट, उनका समन्वय करके अपने 'सहज पन्थ' की स्थापना की। सत्य तो यह है कि सन्त मत की बहुत प्राचीन परम्परा है। यह युग–युग में विकसित होता रहा है। कबीर ने अपने समय में सन्त मत के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया, अतः वे इसके प्रवर्तक कहलाए। कबीर ने सन्त मत की परम्परा में वैष्णव प्रेमाभक्ति का पुट देते हुए उसे और अधिक सरस और ग्राह्य बना दिया था। इस प्रकार संत मत में निर्गुण और सगुण का, ज्ञान और भक्ति का आकर्षक समुच्चय मिलता है। संत मत की समन्वयात्मक असाधारण विशेषता अप्रतिम है।

भाषा–प्रयोग की दृष्टि से

दूसरी बात भाषा सम्बन्धी है। सिद्धों की रचनाओं की भाषा देशभाषा मिश्रित अपभ्रंश अर्थात् पुरानी हिन्दी की काव्य–भाषा है। उन्होंने भरसक उसी सर्वमान्य व्यापक काव्य–भाषा में लिखा है, जो उस समय गुजरात, राजपूताने और ब्रजमण्डल से लेकर बिहार तक लिखने–पढ़ने की शिष्ट भाषा थी, परन्तु मगध में रहने के कारण सिद्धों की भाषा में कुछ पूर्वी प्रयोग भी मिले हुए हैं। पुरानी हिन्दी की व्यापक काव्य–भाषा का ढाँचा शौरसेनी–प्रसूत अपभ्रंश अर्थात् ब्रज और खड़ी बोली का था। इसी भाषा का विकसित रूप संतों की सधुक्कड़ी भाषा में मिलता है। सिद्ध कन्नपा (कण्हपा) की रचना को यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो एक बात दृष्टिगोचर होती है। वह यह है कि उनके उपदेश की भाषा तो पुरानी टकसाली हिन्दी है, पर गीतों की भाषा पुरानी बिहारी या पूर्वी बोली है। यही भेद हम आगे चलकर कबीर की 'साखी' और 'रमैनी' में पाते हैं। 'साखी' की भाषा तो खड़ी बोली और राजस्थानी मिश्रित सामान्य 'सधुक्कड़ी' भाषा है, पर रमैनी के पदों की भाषा में काव्य की ब्रजभाषा और कहीं–कहीं पूर्वी बोली भी है। भाषा–प्रयोग की दृष्टि से संत–कवियों पर सिद्धों की अपेक्षा हठयोगियों का अधिक प्रभाव पड़ा है।

मध्यकालीन संत–साहित्य

हिन्दी–साहित्य के मध्ययुगीन संत–साहित्य में कबीर का साहित्यिक व्यक्तित्व बहुत प्रखर था। दसवीं शताब्दी तक बौद्ध धर्म विकृत होकर 'वज्रयान' और 'महायान' की तंत्र–मंत्र की साधना में परिणत हो चुका था। वज्रयानी सिद्ध धीरे–धीरे पतित हो गए। नाथपंथ ने समाज में दुराचार फैलाने वाले इन सिद्धों का विरोध किया। नाथपंथ में सहज जीवन और आन्तरिक शुचिता का अधिक आग्रह था। इन्होंने योग के आधार पर एकेश्वरवाद और हठयोग मत की स्थापना की। अपनी अव्यावहारिकता के कारण धीरे–धीरे नाथपंथ का पराभव हुआ। इसी समय स्वामी रामानन्द का प्रभाव बढ़ रहा था। उनके शिष्य निर्गुण और सगुण दोनों प्रकार के भक्त थे। सन्त–मत के प्रवर्तक महात्मा कबीरदास भी स्वामी रामानन्द के शिष्य थे।

स्वामी रामानन्द का प्रभाव

इधर स्वामी रामानन्द का प्रभाव बढ़ रहा था। उनके शिष्य सगुण और निर्गुण–दोनों प्रकार के भक्त थे। कुछ निम्न जाति के भी थे। स्वामी रामानन्द के प्रभाव का वर्णन **डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने इन शब्दों में किया है–"इस बात का ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध है कि रामानन्द के शिष्यों में से किसी–किसी ने नाथमार्गी योगियों के प्रतिष्ठित अखाड़ों को अपने प्रभाव में लाकर उनके शिष्यों को अपना अनुयायी बनाया है। जयपुर के पास जो गलता की गद्दी है, वह पहले नाथमत के अनुयायियों के हाथ में थी। अपने प्रभाव से रामानन्द के शिष्य कृष्णनाथ पयहारी ने उस पर अधिकार किया।" संत–मत के प्रवर्त्तक महात्मा कबीरदास इन्हीं स्वामी रामानन्द के शिष्य थे। उनके दो पद 'ग्रन्थ साहब' में मिलते हैं, जिनमें एक पद निर्गुण काव्य के अन्तर्गत आता है। यह स्पष्ट है कि इस समय तक संत–मत का कोई विशिष्ट रूप नहीं था और उनका साहित्य भी थोड़ा था। रामानन्द के शिष्यों ने उसे विशिष्ट रूप दिया और उसमें वृहद् साहित्य का सृजन किया। इनमें **धन्ना, पीपा, रैदास** और **कबीर** का साहित्य अधिक महत्त्वपूर्ण है। धन्ना और पीपा के बहुत थोड़े पर ग्रन्थ साहब में मिलते हैं। रैदास के भी दो प्रधान ग्रन्थ हैं, 'रविदास की बानी' और 'रविदास के पद' इनकी कविता बहुत सरल और साधारण है और उसमें उस समय की भाषा का प्रचलित रूप दिखाई पड़ता है। उसमें फारसी और अरबी शब्दों का भी अधिक प्रयोग हुआ है। इसके बाद हम कबीरदास के साहित्य पर आते हैं।

यों तो कबीरदास से पूर्व अनेक निर्गुण भाव के साधक हो गए हैं, जिनकी साहित्य के इतिहास में गणना होती है, किन्तु वस्तुतः सन्त–मत की जो सहज–धारा हिन्दी साहित्य की कविता में प्रवाहित हुई, वह कबीर से प्रारम्भ

होती है। कबीर से पूर्व कुछ महाराष्ट्र के निर्गुण भाव के साधक सन्तों की कविताएँ भी मिलती हैं। इनमें मुख्य ये हैं महाराज **सोमेश्वर** (1127 ई.), **चक्रधर महाराज** (शाके 1194), **नामदेव** (1267 ई.), **ज्ञानेश्वर, मुक्ताबाई, प्रभृति।** नामदेव जी की कुछ कविताएँ ग्रन्थ साहब से मिलती हैं। नामदेव जी की भाँति ही एक पुराने भक्त 'जयदेव' के निर्गुण भाव के कुछ पद 'ग्रन्थ साहब' में मिलते हैं। यह जयदेव निश्चित रूप से गीत–गोविन्द वाले जयदेव से भिन्न हैं।

कबीर और उनका साहित्य

कबीरदास (जन्म सं. 1456) सन्त–मत के प्रवर्तक और सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। आपकी बहुत–सी रचनाएँ हैं। इन रचनाओं का रूप मौखिक था, अतः अब जो रचनाएँ मिलती हैं, उनके बारे में ठीक नहीं कहा जा सकता है कि उनमें कितना प्रक्षिप्त अंश है। कबीरदास का मुख्य ग्रन्थ 'बीजक' है। इसके कई रूप मिलते हैं। कबीरदास ने निर्गुण मत के प्रचार के लिए बहुत भ्रमण किया। अतः उनकी भाषा खिचड़ी या सधुक्कड़ी हो गई है और स्वभावतः उनकी मूल भाषा को कई प्रान्तों की भाषा ने ढक लिया है। इन सब कारणों से से कबीर की भाषा अत्यन्त अनिश्चित है। यद्यपि उनके विचार इतने नवीन थे कि उन्हें शिष्य मूलतः बदल नहीं सकते थे, तथापि उनमें कदाचित् कुछ विचार उनके शिष्यों ने भी जोड़ दिए हैं, ऐसा उनकी रचनाओं से स्पष्ट झलकता है।

ज्ञानाश्रयी भक्ति और रहस्य–भावना

कबीर का मुख्य विषय ज्ञानपूर्ण भक्ति है। यह भक्ति निर्गुण सत्ता के प्रति है, जिन्हें कबीर साहब, राम, सत्पुरुष, अलख–निरंजन, स्वामी और शून्य आदि नामों से पुकारते हैं। कबीर की इस भक्ति को हम ज्ञानाश्रयी भक्ति अथवा ज्ञानमूलक भक्ति इसीलिए कहते हैं, क्योंकि यह ज्ञान पर आधारित है। आलम्बन के निर्गुण तथा निराकार होने के कारण कबीर की भक्ति में रहस्य का पुट आ गया है। यह रहस्यवाद मूलतः भारतीय है, यद्यपि कहीं–कहीं उस पर प्रेममार्गी सूफियों के रहस्यवाद की झलक स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। आत्मा, परमात्मा का अंश है, किन्तु इस संसार में वह विरहिणी के रूप में वर्तमान है। सांसारिकता ने उसको संकुचित कर दिया है जिसके कारण वह अपने सत्य स्वरूप को भूल गई है। भक्ति और ज्ञान की साधना से मनुष्य की आत्मा शुद्ध हो जाती है और उसमें परमात्मा का प्रतिबिम्ब स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है। यह एक प्रकार का अन्तःमिलन है। निर्गुण भक्तों का यही लक्ष्य है और उनकी कविता में आत्मा की परमात्मा से इस मिलनाकांक्षा की तीव्रता और मिलनानन्द के सुन्दर चित्रण मिलते हैं।

क्रान्तिकारी समाज–सुधारक

कबीर ने अपने समय की सामाजिक अवस्था में सुधार करने का बड़ा प्रयत्न किया है। उन्होंने अपने समय के धामिक पाखण्डों का खण्डन किया है और हिन्दू–मुस्लिम द्वेष और जाति–पाँति के भेद–भाव की असत्यता और कृत्रिमता का प्रदर्शन किया है। उन्होंने अपनी अलौकिक प्रतिभा से अपने समय की समस्याओं को समझने और सामाजिक विषमताओं को सुधारने का प्रयत्न किया है। कबीर की कविता–कविता के लिए न होकर प्रचार के लिए थी, अतएव उसमें काव्य–गुणों को खोजना व्यर्थ है। कबीर तो सन्त और उपदेशक थे, उनके लिए साहित्य–रचना का उद्देश्य गौण था।

परवर्ती सन्त कवि

कबीर के बाद सन्त–साहित्य–रचना की परम्परा चलाने वालों में धर्मदास का नाम आता है। धर्मदास का साहित्य कबीर के साहित्य के सम्मुख महत्त्वहीन है। फिर भी वह अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। उनके काव्य के विषय प्रायः वही थे जो कबीर के थे। इनकी भाषा में कबीर की भाषा की तरह विचित्रता के अभाव में पूर्वी हिन्दी की छाप है। धर्मदास के बाद सिक्ख गुरु नानक ने निर्गुण सन्त–मत की परम्परा के विकास में योग दिया। आपकी रचनाओं में एकेश्वरवाद पर अधिक जोर दिया गया है तथा हिन्दू–मुस्लिम भिन्नता और मूर्ति–पूजा का विरोध है। आप कबीर की भाँति कट्टर नहीं थे।

इनके बाद शेख इब्राहीम का नाम आता है। इनके पद **फरीदसानी** के नाम से 'ग्रन्थ साहब' में संगृहीत हैं।

संत दादूदयाल (1544–1603 ई.) कबीरदास के सहज–मार्ग के अनुयायी थे। सन्त–काव्यधारा के आप कबीर के बाद दूसरे महान् कवि हैं। आपकी रचनाएँ भी बहुत हैं। इन्होंने सन्त–मत के परिचित सभी विषयों पर रचनाएँ की। इनकी कविता पर सूफियत का प्रभाव अधिक पड़ा है। इसका कारण यह है कि इनके गुरु कमाल पश्चिमी भारत के सूफियों के सम्पर्क में अधिक रहे हैं। दादू के साहित्य पर कबीर के साहित्य की पूरी–पूरी छाप है। इनकी भाषा मारवाड़ी और कहीं–कहीं गुजराती मिश्रित पश्चिमी हिन्दी है। दादू की रचनाओं में काव्य–गुणों का भी अच्छा विकास हुआ है, क्योंकि वे कबीर की भाँति सुधारक नहीं थे। उन्होंने भगवान को बड़ी तीव्र व्यक्तिगत भक्ति–भावना से स्मरण किया है। उनके पदों में प्रेम–मिलन और विरह का चित्रण अत्यन्त सुन्दर और मार्मिक हुआ है। दादू के ऐसे पदों में सगुण भक्त–कवियों के पदों के समस्त गुण मिल जाते हैं, वही तन्मयता, वही सरलता और वही तीव्रासक्ति। कबीर ने दादू के लिए मार्ग साफ कर दिया था, जिसके कारण अधिक विरोध नहीं सहना पड़ा।

मलूक दास का प्रादुर्भाव जिस समय हुआ था, उस समय संत–काव्य–परम्परा पर सगुण–धारा का प्रभाव पड़ने लगा था। कबीर की उच्च भाव–भूमि तक सभी का उठना कठिन था। अतः कबीर के निर्गुण राम को धीरे–धीरे संत–मत वाले भी सगुण रूप में ग्रहण करने लगे। मलूकदास की रामावतार लीला (रामायण) इसका स्पष्ट उदाहरण है।

दादू सम्प्रदाय : संत सुन्दरदास खण्डेवाल

दादू के शिष्यों में **सुन्दरदास खण्डेवाल** (जन्म सं. 1653) का स्थान महत्त्वपूर्ण है। इन्होंने पहली बार संत–कवियों की परम्परा में काव्य–पद्धति पर रचना करके अन्य संतों की रचनाओं से पार्थक्य दिखलाया है। ये शास्त्रीय ढंग की रचना करते थे। इन्होंने अपने काव्य के माध्यम से जन–जन से जाति–पाँति का वर्ग भेद मिटाकर मानव प्रेम एवं सहिष्णुता का संदेश दिया । सन्त सुन्दरदास ने 48 ग्रन्थों की रचना करके सामाजिक परिवेश को परिवर्तित करने का भगीरथ प्रयास किया था । संत परम्परा के कवियों में इनका नाम एक और कारण से भी महत्वपूर्ण है और वह है इनकी कविता–सवैया शैली । अब तक सन्तों ने केवल पद और दोहों में ही रचना की थी। इनके कवित्त–सवैयों में अलंकारों की सुन्दर योजना है। संत जी ने हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, पंजाबी, पूर्वी भाषाओं में अपने ग्रन्थों की रचना की।

दादू के दूसरे **रज्जबदास** थे। इनकी कवित्त–शक्ति बड़ी प्रखर थी। उसमें विचारों की प्रौढ़ता, स्वाभाविकता इत्यादि दर्शनीय है। इन्होंने गम्भीर तत्व का बड़ी सरलता से निरूपण किया है। दादू के तीसरे साहित्यिक शिष्य जगन्नाथजी थे। दादू के अन्य शिष्यों में काव्य–परम्परा की दृष्टि से कोई उल्लेखनीय नहीं है।

विश्नोई सम्प्रदाय

विश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक जंभनाथ और **निरंजनी सम्प्रदाय** के संस्थापक **हरिदास निरंजनी** भी संत–काव्य परम्परा में स्थान रखते हैं। 17वीं शती में ***'अक्षर अनन्य'*** नाम के संत ने योग वेदान्त सम्बन्धी कुछ ग्रन्थ रचे,

जिनमें वैराग्यमूलक धर्म एवं योग और भजन का उपदेश है। इसी समय राजस्थान के **संत तुलसीदास** जी भी बहुत प्रसिद्ध हो गये। इनकी रचनाओं में भजन पर जोर दिया गया है। 17वीं शती के मुस्लिम संत **'यारी'** की **'रत्नावली'** नामक रचना का उसके आध्यात्मिक तत्व–निरूपण के कारण महत्त्व है। **संत धरणीदास** (17वीं शती) का नाम भी संत काव्य–परम्परा में उल्लेखनीय है। **सतनामी सम्प्रदाय के दूलनदास** (18वीं शती) का महत्त्व अपनी लोकप्रिय निर्गुण भावापन्न रचनाओं के लिए है। संत चरणदास जी ने अपनी वाणी में ब्रज–चरित्र वर्णन भी प्रस्तुत किया है, यथा

भक्ति बिना दीखे नहीं, इन नयनन हरिरूप।
साधुन को परगट भयो, बिना भक्ति हरि रूप।।
कबहुँ करसों कर मिला, नृत्यत श्री गोपाल।
कबहुँ बैठे साँवरो, नृत्तत सुन्दर बाल।।

इन्होंने वेदों के सार का वर्णन, अष्टांग योग, अजपा जाप, समस्त उपनिषदों का सार आदि सहज भाषा में प्रस्तुत किया है, यथा

सूक्ष्म शरीरु आतमा, भिन्न लखै नहिं कोय।
यही जु मन की गाँठ है, खुले मुक्ति ही होय।।

इस प्रकार चरणदास वैष्णवों के बहुत समीप चले गए हैं।

18वीं शती की चरनदास की **शिष्या–दयाबाई** और **सहजोबाई** अपनी रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। इनकी रचनाओं में सगुण भावापन्न काव्य का विशेष पुट है। ये अपनी गुरुभक्ति और भगवत्प्रेमपूर्ण रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। इनकी वाणी में सहजपन, हृदय की सरलता एवं स्वाभाविकता है।

यह परम्परा आधुनिक काल तक बराबर चली आ रही है और आज भी अनेक निर्गुण सम्प्रदाय और उसके पोषक कवि वर्तमान हैं, पर उनका काव्य पिष्ट–पेषण होने के कारण महत्त्वहीन है। मध्य युग की समाप्ति के साथ ही संत–काव्य की प्रगतिशीलता जारी रही, अब वह परम्पराबद्ध होकर निष्प्राण हो गया।

संत–मत की काव्य–परम्परा का ह्रास

संतों में गतानुगतिकता की मात्रा बढ़ने से संत–काव्य की विशेषताओं का ह्रास हो गया। **डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी** के शब्दों में–"18वीं शती के अन्त तक उसकी क्रान्तिकारी भावना समाप्त हो गई, और वह भी अन्य निहित स्वार्थ वाले मठों के समान, अपने ही बनाए हुए बन्धनों में क्रमशः जकड़ता गया। जिन लोगों ने माया को ललकारने का साहस किया था, उनके अनुयाई माया के घरौंदों में बन्द हो गए। वह क्रमशः क्षीण होता गया और इसीलिए वे ऐसे साहित्य की सृष्टि न कर सके जो मनुष्य को नया आलोक देता और कठिनाइयों और विपत्तियों से जूझने की प्रेरणा देता। यह साहित्य केवल शाब्दिक मायाजाल प्रस्तुत करता है और मनुष्य की स्वतन्त्र चिन्तन–शक्ति को रुद्ध करता है। ''इस प्रकार 18वीं शती से ही संतों की वाणी में नूतनता का अभाव एवं गतानुगतिकता का प्रभाव हो गया। इसलिए इनका साहित्य बासी हो गया। उनकी काव्य–परम्परा का विशेष महत्त्व नहीं रहा। इस ह्रास का कारण **डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी** के शब्दों में–कबीरदास, दादू इत्यादि के परवर्ती संतों की **'घर जोड़ने की माया'** है। अपना नवीन सम्प्रदाय चलाने का उत्साह उन्हें पुरानी रुढ़ियों से जकड़कर उनकी प्रगतिशील एवं क्रान्तिकारी वाणी की परम्परा में एक ऐसी सड़ांध पैदा कर देता है कि उनमें संतों की मौलिकता, विशेषता, सहजपन इत्यादि के दर्शन भी नहीं होते। **डॉ. द्विवेदी** जी के शब्दों में, "उसमें 'बुझौवल' जैसी वाणियों का प्रचार बढ़ता गया है।''

निष्कर्ष

संत–काव्य की परम्परा के उपर्युक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कबीरदास का व्यक्तित्व सर्वाधिक प्रखर था। उनकी उच्च भावभूमि तक परवर्ती संत कवि नहीं पहुँच सके। अधिकांश संत कवियों के काव्य पर तो कबीर–साहित्य की गहरी छाप है। अतः मध्यकालीन संत–साहित्य में कबीरदास का सर्वोच्च स्थान है। दादू के संत सुन्दर दास आदि शिष्यों की कवित्व–शक्ति बड़ी प्रखर थी।

'सूफी' शब्द की व्युत्पत्ति

सूफी मत के उद्भव तथा विकास पर विचार करने से पूर्व हमारे लिए आवश्यक है कि 'सूफी' शब्द की व्युत्पत्ति पर भी प्रकाश डाला जाय। 'सूफी' शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में भी अनेक मत हैं। कुछ लोगों की धारणा है कि मदीना में मस्जिद के सामने एक सुफ्फा (चबूतरा) था उसी पर जो फकीर बैठे थे, वे सुफी कहलाए। दूसरा मत यह है कि निर्णय के दिन जो लोग अपने सदाचार एवं व्यवहार के कारण औरों से अलग एक पंक्ति में (सफ में) खड़े हो गए, वास्तव में उन्हीं को सूफी कहते हैं। तीसरा मत है कि सूफी वस्तुतः स्वच्छ और पवित्र होते हैं, और सफा होने के कारण उनको सूफी कहते हैं। चौथे मत के अनुसार 'सूफी' शब्द सोफिया (ज्ञान) का रूपान्तर है। ज्ञान के कारण ही उनको सूफी कहा जाता है। पाँचवाँ मत है कि सूफी शब्द (सफेद ऊन) से बना है। सूफी संत ऊन के कपड़े पहनते थे, इसलिए वे 'सूफी' कहलाए। यह मत अधिकतर विद्वानों द्वारा मान्य समझा जाता है। सूफी का प्रयोग मुसलिम संत या फकीर के लिए ही अब नियत रूप से होने लगा। इस प्रकार 'सूफी शब्द की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में बहुत–से मत प्रचलित हैं।

सूफी मत और इस्लाम

इतिहास के आधार पर अध्ययन करने से किसी मत का सच्चा स्वरूप अपने शुद्ध और निखरे रूप में प्रकट होता है और उसके उद्भव तथा विकास का भी ठीक–ठीक पता चल जाता है। सूफी मत इस्लाम धर्म का एक प्रधान अंग माना जाता है। यद्यपि अनेक सूफियों ने अपने को मुहम्मदी मत से अलग रखने की पूरी चेष्टा की है, तथापि उनके व्याख्यान में मुहम्मद साहब का पूरा प्रभाव दिखाई देता है, परन्तु एक बात ध्यान देने योग्य है। वह यह कि सूफी संत कट्टर मुसलमानों से कुछ मुलायम तबियत के हैं। इसी अधार पर कट्टर मुसलमान उन्हें इस्लाम से कुछ भिन्न समझते थे।

सूफी मत के उद्भव के लिए इस्लाम धर्म से पूर्व प्रचलित शामी जाति के धर्म का अध्ययन भी करना पड़ता है। मुहम्मद साहब का प्रादुर्भाव तो बाद में हुआ। मुहम्मद साहब के इस्लाम से शामी जातियों में नवीन रक्त का संचार हुआ। इस्लाम के उदय के पूर्व ही सूफी मत के सभी अंग पुष्ट हो चले थे। इससे स्पष्ट हो जाता है कि मुहम्मद साहब के जन्म से पूर्व ही सूफी मत का उद्भव तथा विकास हो चुका था। इस प्रकार मुहम्मद साहब के ग्रन्थ में सूफी सिद्धान्त पाए जाते हैं, इसी आधार पर सूफी अपने मत को इस्लाम के अन्तर्गत मानते हैं।

सूफी और मसीही

मुसलमानों के पतन के बाद मसीहियों का विकास हुआ। सूफियों और मसीही संतों मे बहुत साम्य था, परन्तु जैसे कुरान की सहायता से सूफी मत इस्लाम का प्रसाद नहीं सिद्ध हो सकता, वैसे ही इंजील के आधार पर उनको मसीह मत का प्रसाद नहीं कहा जा सकता। कुछ सूफियों का कहना है कि सूफी मत का **आदम** में बीज–वपन, **नूर में अंकुर**, इब्राहीम में **कली, मूसा** में विकास, मसीह में परिपाक एवं मुहम्मद में मधु का फलागम हुआ।

सूफी मत का मूल स्रोत—उनके सिद्धान्तों का अध्ययन

सूफी मत के मूल स्रोत का पता लगाने के लिए हमें उनके सिद्धान्तों पर दृष्टिपात करना चाहिए। वस्तुतः सूफी मत प्रेम–भावना पर स्थित है। बात यह है कि मसीह का मूल मन्त्र विराम है, जो विरति के साथ रति भावना से भी प्लावित है। मसीह की दुलहिनों अथवा भक्त संतों ने प्रेम का जो अलौकिक रूप दिया उसके मूल में वही रति–भाव है। सूफियों के इस प्रेमवाद की शामी जाति वालों द्वारा बहुत दिनों तक विरोध हुआ। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि मसीह के निवृत्ति–प्रधान मार्ग में आध्यात्मिक प्रणय का स्वागत हुआ और लौकिक रति अलौकिक रति में परिणत हो गई। यही परम्परा सूफियों ने ग्रहण की। भारत में परमात्मा के साकार स्वरूप को खड़ा कर जिस माधुर्य–भाव का प्रचार किया गया उसी का प्रसाद शामी जातियों में निराकार के आलम्बन से मादन–भाव के रूप में प्रकट हुआ । सूफियों के इस प्रेमवाद के दर्शन मीरा व आंदाल के प्रेम में होते हैं। वास्तव में सूफियों के प्रेम का उदय संसार में प्रचलित देवदास एवं देवासियों की प्रथा से हुआ और कर्मकाण डी नबियों के घोर विरोध के कारण, उसको परम प्रेम की पदवी मिली।

भारतीय प्रभाव

12वीं शताब्दी के आरम्भ में जब सूफी लोग भारत में आए, तब सूफी मत पर अनेक भारतीय प्रभाव सूफी मत पर सबसे अधिक प्रभाव भारतीय वेदांत का पड़ा । वेदांत के प्रभाव को लेकर सूफी मत ने अपना स्वतन्त्र विकास किया, जिसमें कुरान के सात्त्विक सिद्धान्तों का विशेष रूप से सम्मिश्रण किया गया। सूफी मत पर दूसरा भारतीय प्रभाव हठयोगियों का पड़ा है। सूफियों ने योगियों से प्राणायाम आदि की शिक्षा ली। अतः सूफी पर हठयोगियों के सिद्धान्तों की यत्र–तत्र छाप मिलती है।

भारतवर्ष में सूफी मत का प्रवेश कुछ विद्वान ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती से मानते हैं। **श्री परशुराम चतुर्वेदी** इसका श्रेय प्रसिद्ध **अल्हुज्वरी** को देते हैं। अल्हुज्वरी भारत में विक्रम की 12वीं शताब्दी के प्रथम चरण में आए थे। इन्होंने सूफीमत के सिद्धान्तों का विश्लेषण करने के लिए एक ग्रन्थ 'कुश्फुल महजूब' लिखा। इसमें तत्कालीन विविध सूफी सम्प्रदायों का उल्लेख है। इनमें से प्रमुख 12 का वर्गीकरण करके उनका परिचय भी दिया है। भारत में सूफी मत चार सम्प्रदायों के रूप में प्रचलित हुआ। चार सम्प्रदाय ये हैं–**चिश्तिया** (12वीं शताब्दी) **सुहवर्दिया** (12वीं, शताब्दी) **काहिरिया** (15वीं शताब्दी) और **नक्शबंदिया** (15वीं शताब्दी)। ये सम्प्रदाय अपने मूल सिद्धान्तों में एक ही मत के मानने वाले थे किन्तु आचार–विचार में सूक्ष्म अन्तर मिलता है। इस मत की प्रमुख विशेषताएँ–प्रेम की प्रधानता, सामाजिक समता, मानव तत्त्व का महत्त्व एवं पूर्ण मानव को ईश्वर से अभेद इत्यादि हैं। यह मत अपने धार्मिक दृष्टिकोण में बहुत स्वच्छन्द है।

प्रेम–काव्य का उद्‌भव एवं परम्परा

सूफी मत के सिद्धान्तों की इस सम्प्रदाय के कवियों ने लोकप्रिय प्रेमगाथाओं के माध्यम से अभिव्यक्ति की है। प्रेम–काव्य का प्रारम्भ आदिकाल से हो जाता है, जब मुल्ला दाऊद ने चन्द्रावत या चन्द्रावली की रचना की। इसके उपरान्त प्रेम–काव्य की परम्परा पल्लवित एवं पुष्पित होती रही, किन्तु इसका पूर्ण परिपाक मलिक मुहम्मद जायसी में दिखाई पड़ा। वे सूफी–कवियों में सर्वोत्कृष्ट कवि हैं और उनका 'प्रेम–काव्य' सूफी मत एवं हिन्दी साहित्य दोनों की दृष्टि से उत्कृष्ट काव्य है। इनके बाद भी प्रेम–काव्य परम्परा चलती रही। इस परम्परा के अधिकांश काव्य शुद्ध लोक रंजन की भावना से रचित हैं। इन रचनाओं का नामकरण प्रायः नायिका के नाम पर अथवा नायक–नायिका दोनों के नाम पर किया है। इनकी कथावस्तु में इतिहास, कल्पना और रूढ़ि का योग है। प्रेम–काव्य धारा के विकास का अध्ययन करने से पूर्व हमें इस मत के सिद्धान्तों की चर्चा कर लेनी चाहिए।

प्रेममार्गी सूफी कवियों की परम्परा

हंसावली की परम्परा को आगे बढ़ाने वालों में **मुल्ला दाऊद** की **चन्दायन** नामक प्रेम–कथा है। मुल्ला दाऊद अलाउद्दीन के समय में हुए। इनकी रचना चन्दायन की कथा लोककथा पर आश्रित है। इसके पात्र एवं घटना निम्नवर्गीय समाज के हैं। इसमें शुभाशुभ शकुन, जादू, टोना, तन्त्र–यन्त्र का उल्लेख है। इसमें घटनाओं की प्रधानता है। **पद्‌मावत** की प्रस्तावना में **मलिक मुहम्मद जायसी** अपने से प्राचीन कुछ और प्रेम–कथाओं का भी उल्लेख करते हैं। देखिए—

विक्रम धंसा प्रेम के धारा। सपनावति कहँ गएउ पतारा।।
मधु पाछ मुगुधावति लागी। गगन पूर होयगा बैरागी।।
राजकुँवर कंचनपुर गए। मिरगावति कहँ जोगी भएउ।।
साध कुंवर खंडरावति जोगू। मधुमालति कर कीन्ह वियोगू।।
प्रेमावति कहँ सुरसरि साधा। ऊषा लागि अनिरुधि बर बाँधा।

इस उद्धरण के अनुसार सम्भवतः जायसी के पूर्व प्रेम–काव्य पर कुछ ग्रन्थ लिखे जा चुके थे–**'स्वप्नावती', मुग्धावती', 'खण्डरावती', मधुमालती** और **'प्रेमावती'।**

मुल्ला दाऊद सूफी परम्परा के सबसे प्राचीन कवि हैं, **रंजन** का उद्भव मुल्ला दाऊद के बाद हुआ। ये सूफी साधु फारसी–हिन्दी भाषाओं के अच्छे ज्ञाता थे। इनकी 'प्रेमवन जीवन निरंजन' हिन्दी की विख्यात रचना है। जायसी ने अपने से पूर्व प्रेमकथा कहने वालों का उल्लेख करते हुए 'प्रेमावती कहँ सुरसारे साधा' में जिस प्रेमावती का संकेत किया है, वह सम्भवतः इस 'प्रेमवन जीवन निरंजन' की नायिका है।

सन् 1501 में **कुतबन शेख** ने **मृगावती** नाम की प्रेमकथा अवधी भाषा में लिखी, जो दोहे और चौपाइयों में है। यह सूफी साहित्य का प्रथम ग्रन्थ है, जिसके द्वारा सूफी मत का हिन्दी–साहित्य में प्रवेश हुआ।

रुकमिनी पुनि वैसहि मरि गई। कुलवंती सत सों सति गई।
विधि कर चरित न जानै आनू। जो सिरजा सो जाहि निआनू।।

कुतबन के बाद **मंझन** की 'मधुमालती' नाम की प्रेम–गाथा भी मिलती है। **मंझन** ने अपनी रचना में विशेषता यह है कि अपनी प्रेम–कथा में नायक–नायिका के साथ उपनायक व उपनायिका की कल्पना भी की है। शुक्ल जी ने लिखा है 'जन्म–जन्मान्तर' और यौन्यन्तर के बीच प्रेम की अखण्डता दिखाकर मंझन ने प्रेमतत्व की व्यापकता और नित्यता का आभास दिया है। सूफियों के अनुसार यह सारा जगत एक ऐसे रहस्यमय प्रेम–सूत्र में बँधा है जिसका अवलम्बन करके जीव उस प्रेम मूर्ति तक पहुँचने का मार्ग पा सकता है। सूफी सब रूपों में उसकी छिपी ज्योति देखकर मुग्ध होते हैं, जैसे कि मंझन कहते हैं।

देखत ही पहिचानेउ तोहीं। एहि रूप जोहि छंदन्यो मोहीं।

ईश्वर का विरह सूफियों के यहाँ भक्त की प्रधान सम्पत्ति हैं जिसके बिना साधना के मार्ग में कोई प्रवृत्त नहीं हो सकता, किसी की आँखें नहीं खुल सकतीं।

विरह अबधि अवगाह अपारा। कोटि मांहि एक परै त पारा।।

इसकी भाषा अवधी है। 'मृगावती' की अपेक्षा इसकी कल्पना विशद एवं वर्णन भी विस्तृत तथा हृदय पर प्रभाव डालने वाले हैं।

जायसी : प्रतिनिधि कवि

इसके बाद सूफी परम्परा के प्रमुख और श्रेष्ठ कवि मलिक मुहम्मद जायसी इस क्षेत्र में आए। वे सूफी फकीर शेख मोहिदी के शिष्य थे तथा शेरशाह के काल में उन्होंने अपनी रचनाओं का सृजन किया। अन्तःसाक्ष्य के आधार पर इनका जन्म सन् 1498 में तथा मृत्यु सन् 1542 में हुई। इनके तीन ग्रन्थ हैं–पद्मावत, अखरावट और आखरी कलाम । मलिक मुहम्मद जायसी की प्रेम–परम्परा तथा अन्य सब प्रेम–मार्गी कवियों की प्रेम–पराम्परा में अन्तर है। जहाँ अन्य प्रेम–मार्गी संतों ने केवल कल्पित कथाओं का ही आश्रय लिया है वहाँ जायसी ने उसमें साहित्य का भी थोड़ा–सा मिश्रण कर दिया है। पद्मावत की समस्त कथा को एक रूपक में बाँधने का प्रयत्न किया गया है। पद्मावत के पूर्वार्द्ध में व्यक्ति–पक्ष है, परन्तु उत्तरार्द्ध में कवि प्रेमियों के व्यक्ति–पक्ष से हटकर लोक–पक्ष पर आ गया है। इसके सिवाय उसने अलाउद्दीन और पद्मिनी का ऐतिहासिक आख्यान उसमें जोड़ दिया है, इस कारण जायसी का पद्मावत अन्य प्रेम–मार्गी साहित्य से पृथक हो गया है। प्रबन्ध की दृष्टि से भी वह औरों से बढ़कर है। अन्य सूफी कवि जहाँ प्रेम, श्रद्धा, भक्ति आदि कोमल भावों को ही व्यक्त करते हैं वहाँ जायसी ने लोक–दृष्टि से समन्वित होकर युद्ध, उत्साह, क्रोध, खीझ आदि भाव भी प्रदर्शित किए। इस कारण उसमें प्रबन्धत्व की अपेक्षा से सामग्री अधिक हो गई है। भक्ति की रचनाएँ तो उनकी 'अखरावट' और 'आखरी कलाम' ही है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कवित्व–गुण और भाषा की दृष्टि से जायसी में अन्य सूफी संतों से श्रेष्ठता है।

जायसी के बाद **जलालुद्दीन** का नाम आता है। इनका 'जमाल पच्चीसी' नामक एक हस्तलिखित ग्रंथ मिलता है। इनकी कविता साधारण श्रेणी की है। इन्होंने दोहे, कवित्त और छप्पय में रचना की है।

उनके बाद अहमद का उद्भव हुआ है। आपके दोहे, सोरठे बहुत ही चटकीले तथा रसीले हैं। 'शिवसिंह–सरोज' ग्रन्थ के अनुसार इनका मत सूफी अर्थात् प्रेममार्गियों से मिलता–जुलता था।

इनके बाद **उसमान** इस क्षेत्र में आए। आपने जहाँगीर बादशाह के शासनकाल में 'चित्रावली' नामक पुस्तक लिखी। पुस्तक के आरम्भ में सूफी सम्प्रदाय के कवियों की परम्परा के अनुसार आपने भी ईश–स्तुति, पैगम्बर और खलीफाओं, बादशाह जहाँगीर तथा शाह निजामुद्दीन और हाजी बाबा की प्रशंसा की है। आपने अपनी 'चित्रावली' की रचना जायसी पदमावत के ढंग पर की है। 'चित्रावली' के दोहे–चौपाइयों का क्रम भी ठीक उसी प्रकार है। **उसमान** ने जायसी का पूरा अनुकरण किया है। जायसी की तरह नगर सरोवर, दान–महिमा आदि का वर्णन 'चित्रावली' में है। एक नई बात है कि इनके जोगी अंग्रेजों को भी देख आए थे।

वलंदीप देखा अँगरेजा। तहाँ जाइ जेहि कठिन करेजा।।
ऊँच–नीच धन–संपत्ति हेरा। मद बराह भोजन जिन्हें केरा।।

इनके बाद **शेखनबी** का समय आता है। इन्होंने 'ज्ञान–दीप' नामक एक आख्यान काव्य लिखा है, जिसमें राजा ज्ञानदीप' और रानी 'देवयानी' की कथा वर्णित है। शुक्लजी ने लिखा है कि 'शेख नबी से प्रेमगाथा परम्परा समाप्त समझनी चाहिए।'

जटमल ने 'गोरा बादल की बात' और 'प्रेमलता–चौपाई' नामक दो ग्रन्थ लिखे हैं। उनकी और भी फुटकल रचनाएँ हैं। उनकी भाषा में पंजाबीपन है, पर काव्य–सौष्ठव अधिक है।

इसके बाद **प्रेमी** नामक सूफी संत का समय आता है। इनकी रचना प्रेमपरकास' की एक हस्तलिखित प्रति प्राप्त हुई है। उसकी भाषा खड़ीबोली मिश्रित है तथा उसमें प्रेम–विरह का सुन्दर वर्णन है।

इसके बाद **कासिमशाह** ने 'हंस जवाहिर' नाम की कहानी लिखी है जिसमें 'हंस' और 'जवाहर' की कथा है। कहानी के प्रारम्भ में वन्दन जायसीकृत पद्मावत के ढंग की है। इन्होंने जायसी की पदावली तक ग्रहण कर ली है, पर इनकी कविता में प्रौढ़ता नहीं है।

इनके अतिरिक्त नूर मोहम्मद ने **'इन्द्रावती'** नामक आख्यान–काव्य लिखा। इन्होंने चौपाई के बीच में दोहे न रखकर बरवै रखे हैं। **फाजिलशाह** ने **'प्रेम–रतन'** और **आशी** ने वैराग्य, विरह और प्रेम का सुन्दर वर्णन किया।

उपसंहार

इधर खड़ी बोली में भी प्रेमाश्रयी रचनाएँ हुई हैं। कुछ कवियों ने खड़ी बोली में विदेशी छन्दों में भी प्रेममार्गी कविता की है। **कुतबशाह, मुहम्मदअली** तथा **मुहम्मद कुतबशाह** ने भी खड़ी बोली में सूफी रचनाएँ की हैं। इसी समय में और कवि भी हुए हैं, जिनकी रचनाओं में कुछ ऐसी प्रेम–कथाएँ भी हैं जैसे पद्मावती मृगावती आदि । परन्तु वे फारसी छन्दों में खड़ी बोली में लिखी हुई हैं। इनमें ईब्नुनिशाती की 'फूलबान और तहसीदुद्दीन की 'किस्सए-कम-रूप की कला' ऐसी ही रचनाएँ हैं। **मौलाना वजीद** का **गद्य-ग्रंथ 'सबरस'** ऐसी ही प्रेम-कहानी लेकर लिखा गया है। **नसरती** की 'मसनवी' 'गुलशने इश्क' में मनोहर और मालती के प्रेम का वर्णन है। **हाशिमी** की 'युसुफ जुलेखा' भी ऐसी ही प्रेम–कथाओं को लेकर चलती है। इधर हाल ही में प्रतापगढ़ के **ख्वाजा अहमद** ने 'नूरजहाँ' नामक काव्य सन् 1905 में लिखा। इसमें ईरान के मालिक शाह के पुत्र खुरशेदशाह के खूतनगर की राजकुमारी नूरजहाँ का प्रेम–प्रसंग वर्णित है। आधुनिक प्रेमगाथा के कवि **शेख रहीम** ने सन् 1915 में 'भाषा प्रेम रस' की रचना की। इसमें उन्होंने एक भारतीय प्रेम–गाथा को काव्यबद्ध किया है। इसके बाद **कवि नसीन** ने सन् 1917 में 'प्रेमदर्पण' नामक प्रेमकाव्य में एक प्राचीन कथानक को काव्यबद्ध किया। इस प्रकार सूफी प्रेम–काव्य की परम्परा 14वीं शताब्दी से आधुनिक काल तक बराबर चलती रही है।

असूफी प्रेमगाथाएँ

यहाँ हिन्दी साहित्य की **अन्य प्रकार** की प्रेमगाथाओं की चर्चा भी अनुपयुक्त न होगी। सूफी प्रेम–काव्य के अतिरिक्त भी अनेक प्रेमगाथाएँ पद्य और गद्य दोनों में ही रची गईं। इन प्रेमगाथाओं को **दो श्रेणियों** में विभक्त कर सकते हैं–एक तो वे संतों और भक्तों की रचनाएँ जिनमें आध्यात्मिक एवं सम्प्रदायगत धार्मिक सिद्धान्तों का प्रचार है। इस श्रेणी में 16वीं शताब्दी के **संत धरणीदास** की 'प्रेमप्रगास' और 17वीं शताब्दी के संत दुखहरन की 'पुहुपावती', अष्टछाप के नन्ददास की 'रूपमंजरी' इत्यादि प्रेम–कहानियों पर आश्रित काव्य आते हैं। इसके अतिरिक्त पुराणों की अति प्रचलित नल–दमयन्ती, कृष्ण–रुक्मिणी इत्यादि की प्रेमगाथाएँ भी काव्य निबद्ध हुईं। दूसरी श्रेणी के वे लौकिक प्रेम–काव्य हैं जो आज प्रक्षेप होते–होते वृहदाकार हो गए हैं, जैसे ढोला मारूरा दूहा। यह 16वीं शताब्दी के कुशललाभ कवि की रचना है। इसमें ढोला और मारव या मारू की प्रेम–कहानी को बड़ी ही मार्मिक एवं सरस भाषा में वर्णन किया गया है। इसी कवि की लिखी हुई एक और प्रेमगाथा 'माधवानल–कामकन्दला' है। इसके अतिरिक्त कुछ लौकिक प्रेमगाथाएँ और भी बनीं जैसे कुतुब–सतक, सोरठा' रा दूहा, कनक मंजरी (संवत् 1620), मैनासत (संवत् 1722), मदन सतक (संवत् 1724), 'जलाए गहाणी री बात' (संवत् 1753) इत्यादि। 19वीं शताब्दी की राजस्थान और गुजरात की कुछ प्रेम–गाथाएँ गद्य में भी मिलती हैं, जैसे–बातसंग्रह (संवत् 1823), वीजल विजोगण री बात (संवत् 1826), रावण लखणसेन री बात (संवत् 1847), राणै खेतै री बात (संवत् 1847), ऊमादे भटियारी री बात (संवत् 1847), सोहाणी री बात संवत् (1847) आदि।

सूफी प्रेम–काव्य और लौकिक प्रेम–काव्य या संतों और भक्तों के प्रेम–काव्य में थोड़ा–सा अन्तर है। वह यह है कि सूफियों के प्रेम–कथानकों का वास्तविक उद्देश्य किन्हीं सांसारिक व्यक्तियों की प्रेम–चर्चा द्वारा इश्क हकीकी के सिद्धान्त को दर्शाना है। इस प्रकार इनके प्रेम–काव्य कथा–रूपक की श्रेणी में आते हैं।

प्रमुख कवि एवं उनके उपन

मूल नाम	उपनाम/लोकप्रिय नाम/छद्म नाम
मलिक मुहम्मद	जायसी
सूरदास	अष्टछाप का जहाज/पुष्टिमार्ग का जहाज/खंजन नयन/वात्सल्य रस सम्राट
नंददास	जड़िया कवि
सैयद इब्राहिम रसखाव	रसखान
तुलसीदास	कवि शिरोमणि/मानस का हंस/लोक नायक
तुलसी और गंग	सुकविन के सरदार
अब्दुर्रहीम 'खानखाना'	रहीम
नरहरि बंदीजन	महापात्र
महेश दास	ब्रह्म/बीरबल
केशवदास	कठिन काव्य का प्रेत
मतिराम	पुराने पंथ के पथिक
घनानंद	प्रेम की पीर का कवि/साक्षात रसमूर्ति/जबाँदानी का दावा रखने वाला कवि
भिखारीदास दास	दास
सैय्यद गुलाम नबी	रसलीन
महाराज सावंत सिंह	नागरीदास
सदासुख लाल	नियाज
जगन्नाथ दास	रत्नाकर
राजा शिव प्रसाद	सितारे–हिन्द/भारतेन्दु के विद्यागुरु
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	हिन्दी नवजागरण का अग्रदूत/नवयुग के अग्रदूत/हिन्दी साहित्य में आधुनिकता के जन्मदाता/रसा
बदरी नारायण चौधरी	प्रेमघन
नाथूराम शर्मा	साहित्य–सुधाकर/शंकर
अयोध्या सिंह उपाध्याय	कवि सम्राट/हरिऔध
गया प्रसाद शुक्ल	सनेही/त्रिशूल
मैथिलीशरण गुप्त	प्रथम राष्ट्रकवि/दद्दा
बाल मुकुंद गुप्त	शिवशंभु
लाला भगवान दीन	दीन
सत्य नारायण	कविरत्न
जयशंकर प्रसाद	कलाधर/आधुनिक कविता के सुमेरु
सूर्यकांत त्रिपाठी	निराला/महाप्राण
सुमित्रा नन्दन पंत	प्रकृति का सुकुमार कवि/गोसाईं दत्त

मूल नाम	उपनाम/लोकप्रिय नाम/छद्म नाम
महादेवी वर्मा	आधुनिक युग की मीरा
माखन लाल चतुर्वेदी	एक भारतीय आत्मा
मोहन लाल महतो	वियोगी
जनार्दन प्रसाद झा	द्विज
वैद्यनाथ मिश्र	नागार्जुन/यात्री/जनकवि
त्र्यंबक वीर राघवाचार्य	रांगेय राघव
रामधारी सिंह	दिनकर
बालकृष्ण शर्मा	नवीन
शिव मंगल सिंह	सुमन
गोपाल शरण सिंह	नेपाली
हरिवंश राय बच्चन	हालावादी कवि
सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन	अज्ञेय/कठिन गद्य का प्रेत
शमशेर बहादुर सिंह	कवियों का कवि
गजानन माधव	फैंटेसी का कवि/मुक्तिबोध
सुदामा पांडे	धूमिल
कुमार विकल	धूम्रधर्मी कविताओं का कवि
प्रेमचंद	धनपत राय, कलम का सिपाही/उपन्यास सम्राट/कहानी सम्राट
वृंदावन लाल वर्मा	बुंदेलखण्ड का चंदबरदाई
शिव पूजन सहाय	शिव
पाण्डेय बेचन शर्मा	उग्र
उपेन्द्र नाथ	अश्क
रामेश्वर शुक्ल	अंचल/मांसलवादी
विश्वंभर नाथ शर्मा	कौशिक
चण्डी प्रसाद	हृदयेश
फणीश्वर नाथ	रेणु
चन्द्रधर शर्मा	गुलेरी
राजेन्द्र बाला घोष	बंग महिला
शरतचन्द्र	आवारा मसीहा
हरिकृष्ण	प्रेमी
विद्यानिवास मिश्र	भ्रमरानंद/परम्परा जीवी
वियोगी हरि	गद्य–काव्य का लेखक
गणेश बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र व शुकदेव बिहारी मिश्र	मिश्रबंधु
नंद दुलारे बाजपेयी	सौष्ठववादी/स्वच्छंदतावादी आलोचक

मूल नाम	उपनाम/लोकप्रिय नाम/छद्म नाम
डॉ. नगेन्द्र	रसवादी आलोचक
किशोरीदास बाजपेयी	हिन्दी के पाणिनी
राम विलास शर्मा	निरंजन
दुष्यंत कुमार	हिन्दी गजलों के राजकुमार

हिन्दी भाषा का साहित्य

संस्कृत भाषा को हिन्दी की जननी माना जाता है। भाषा के लिए 'हिन्दी' शब्द का प्राचीनतम प्रयोग **शरफुद्दीन के जफरनामा** में मिलता है।

संस्कृत भाषा के दो रूप हैं—

(i) वैदिक संस्कृत

(ii) लौकिक संस्कृत

- वैदिक संस्कृत तथा लौकिक संस्कृत प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ हैं।
- **वैदिक संस्कृत** के लिए **यास्क** तथा **पाणिनी** ने **छान्दस्** नाम भी प्रयुक्त किया है। इसके प्रयोग का समय **1500** ई. पू. से **1000** ई. पू. माना गया है।
- **लौकिक संस्कृत** के प्रयोग का समय **1000** ई. पू. से **500** ई. पू. माना गया है। वैदिक भाषा के साथ-साथ ही बोलचाल की भाषा संस्कृत थी जिसे लौकिक संस्कृत भी कहा जाता है।
- संसार की विभिन्न भाषाओं को लिखने के लिए अनेक लिपियाँ प्रचलित हैं। हिन्दी, संस्कृत, मराठी, नेपाली आदि भाषाएँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं।
- देवनागरी लिपि का विकास **ब्राह्मी लिपि** से हुआ है। ब्राह्मी लिपि का प्रयोग वैदिक आर्यों ने शुरू किया।

भारतीय आर्यभाषा का विभाजन

भारतीय आर्यभाषा को तीन कालों में विभक्त किया जा सकता है—

1. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा—

1500 ई. पू.—**500** ई. पू. = वैदिक संस्कृत व लौकिक संस्कृत

2. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा—

500 ई. पू.—**1000** ई. = पालि, प्राकृत व अपभ्रंश

3. आधुनिक भारतीय आर्यभाषा—

1000 ई. से अब तक = हिन्दी और हिन्दीतर भाषाएँ (बांग्ला, उड़िया, मराठी, सिंधी, पंजाबी, असमिया आदि।)

- **प्राचीन भारतीय आर्यभाषा**

  वैदिक संस्कृत—**1500** ई. पू.—**1000** ई. पू. = छान्दस् (यास्क, पाणिनी)

  लौकिक संस्कृत—**1000** ई. पू.—**500** ई. पू. = संस्कृत भाषा (पाणिनी)

- **मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा** (प्राकृत का समय)

  प्रथम काल (प्राकृत)—प्राकृत भारत की प्रथम देश भाषा है तथा भगवान बुद्ध के सारे उपदेश पालि में ही लिखे गए हैं।

  द्वितीय काल (प्राकृत)—भगवान महावीर स्वामी के समस्त उपदेश प्राकृत में लिखे गए।

  तीसरा काल (अपभ्रंश)—**500** ई.—**1000** ई.

  अवहट्ट—**900** ई.—**1100** ई. संक्रमणकालीन/संक्रांतिकालीन भाषा

- **आधुनिक भारतीय आर्यभाषा** (हिन्दी)

  प्राचीन हिन्दी **1100** ई.—**1400** ई.

  मध्यकालीन हिन्दी **1400** ई.—**1850** ई.

  आधुनिक हिन्दी **1850** ई.—अब तक

हिन्दी का विकास क्रम

संस्कृत
↓
पालि
↓
प्राकृत
↓
अपभ्रंश
↓
अवहट्ट
↓
हिन्दी

- अपभ्रंश भाषा का विकास **500** ई. पू. से **1000** ई. के मध्य हुआ। अपभ्रंश में साहित्य का आरम्भ **8**वीं सदी से **13**वीं सदी तक हुआ। अपभ्रंश का पुरानी हिन्दी से विशेष सम्बन्ध है।

	अपभ्रंश	आधुनिक भारतीय भाषाएँ/उपभाषाएँ
(1)	शौरसैनी	पश्चिमी हिन्दी, गुजराती, पहाड़ी, राजस्थानी
(2)	पैशाची	लहँदा, पंजाबी
(3)	ब्राचड़	सिन्धी
(4)	महाराष्ट्री	मराठी
(5)	मागधी	बिहारी, बांग्ला, उड़िया, असमिया
(6)	अर्द्धमागधी	पूर्वी हिन्दी

- अपभ्रंश से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ।
- अपभ्रंश के प्रमुख रचनाकार—स्वयंभू, धनपाल, पुष्पदंत, सरहपा, कण्हपा आदि।
- अपभ्रंश के लिए **अवहत्थ, अवहट्ठ, अवहठ** तथा **औहट** शब्दों का प्रयोग हुआ है।
- **स्वयंभू** को **अपभ्रंश का वाल्मीकि** कहा जाता है।
- विद्यापति ने इसे **'देसिल बयना'** अर्थात् देशी भाषा कहा है।
- अपभ्रंश व पुरानी हिन्दी के मध्य के काल को **'संक्रान्ति काल'** के नाम से जाना जाता है।
- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने संक्रान्ति काल में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा को **'पुरानी हिन्दी'** कहा है।
- आदिकाल की दो प्रमुख भाषाएँ थी—**डिंगल व पिंगल।**

आदिकाल का प्रचलित छन्द—**आल्हा छन्द।**

यह वीर रस का बहुत ही प्रचलित व लोकप्रिय छन्द था।

- आदिकालीन साहित्य के तीन प्रमुख रूप हैं–
  - सिद्ध साहित्य
  - नाथ साहित्य
  - रासो साहित्य
- सिद्ध साहित्य की भाषा को अपभ्रंश एवं हिन्दी के संधिकाल की भाषा माना जाता है।
- सिद्धों की संख्या 84 मानी जाती है। सिद्ध कवियों द्वारा जनभाषा में लिखा गया साहित्य **सिद्ध साहित्य** कहलाता है।
- सिद्ध कवियों की रचनाएँ दो रूपों में मिलती हैं–**'दोहा कोष'** तथा **'चयार्पद'।**
- 84 सिद्धों में प्रमुख हैं—**सरहपा, शबरपा, कण्हपा, लुइया, डोम्भिपा, कुक्कुरिपा** आदि।
- नाथ पंथ का प्रवर्तक **गोरखनाथ** को माना जाता है। **10**वीं सदी के अन्त में शैव धर्म एक परिवर्तित रूप में आरम्भ हुआ जिसे **'नाथ पंथ'** या **'हठयोग'** कहा गया। नाथों की संख्या 9 मानी जाती है—**आदिनाथ (शिव), जलंधर नाथ, मछंदर नाथ, गोरखनाथ, निवृत्ति नाथ, गैनी नाथ** आदि।
- नाथ पंथियों ने जाति–पाँत, ऊँच–नीच और वर्ण भेद का विरोध किया था।
- नाथ पंथ के प्रवर्तक गोरखनाथ की कुल 14 रचनाएँ मानी जाती हैं।
- गोरखनाथ को हिन्दी का प्रथम गद्य लेखक मानते हैं।

हिन्दी भाषा में कुछ परिवर्तन

आगत शब्द–	कदम, फुर्सत, खाक (फारसी) ताबीज, कागज, खराब (अरबी) दारोगा, सौगात (तुर्की) टॉफी, टॉकीज, हॉल (अंग्रेजी)	लिंग–	अरबी–फारसी से आये 'रूह', 'बू', 'ताकत' आदि के लिंग के असर से, परम्परा प्राप्त 'आत्मा', 'गंध', 'सामर्थ्य' आदि स्त्रीलिंग हो गये।
आगत ध्वनियाँ–	क़, ख़, ग़, ज़, फ़, ऑ	रूप–	तुमने आना है। (पंजाबी प्रभाव से। हिन्दी रूप '**तुम्हें**' आना है।) बहुत सी बुक्स पढ़ो। मकानात में आग लगी। (हिन्दी की प्रकृति के अनुसार ' 'बुकें, 'मकानों' होगा।)
आगत प्रत्यय/ उपसर्ग–	'दार' (फारसी)–रसदार, फलदार बे (फ़ारसी)–बेमेल, बेनाम		
वाक्य–	वह व्यक्ति जिसने 'हिन्दी गीत' को शिखर पर पहुँचाया, महादेवी वर्मा हैं। (द पर्सन हू रीच्ड् द हिन्दी–लिरिक टू ज़ैनिथ इज़् 'महादेवी वर्मा' के असर से बना वाक्य–रूप)		वैसे हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल वाक्य रहा है– जिस व्यक्ति ने हिन्दी गीत को शिखर पर पहुँचाया, वह महादेवी वर्मा हैं।

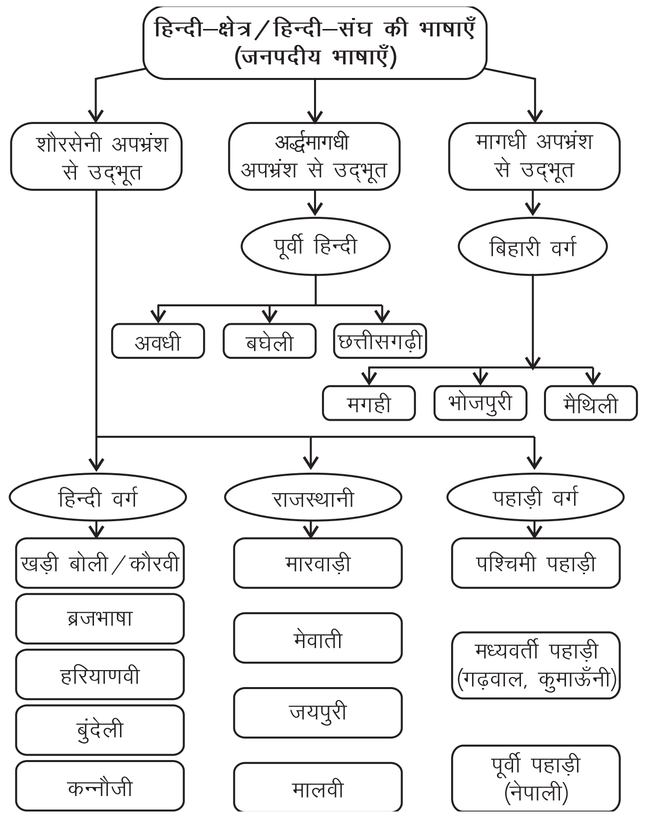

हिन्दी–क्षेत्र की भाषाएँ

भाषा–भेद और भाषायी परिवर्तनशीलता का ही एक आयाम है किसी एक भाषा–क्षेत्र में मौजूद अलग–अलग विभाषाएँ या बोलियाँ। विभाषाओं/बोलियों की बहुलता का आधार है–भौगोलिक रूप से विभक्त हुए मानव–समूहों की अलग–अलग स्थानगत सांस्कृतिक विशेषता। ऐसे अलग–अलग सांस्कृतिक समूह की अलग–अलग भाषिक संरचनाएँ होती हैं, उसी को कुछ लोग उस भाषा की बोली कहते हैं।

'बोली' शब्द का प्रयोग सामान्यतः दो अर्थों में किया जाता रहा है

1. "बोली' जिसका प्रयोग कम लोगों द्वारा किया जाता है, सीमित क्षेत्र और सीमित कार्यों में जिसका प्रयोग होता है और जिसका साहित्य नहीं होता है।
2. किसी एक व्यापक और परिनिष्ठित/मानक भाषा के स्थानीय व क्षेत्रीय संस्करणों यानी विभाषाओं के लिए।

जब हम अवधी, ब्रजभाषा, मैथिली, भोजपुरी, गढ़वाली आदि को हिंदी की बोलियाँ कहते हैं, तो हम पहले अर्थ में बोली का प्रयोग कर रहे होते हैं, लेकिन यह सच नहीं है, क्योंकि अवधी, ब्रज, गढ़वाली आदि भाषाओं में प्रचुर साहित्य उपलब्ध है। इसीलिए, यह भाषावैज्ञानिक अर्थ नहीं है। भाषाविज्ञान की दृष्टि से उचित यही होगा कि बोली शब्द का प्रयोग दूसरे अर्थ में किया जाए। किसी एक भाषा के अंतर्गत, कुछ व्याकरण और मुख्यतः शब्दावली के अंतर से उस के कई स्थानीय रूप पाए जाते हैं।

रासो काव्य परम्परा

रचना	रचनाकार
पृथ्वीराज रासो	चन्दबरदाई
बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह
हम्मीर रासो	शारंगधर
परमाल रासो	जगनिक
खुमाण रासो	दलपति विजय
दोहा कोश	सरहपा
परम चरिउ	स्वयंभू
जयमयंक जस चंद्रिका	मधुकर
श्रावकाचार	देवसेन
योगचर्या	डोम्भिपा
चर्यापद	शबरपा
वर्णरत्नाकर	ज्योतिरीश्वर ठाकुर
संदेश रासक	अब्दुर्रहमान

हिन्दी का प्रचार करने वाली प्रमुख धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाएँ

ब्रह्म समाज	कलकत्ता	**1828** ई.	राजा राममोहन राय
प्रार्थना समाज	बंबई	**1867** ई.	आत्मारंग पाण्डुरंग
आर्य समाज	बंबई	**1875** ई.	स्वामी दयानन्द सरस्वती
थियोसोफिकल सोसायटी	मद्रास	**1875** ई.	एनी बेसेंट
रामकृष्ण मिशन	बेलूर	**1897** ई.	विवेकानन्द

हिन्दी के विकास से सम्बन्धित प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ

(1) **उदंत मार्तण्ड–** **30** मई, **1826** को कलकत्ता से प्रकाशित (हिन्दी का प्रथम साप्ताहिक पत्र) संपादक–पं. जुगल किशोर शुक्ल।

(2) **बंगदूत–** **1829** में कलकत्ता से प्रकाशित साप्ताहिक पत्र, संपादक–राजा राममोहन।

(3) **बनारस अखबार–** **1849** में काशी से प्रकाशित, संपादक–राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द'।

(4) **समाचार सुधावर्षण–** **1854** में कलकत्ता से प्रकाशित प्रथम हिन्दी दैनिक पत्र, संपादक–श्यामसुन्दर सेन।

(5) **प्रजा हितैषी–** **1855** में आगरा से प्रकाशित, संपादक–राजा लक्ष्मण सिंह।

(6) **कविवचन सुधा–** **1867** में काशी से प्रकाशित, संपादक–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

(7) **हरिश्चन्द्र मैगजीन–** **1873** में बनारस से प्रकाशित, संपादक–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

(8) **बाला बोधिनी–** **1874** में बनारस से प्रकाशित मासिक पत्रिका, संपादक–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा केवल महिलाओं के लिए प्रकाशित पत्रिका।

(9) **सदादर्श–** **1874** में दिल्ली से प्रकाशित साप्ताहिक पत्र, संपादक–लाला श्रीनिवास दास।

(10) **भारत मित्र–** **1877** में प्रकाशित साप्ताहिक पत्र, संपादक–बालमुकुंद गुप्त।

(11) **हिन्दी प्रदीप–** **1877** में इलाहाबाद से प्रकाशित मासिक पत्रिका, संपादक–बालकृष्ण भट्ट।

(12) **ब्राह्मण–** **1880** में कानपुर से प्रकाशित, संपादक–प्रताप नारायण मिश्र।

(13) **आनन्द कादंबिनी–** **1881** में मिर्जापुर से प्रकाशित मासिक, संपादक–बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'।

(14) **भारतेन्दु–** **1883** वृन्दावन, संपादक–राधाचरण गोस्वामी।

(15) **द्वन्द्व–** **1883** मासिक, लाहौर, संपादक–अंबिकादत्त व्यास।

(16) **नागरी नीरद–** **1893** साप्ताहिक, मिर्जापुर, संपादक–बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'।

(17) **नागरी प्रचारिणी पत्रिका–** **1896** में काशी से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका, संपादक–श्याम सुंदरदास, रामनारायण मिश्र, शिवकुमार सिंह

(18) **उपन्यास–** **1898,** मासिक काशी, संपादक–किशोरीलाल गोस्वामी

(19) **सरस्वती–** **1900** में इलाहाबाद से प्रकाशित मासिक, सम्पादक–**1990** से **1903** तक महावीर प्रसाद द्विवेदी।

(20) **सुदर्शन–** **1900** काशी से प्रकाशित मासिक, संपादक–देवकीनन्दन खत्री, माधवप्रसाद मिश्र।

(21) **समालोचक–** **1902** में जयपुर से प्रकाशित, संपादक–चंद्रधर शर्मा गुलेरी।

(22) **इन्दु–** **1909** में वाराणसी से प्रकाशित मासिक, सम्पादक–अम्बिका प्रसाद गुप्ता, रूप नारायण पाण्डेय।

(23) **मर्यादा–** वाराणसी से प्रकाशित, संपादक–कृष्णकांत मालवीय, पद्यकांत मालवीय, लक्ष्मीधर बाजपेयी।

(24) **प्रताप–** **1913** में कानपुर से प्रकाशित साप्ताहिक, संपादक–गणेश शंकर विद्यार्थी।

(25) **प्रभा–** **1913** में खण्डवा से प्रकाशित मासिक, संपादक–बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी।

(26) **माधुरी–** **1922** में लखनऊ से प्रकाशित, संपादक–प्रेमचन्द।

(27) **मतवाला–** **1923** में कलकत्ता से प्रकाशित साप्ताहिक, संपादक–निराला।

(28) **विशाल भारत–** **1928** में कलकत्ता से प्रकाशित मासिक, संपादक–बनारसीदास चतुर्वेदी, अज्ञेय, श्रीराम शर्मा।

(29) **सुधा–** **1929** में लखनऊ से प्रकाशित मासिक, संपादक–दुलारेलाल भार्गव, निराला।

(30) **हंस–** **1930** में बनारस से प्रकाशित मासिक, संपादक–प्रेमचन्द।

(31) **भारत–** **1933** में इलाहाबाद से प्रकाशित, संपादक–नंददुलारे बाजपेयी।

(32) **रूपाभ–** **1938** में प्रकाशित मासिक पत्र, संपादक–सुमित्रानन्दन पंत।

(33) **प्रतीक–** **1947** में इलाहाबाद से प्रकाशित, संपादक–'अज्ञेय'।

(34) **समालोचक–** **1958** में आगरा से प्रकाशित मासिक पत्र, संपादक–रामविलास शर्मा।

(35) **पहल–** **1960** में जयपुर से प्रकाशित त्रैमासिक पत्र, संपादक–ज्ञानरंजन।

(36) **दिनमान–** **1965** में दिल्ली से प्रकाशित साप्ताहिक, संपादक–रघुवीर सहाय।

(37) **संचेतना–** **1967** में दिल्ली से प्रकाशित त्रैमासिक, संपादक–महीप सिंह।

(38) **तद्भव–** **1999** में लखनऊ से प्रकाशित, संपादक–अखिलेश।

(39) **बहुवचन–** **1999** में वर्धा से प्रकाशित त्रैमासिक, संपादक–अशोक वाजपेयी।

(40) **परख–** **2000** में इलाहाबाद से प्रकाशित, सम्पादक–कृष्ण मोहन।

(41) **संधान–** **2001** में इलाहाबाद व दिल्ली से प्रकाशित त्रैमासिक, सम्पादक–लाल बहादुर वर्मा

(42) **पाखी–** **2008** में नोएडा से प्रकाशित मासिक, संपादक–अपूर्व जोशी

प्रमुख भाषाएँ

अवधी भाषा

- अवधी भाषा को साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित करने का श्रेय **प्रेममार्गी सूफी कवियों** को जाता है।
- अवधी अवध क्षेत्र की बोली है।
- अवधी को **'कोसली'** नाम से भी पुकारा जाता है।
- अवधी भाषा की पहली कृति मुल्ला दाउद की **'चंदायन' (1370)** या **'लोरकहा'** मानी जाती है।
- रामभक्त कवियों ने अवधी भाषा को साहित्यिक भाषा के रूप में प्रधानता दी है। इसमें प्रमुख स्थान **जायसी** का है।
- तुलसीदास ने **'रामचरितमानस'** की रचना अवधी भाषा में की थी।
- अवधी के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ—

रचनाकार	रचना
कुतुबन	मृगावती
जायसी	पद्मावत
मंझन	मधुमालती
नूर मुहम्मद	इन्द्रावती
उसमान	चित्रावली
तुलसीदास	रामचरितमानस

ब्रजभाषा

- हिन्दी के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसकी स्थापना 1800 ई. में कोलकाता में हुई। ब्रजभाषा के आचार्य जॉन गिलक्राइस्ट ने विभिन्न भारतीय भाषाओं का अध्ययन किया तथा **'व्याकरण'** व **'शब्दकोष'** की रचना की।
- ब्रजभाषा में सर्वाधिक साहित्य की रचना कृष्ण भक्त कवियों ने पूर्व मध्यकाल में की। पुष्टिमार्ग के संस्थापक **वल्लभाचार्य** ने आठ कवियों को लेकर 1565 ई. में **अष्टछाप** की स्थापना की। जिसमें से चार विट्ठलनाथ के शिष्य थे।
  विट्ठलनाथ—गोविन्ददास, छीतस्वामी, नन्ददास, चतुर्भुजदास।
  वल्लभाचार्य—कुम्भनदास, सूरदास, कृष्णदास, परमानन्द दास।
- कृष्णभक्त कवियों में सूरदास का सर्वोच्च स्थान है। सूरदास **वल्लभाचार्य** के शिष्य थे। सूरदास की मृत्यु पर विट्ठलनाथ ने दु:खी होकर कहा था–
  "पुष्टिमार्ग को जहाज जात है सो जाको कछु लेना होय सो लेउ"
- रीतिकालीन कवियों में केशवदास, बिहारी, देव, पद्माकर, भिखारीदास, सेनापति, मतिराम, घनानन्द, बोधा, आलम आदि कवियों ने ब्रजभाषा के साहित्य को समृद्ध करने में अपना योगदान दिया।
- निम्बार्क सम्प्रदाय, राधावल्लभी सम्प्रदाय, सखी सम्प्रदाय, चैतन्य गौड़ीय सम्प्रदाय के कवियों ने भी ब्रजभाषा के साहित्य को समृद्ध करने में अपना योगदान दिया।

खड़ी बोली

- खड़ी बोली गद्य की परम्परा का सूत्रपात सत्रहवीं–अठारहवीं शती से हुआ है।
- खड़ी बोली की प्राचीनतम गद्य–रचना प्रसिद्ध **कवि गंग** की **चंद छंद बरनन की महिमा** है।
- अठारहवीं शताब्दी की महत्वपूर्ण गद्य रचनाएँ **भाषा योग वाशिष्ठ** व **पद्म पुराण** है। **भाषा योग वाशिष्ठ** के रचयिता **रामप्रसाद निरंजनी** तथा **पद्म पुराण** के रचयिता **पं. दौलतराम** थे।

- खड़ी बोली का दूसरा नाम **कौरवी** है।
- उन्नीसवी शताब्दी के हिन्दी गद्य के चार उच्चकोटि के लेखक हैं—
  मुंशी सदासुखलाल—ये दिल्ली के निवासी थे तथा उर्दू फारसी के विख्यात साहित्यकार थे। इनका **सुखसागर** नामक ग्रन्थ विख्यात है।
  इंशा अल्ला खाँ—ये उर्दू के प्रसिद्ध शायर थे। इन्होंने **हिन्दी** के प्रयोग से **रानी केतकी की कहानी** की रचना की।
  लल्लू लाल—ये आगरा के गोकुलपुरा के निवासी थे। इन्होंने शुद्ध खड़ी बोली में **प्रेमसागर** की रचना की।
  सदलमिश्र—ये बिहार के निवासी थे। इन्होंने **नासिकेतोपाख्यान** की रचना की।
- खड़ी बोली गद्य की पहली रचना **गोरा बादल की कथा** मानी जाती है। इसके रचनाकार '**जटमल**' थे।
- हिन्दी गद्य के विकास में दो महानुभावों का विशेष योगदान रहा है। **राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द** एवं **राजा लक्ष्मण सिंह ।**
- **राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द**–इनकी पुस्तकों में उर्दू भाषा का बाहुल्य देखने को प्राप्त होता है। इनकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं—
  - राजा भोज का सपना
  - मानव धर्म सार
  - इतिहास तिमिर नाशक
  - उपनिषद् सार
- **राजा लक्ष्मण सिंह** ने अपनी रचनाओं में संस्कृत मिश्रित हिन्दी का प्रयोग किया है। आप आगरा के गोकुलपुरा के निवासी थे। आपने आगरा से **'प्रजा हितैषी'** नामक पत्र निकाला तथा **'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'** का अनुवाद विशुद्ध हिन्दी में किया।

राजभाषा के रूप में हिन्दी का स्वरूप

- भारतीय संविधान में **14 सितम्बर, 1949** को हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ।
- संविधान के **अनुच्छेद 343** के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि **देवनागरी** है।
- राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष **बाल गंगाधर खरे** थे। राजभाषा आयोग की प्रथम बैठक **15 जुलाई, 1955** को हुई थी।
- राजभाषा का अर्थ है–सरकारी कामकाज के लिए प्रयुक्त की जाने वाली भाषा। जिस समय हमारे यहाँ राजाओं तथा नवाबों का राज था उस समय राजभाषा को 'दरबारी भाषा' कहा जाता था।
- **14** सितम्बर, **1949** को सर्वसम्मति से हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित कर दिया गया। संविधान के अनुच्छेद **343** में लिखा गया है कि– 'देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी संघ की राजभाषा होगी।'
- संविधान के **अनुच्छेद 343 (i)** के अनुसार—"संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा, किन्तु इसी धारा के अन्तर्गत यह प्रावधान कर दिया गया कि संविधान के प्रारम्भ होने से **15** वर्ष की कालावधि के लिए उन सब राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी होता रहेगा जिसके लिए वह पहले से प्रयुक्त होती रही हो।"
- संविधान के अनुसार वही भाषा राष्ट्रभाषा की श्रेणी में आती है जिसमें राष्ट्रभाषा के सर्वाधिक गुण विद्यमान हों, जो निम्नलिखित हैं—
  — राष्ट्रभाषा देश के बहुसंख्यक लोगों द्वारा प्रयोग में लाई जाती हो।
  — उसमें उच्चकोटि के साहित्य की रचना हुई हो।
  — उसका शब्द भण्डार विस्तृत एवं समृद्ध हो।
  — वह व्यापक क्षेत्र में व्यवहृत हो।
  — उसका व्याकरण सरल एवं नियमबद्ध हो।
  — उसकी लिपि सुस्पष्ट एवं वैज्ञानिक हो।
  — वह राष्ट्रीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती हो।
  — वह भाषा राष्ट्रीय एकता में सहायक हो।

  इन समस्त विशेषताओं के आधार पर हिन्दी के अतिरिक्त अन्य किसी भाषा में ये गुण विद्यमान नहीं हैं, अतः सिर्फ हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो सकती है।
- संविधान की आठवीं सूची में 22 भाषाओं को सम्मिलित किया गया है जिसमें उर्दू, गुजराती, तमिल, पंजाबी, मराठी, संस्कृत, हिन्दी, मणिपुरी, बोडो, संथाली, असमिया, उड़िया, कन्नड़, कश्मीरी, तेलुगू, बांग्ला, मलयालम, सिन्धी, नेपाली, कोंकणी, मैथिली, डोंगरी शामिल हैं।
- राजभाषा के अन्तर्गत किसी विदेशी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया जा सकता है, परन्तु राष्ट्रभाषा किसी स्वदेशी भाषा को ही बनाया जा सकता है।
- राजभाषा मानक भाषा होती है जबकि राष्ट्रभाषा अन्य भाषाओं के क्षेत्रीय प्रभावों को ग्रहण करती है।
- राजभाषा किसी भी देश में एक से अधिक हो सकती हैं परन्तु राष्ट्रभाषा किसी देश में एक ही होती है।

विश्व हिन्दी सम्मेलन

सम्मेलन	स्थान	अवधि
पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन	नागपुर (भारत)	**10** से **14** जनवरी **1975**
दूसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन	मॉरीशस	**28** से **30** अगस्त **1976**
तीसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन	दिल्ली (भारत)	**28** से **30** अक्टूबर **1983**
चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन	मॉरीशस	**2** से **4** दिसम्बर **1993**
पाँचवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन	टोबैगो	**4** से **8** अप्रैल **1996**
छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन	लन्दन (ब्रिटेन)	**14** से **18** सितम्बर **1999**
सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन	सूरीनाम	**5** से **9** जून **2003**
आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन	न्यूयार्क (अमेरिका)	**13** से **15** जुलाई **2007**
नवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन	जोहान्सबर्ग (दक्षिण अफ्रीका)	**22** से **24** सितम्बर **2012**
दसवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन	भोपाल (भारत)	**10** से **12** सितम्बर **2015**

दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का उद्घाटन भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य विषय 'हिन्दी जगतः विस्तार एवं संभावनाएँ' था।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. 'पृथ्वीराज रासो' किस काल की रचना है ?
(A) आदिकाल (B) रीतिकाल
(C) भक्तिकाल (D) आधुनिक काल

2. 'आल्हा' के रचयिता का नाम है–
(A) श्रीधर (B) केदारनाथ
(C) चन्दबरदाई (D) जगनिक

3. हिन्दी की उत्पत्ति किस भाषा से हुई है ?
(A) प्राकृत (B) संस्कृत
(C) शौरसैनी अपभ्रंश (D) मागधी

4. निम्नलिखित बोलियों में से कौन–सी बोली उत्तर प्रदेश में सामान्यतः नहीं बोली जाती ?
(A) मैथिली (B) अवधी
(C) ब्रज (D) खड़ी बोली

5. कौन हिन्दी की उपभाषा नहीं है ?
(A) पूर्वी हिन्दी (B) राजस्थानी
(C) मराठी (D) पश्चिमी हिन्दी

6. हिन्दी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है ?
(A) सौराष्ट्री (B) देवनागरी
(C) गुरुमुखी (D) ब्राह्मी

7. भारत की प्रथम देशज भाषा कौन–सी है ?
(A) पालि (B) प्राकृत
(C) संस्कृत (D) इसमें से कोई नहीं

8. भारत में आर्यभाषा का आरम्भ कब हुआ?
(A) 1600 ई. पूर्व (B) 1500 ई. पूर्व
(C) 1400 ई. पूर्व (D) 1300 ई. पूर्व

9. पूर्वी हिन्दी विकसित हुई है—
(A) पैशाची अपभ्रंश (B) अर्द्धमागधी अपभ्रंश
(C) शौरसेनी अपभ्रंश (D) मागधी अपभ्रंश

10. निम्नलिखित में से कौन–सी बोली राजस्थानी हिन्दी के अन्तर्गत आती है ?
(A) मगही (B) कन्नौजी
(C) मेवाती (D) बघेली

11. हिन्दी के अतिरिक्त कौन–सी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है ?
(A) नेपाली (B) सिंधी
(C) बांग्ला (D) पंजाबी

12. पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत कौन–सी बोली आती है ?
(A) कन्नौजी (B) मेवाती
(C) बघेली (D) मगही

13. डॉ. रूपचन्द पारिख के अनुसार हिन्दी साहित्य के इतिहास के सर्वप्रथम लेखक का नाम है–
(A) जॉर्ज ग्रियर्सन
(B) शिवसिंह सेंगर
(C) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(D) गार्सा दा तासी

14. चारण काव्य की भाषा है–
(A) डिंगल (B) प्राकृत
(C) अवहट्ट् (D) ब्रजभाषा

15. विद्यापति की 'पदावली' की भाषा क्या है ?
(A) मैथिली (B) ब्रजभाषा
(C) भोजपुरी (D) मगही

16. अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी के मध्य का समय कहा जाता है–
(A) उत्कर्ष काल
(B) अवसान काल
(C) संक्रान्ति काल
(D) प्राकृत काल

17. 'ब्रजबुलि' नाम से किस भाषा को जाना जाता है ?
(A) पंजाबी (B) मराठी
(C) गुजराती (D) पुरानी बांग्ला

18. सरहपा के अन्य नाम हैं–
(A) सरोज व्रज
(B) राहुल व्रज
(C) (A) व (B) दोनों
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

19. 'हिन्दी का आदि कवि' किसे माना जाता है ?
(A) अब्दुर्रहमान (B) भारतेन्दु
(C) स्वयंभू (D) पुष्पदंत

20. खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य कौन–सा है ?
(A) भक्तिसागर (B) सुखसागर
(C) प्रियप्रवास (D) प्रेम सागर

21. निम्नलिखित में से कौन–सी पश्चिमी हिन्दी की बोली नहीं है ?
(A) बुन्देली (B) ब्रज
(C) कन्नौजी (D) बघेली

22. हिन्दी भाषा के विकास का सही अनुक्रम कौन–सा है ?
(A) पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी
(B) प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, पालि
(C) अपभ्रंश, पालि, प्राकृत, हिन्दी
(D) हिन्दी, पालि, अपभ्रंश, प्राकृत

23. 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है–
(A) 11 जून (B) 14 सितम्बर
(C) 28 सितम्बर (D) 10 अक्टूबर

24. भारत में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा कौन–सी है ?
(A) हिन्दी (B) संस्कृत
(C) तमिल (D) उर्दू

25. भारत में आर्यभाषा का आरंभ कब हुआ?
(A) 1600 ई. पूर्व के आसपास
(B) 1500 ई. पूर्व के आसपास
(C) 1400 ई. पूर्व के आसपास
(D) 1300 ई. पूर्व के आसपास

26. निम्नलिखित में से कौन–सी बोली अथवा भाषा हिन्दी के अन्तर्गत नहीं आती है ?
(A) कन्नौजी (B) बांगरू
(C) अवधी (D) तेलुगू

27. भारतवर्ष में हिन्दी को आप किस वर्ग में रखेंगे ?
(A) राजभाषा (B) राष्ट्रभाषा
(C) विभाषा (D) तकनीकी भाषा

28. 'ढूँढाड़ी' बोली है–
(A) पश्चिमी राजस्थान की
(B) पूर्वी राजस्थान की
(C) दक्षिणी राजस्थान की
(D) उत्तरी राजस्थान की

29. निम्नलिखित में से कौन–सी भाषा संस्कृत भाषा की अपभ्रंश है?
(A) खड़ी बोली (B) ब्रजभाषा
(C) अवधी (D) पालि

30. अधिकतर भारतीय भाषाओं का विकास किस लिपि से हुआ ?
(A) शारदा लिपि (B) खरोष्ठी लिपि
(C) कुटिल लिपि (D) ब्राह्मी लिपि

31. हिन्दी भाषा की बोलियों के वर्गीकरण के आधार पर छत्तीसगढ़ी बोली है–
(A) पूर्वी हिन्दी (B) पश्चिमी हिन्दी
(C) पहाड़ी हिन्दी (D) राजस्थानी हिन्दी

32. 'ब्रजभाषा' है–
(A) पूर्वी हिन्दी (B) पश्चिमी हिन्दी
(C) बिहारी हिन्दी (D) पहाड़ी हिन्दी

33. 'मगही' किस उपभाषा की बोली है ?
(A) राजस्थानी (B) पश्चिमी हिन्दी
(C) पूर्वी हिन्दी (D) बिहारी

34. हिन्दी खड़ी बोली किस अपभ्रंश से विकसित हुई है ?
(A) मागधी (B) अर्द्ध मागधी
(C) शौरसेनी (D) ब्राचड़

35. 'बघेली' बोली का सम्बन्ध किस उपभाषा से है?
(A) राजस्थानी (B) पूर्वी हिन्दी
(C) बिहारी (D) पश्चिमी हिन्दी

36. विकास की दृष्टि से प्राकृत की पूर्वकालीन अवस्था का नाम है–
(A) पालि (B) संस्कृत
(C) हिन्दी (D) अवहट्ठ

37. पश्चिमी हिन्दी की दो बोलियों का सही युग्म है–
(A) कन्नौजी–अवधी
(B) ब्रज–बघेली
(C) छत्तीसगढ़ी–बांगरू
(D) खड़ी बोली–बुंदेली

38. अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित बोली है—
(A) बांगरू (B) बघेली
(C) ब्रजभाषा (D) भोजपुरी

39. अपभ्रंश को 'पुरानी हिन्दी' किसने कहा है ?
(A) ग्रियर्सन
(B) श्याम सुन्दर दास
(C) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'
(D) भारतेन्दु

40. शौरसेनी अपभ्रंश से किस उपभाषा का विकास हुआ ?
(A) बिहारी (B) राजस्थानी
(C) बांग्ला (D) पंजाबी

41. इनमें कौन–सी बोली पूर्वी हिन्दी की नहीं है ?
(A) अवधी (B) बिहारी
(C) बघेली (D) छत्तीसगढ़ी

42. हिन्दी की 'उपभाषाएँ' कितनी हैं ?
(A) तीन (B) चार
(C) पाँच (D) छः

43. 'अवधी' का उद्‌भव किस अपभ्रंश से हुआ है ?
(A) शौरसेनी (B) पैशाची
(C) मागधी (D) अर्द्धमागधी

44. 'मैथिली' में साहित्य सृजन करने वाला रचनाकार कौन है ?
(A) विद्यापति (B) भारतेन्दु
(C) सरहपा (D) अज्ञेय

45. खड़ी बोली कहाँ बोली जाती है ?
(A) झाँसी (B) कानपुर
(C) मेरठ (D) अलीगढ़

व्याख्यात्मक हल

1. (A) आदिकाल—'पृथ्वीराज रासो' की रचना 'चन्द्रबरदाई' ने की थी। हिंदी साहित्य के इतिहास में लगभग 8वीं शताब्दी से लेकर 14वीं शताब्दी के मध्य तक के काल को 'आदिकाल' कहा जाता है। इस युग को यह नाम डॉ. हजारी प्रसाद द्वि वेदी जी से मिला है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'वीरगाथा' तथा विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसे 'वीरकाल' नाम दिया है।
इस समय का साहित्य मुख्यतः चार रूपों में मिलता है—
1. सिद्ध साहित्य तथा नाथ साहित्य
2. जैन साहित्य
3. चारणी–साहित्य
4. प्रकीर्णक साहित्य
आदिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ— अब्दुर्रहमानः संदेश रासकनरपति नान्हः बीसल देव रासो (अपभ्रंश हिन्दी) चंदबरदाई : पृथ्वीराज रासो (डिंगल–पिंगल हिन्दी) दलपतिविजयः खुमानरासो (राजस्थानी हिंदी) जगनिकः परमालरासो हैं।

2. (D) जगनिक—
परमाल रासो आदिकालीन हिंदी साहित्य का प्रसिद्ध वीरगाथात्मक रासो काव्य है। वर्तमान समय में इसका केवल आल्हा खण्ड उपलब्ध है जो वीरगाथात्मक लोकगाथा के रूप में उत्तर भारत में बेहद लोकप्रिय रहा है। इसके रचयिता जगनिक हैं। वे कालिंजर तथा महोबा के शासक परमाल (परमर्दिदेव) के दरबारी कवि थे। आल्हा खण्ड में महोबा के दो प्रसिद्ध वीरों आल्हा और ऊदल के वीर चरित का विस्तृत वर्णन किया गया है।

3. (B) संस्कृत—हिंदी का जन्म देवभाषा 'संस्कृत' से हुआ है तथा हिंदी 'शब्द' की उत्पत्ति संस्कृत के 'सिन्ध' शब्द से हुई मानी जाती है। संस्कृत की 'स' ध्वनि फारसी में 'ह' बोली जाती है; जैसे सप्ताह को हप्ताह आदि। सिंधु न कहकर हिन्दू कहने लगे। इसी तरह सिंधी से हिंदी, सिंध से हिंद और हिन्दुस्तानी आदि शब्द आते गए। हिंदी शब्द का अर्थ है—'हिंद का'। आगे चलकर यह शब्द 'हिंदी' की भाषा' के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा।

4. (A) मागधी अपभ्रंश के मध्यवर्ती रूप से विकसित यह बोली हिंदी और बांग्ला क्षेत्र की सन्धि पर मिथिला में बोली जाती है, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया तथा मुंगेर आदि में इसका क्षेत्र है। लोक–साहित्य की दृष्टि से मैथिली बहुत सम्पन्न है, साथ ही इसमें साहित्य रचना अत्यन्त प्राचीन काल से होती चली आई है। हिंदी साहित्य को विद्यापति जैसे रससिद्ध कवि देने का श्रेय मैथिली को ही है। इसके अतिरिक्त गोविन्ददास, रणजीतलाल, हरिमोहन झा आदि भी इनके अच्छे साहित्यकार हैं।

5. (C) मराठी भाषा पश्चिमी और मध्य भारत में बोली जाने वाली भारतीय आर्यभाषा है। इसका क्षेत्र मुंबई के उत्तर से गोवा के पश्चिमी तट और पूर्व में दक्कन तक फैला हुआ है। भाषाई स्तर पर यह एक आर्य भाषा है जिसका विकास संस्कृत से अपभ्रंश तक का सफर पूरा होने के बाद आरम्भ हुआ। मराठी भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है।

6. (B) देवनागरी लिपि एक ऐसी लिपि है जिसमें अनेक भारतीय भाषाएँ तथा कुछ विदेशी भाषाएँ लिखी जाती हैं। संस्कृत, पालि, हिंदी, मराठी, कोंकणी, भोजपुरी, मैथिली, संथाली आदि भाषाएँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं, इसे नागरी लिपि भी कहा जाता है।

7. (C) संस्कृत भाषा को हिंदी की जननी माना जाता है। संस्कृत भाषा के दो रूप हैं—
I. वैदिक संस्कृत II. लौकिक संस्कृत
वैदिक संस्कृत तथा लौकिक संस्कृत प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ हैं।
1. **वैदिक संस्कृत**—वैदिक संस्कृत के लिए यास्क तथा पाणिनी ने छान्दस् नाम भी प्रयुक्त किया है। इसके प्रयोग का समय 1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. माना गया है।
2. **लौकिक संस्कृत**—लौकिक संस्कृत के प्रयोग का समय 1000 ई. पू. माना गया है। वैदिक भाषा के साथ–साथ ही बोलचाल की भाषा संस्कृत थी जिसे लौकिक संस्कृत भी कहा जाता है।

8. (B) भारत में आर्यभाषा का आरंभ 1500 ई. पूर्व से 500 ई. पूर्व तक माना गया है। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा को दो भागों में बाँटा गया है—एक है वैदिक संस्कृत तथा अन्य है संस्कृत भाषा। आर्य लोग भी प्रारम्भ में संस्कृत भाषा का ही प्रयोग करते थे।

9. (B) मध्य भारतीय आर्य परिवार की भाषा अर्द्धमागधी अपभ्रंश संस्कृत और आधुनिक भारतीय भाषाओं के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यह प्राचीनकाल में मगध की साहित्यिक एवं बोलचाल की भाषा थी। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने इसी भाषा में अपने धर्मोपदेश दिए थे। आगे चलकर महावीर के शिष्यों ने भी महावीर के उपदेशों का संग्रह अर्द्धमागधी में किया जो 'आगम' नाम से प्रसिद्ध हुए।

10. (C) उत्तरी राजस्थान में इसका क्षेत्र अलवर, गुड़गाँव, भरतपुर है। मेओ जाति के इलाके मेवात के नाम पर इसे मेवाती भी कहते हैं। इसकी एक मिश्रित बोली अहीरवाटी है— जो गुड़गाँव, दिल्ली तथा करनाल के पश्चिमी क्षेत्रों में बोली जाती है। मेवाती में केवल लोक साहित्य है।

11. (A) नेपाली—नेपाल की राष्ट्रभाषा है। यह भाषा नेपाल की लगभग 50 प्रतिशत लोगों की मातृभाषा भी है। यह भाषा नेपाल के अतिरिक्त (सिक्किम, पश्चिम बंगाल, उत्तर-पूर्वी राज्यों आसाम, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय तथा उत्तराखंड के) अनेक लोगों की मातृभाषा है। भूटान तिब्बत और म्यांमार के भी अनेक लोग यह भाषा बोलते हैं।

12. (A) कन्नौज (संस्कृत कान्यकुब्ज) इस बोली का केन्द्र है, अतः इसका नाम कन्नौजी पड़ा है। यह इटावा, फर्रुखाबाद, शाहजहाँपुर, कानपुर, हरदोई, पीलीभीत आदि में बोली जाती है। कन्नौजी भी शौरसेनी अपभ्रंश से ही निकली है। यह ब्रजभाषा से इतनी अधि क समान है कि कुछ लोग इसे ब्रजभाषा की ही एक उपबोली मानते हैं। कन्नौजी में

केवल लोक–साहित्य मिलता है जिनमें से कुछ अंश प्रकाशित भी हो चुका है।

13. (D) हिंदी साहित्य में इतिहास–लेखन का सबसे पहला प्रयास एक फ्रेंच विद्वान गार्सा-द-तासी को ही समझा जाता है। जिन्होंने फ्रेंच भाषाएँ–'इस्त्वार-द-ला लितरेत्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी' ग्रन्थ लिखा जिसमें हिंदी और उर्दू के अनेक कवियों का विवरण क्रमानुसार किया गया है।

14. (A) राजस्थान के चारण कवियों ने अपने गीतों के लिए जिस साहित्यिक शैली का प्रयोग किया गया है, इसे 'डिंगल' कहा जाता है। वैसे चारण कवियों के अतिरिक्त 'प्रिथीराज' जैसे अन्य कवियो ने भी डिंगल शैली में रचना की है। 'डिंगल' के प्रमुख कवियों में बादर, प्रिथीराज, ईसरदास जी, दुरसा जी आढ़ा, करणीदान कवि आदि हैं।

15. (A) मागधी अपभ्रंश के मध्यवर्ती रूप से विकसित यह बोली हिंदी और बांग्ला क्षेत्र की सन्धि पर मिथिला में बोली जाती है। दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया तथा मुंगेर आदि में इसका क्षेत्र है। हिंदी साहित्य को विद्यापति जैसे प्रसिद्ध कवि देने का श्रेय मैथिली को ही है। इसके–अतिरिक्त गोविंददास, रणजीतलाल, हरिमोहन झा आदि भी इनके अच्छे साहित्यकार हैं।

16. (C) संक्रान्ति काल–

1. एक राशि का दूसरी राशि में गमन
2. सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने का समय।

विशेष–प्रायः सूर्य एक राशि में 30 दिन तक रहता है और जब एक राशि से निकलकर वह दूसरी राशि में जाता है तब उसे संक्रांति कहते हैं। वास्तव में संक्रांति काल वही होता है जब सूर्य दो राशियों को ठीक सीमा पर या बीच में होता है यह संक्रांति काल बहुत थोड़ा होता है।

17. (D) 'ब्रजबुलि साहित्य' की लंबी परम्परा रही है, फिर भी ''ब्रजबुलि'' शब्द का प्रयोग ई. सन् की 29 वीं शताब्दी में मिलता है। इस शब्द का प्रयोग अभी तक बंगाली कवि ईश्वर चंद्रगुप्त की रचना में मिला है।

18. (C) सिद्ध सरहपा (सरहपा सरोज व्रज) राहुल व्रज से सिद्ध संप्रदाय की शुरुआत मानी जाती है। यह पहले सिद्ध योगी थे। जाति से यह ब्राह्मण थे। राहुल सांकृत्यायन ने इनका जन्मकाल 769 ई॰ का माना है जिससे सभी विद्वान सहमत हैं। इनके द्वारा रचित बत्तीस ग्रंथ बताए जाते हैं जिनमें से दोहाकोश हिन्दी की रचनाओं में प्रसिद्ध है। इन्होंने पाखण्ड और आडंबर का विरोध किया तथा गुरुसेवा को महत्त्व दिया।

19. (D) पुष्पदन्त का समय 10वीं शती है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–1. महापुराण तीर्थंकर एवं रामकृष्ण का चरित (64 महापुरुषों की कथा), 2. जयकुमार चिरउ, 3. जसहर चिरउ, 4. आदि पुराण, 5. उत्तर पुराण।

20. (C) अयोध्या सिंह, उपाध्याय'' हरिऔध' की हिन्दी काव्य रचना है। हरिऔध जी को काव्य प्रतिष्ठा प्रियप्रवास से मिली। 1913 है। प्रियप्रवास विरह काव्य है। कृष्ण काव्य की परम्परा में होते हुए भी उससे भिन्न है। हरिऔध जी ने कहा है–मैंने श्री कृष्णचंद को इस ग्रंथ में एक महापुरुष की भाँति अंकित किया है। ब्रह्म करके नहीं। कृष्णचरित को इस प्रकार अंकित किया है जिससे आधुनिक लोग भी सहमत हो सकें।

21. (D) बघेली राजपूतों के आधार पर रीवां तथा आसपास का इलाका बघेल खण्ड कहलाता है और वहाँ की बोली को बघेल-खंडी या बघेली कहते हैं। बघेली का उद्भव अर्द्धमागधी अपभ्रंश के ही एक क्षेत्रीय रूप से हुआ है। इसका क्षेत्र रीवां, नागौर, शहडोल, सतना, मैहर तथा आसपास का क्षेत्र है।

22. (A) हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग 1000 वर्ष पुराना माना गया है। हिन्दी की आदि जननी संस्कृत है। संस्कृत पालि प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुँचती है, फिर अपभ्रंश, अवहट्ट से गुजरती हुई हिन्दी का रूप ले लेती है।

23. (B) हिन्दी दिवस प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाता है। 14 सितम्बर को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी।

24. (A) हिन्दी विश्व की एक प्रमुख भाषा है एवं भारत की राजाभाषा है। केन्द्रीय स्तर पर भारत में दूसरी आधिकारित भाषा अंग्रेजी है। यह हिन्दुस्तानी भाषा का एक मानकीकृत रूप है जिसमें संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबी–फारसी शब्द कम हैं।

25. (B) भारत में आर्य भाषा का आरम्भ 1500 ई. पू. के लगभग हुआ। प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का प्रयोग लगभग 1500 ई. पू. 500 ई. तक हुआ। इस भाषा के अंतर्गत वैदिक संस्कृत व लौकिक संस्कृत का विकास हुआ, मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा 500 ई. पू. – 1000 ई. तक, इसके अंतर्गत पालि, प्राकृत, अपभ्रंश भाषा का विकास हुआ तथा आधुनिक भारतीय आर्य भाषा 1000 ई. – अब तक, इसके अन्तर्गत हिन्दी और हिन्दीतर भाषाओं का विकास हुआ।

26. (D) तेलुगू भाषा भारत के आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों की मुख्य भाषा और राज भाषा है। यह भाषा आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के अलावा तमिलनाडु, कर्नाटक, ओडिशा और छत्तीसगढ़ राज्यों में बोली जाती है। तेलुगू के तीन नाम प्रचलित हैं–अंट–ऐसा कहते हैं, अंडि– जी–अंडी–जी।

27. (A) राजभाषा वह भाषा है जिसका प्रयोग देश के सरकारी कार्यालयों में कामकाज के लिए किया जाता है। भारत की राजभाषा हिन्दी है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अन्तर्गत 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया।

28. (B) ढूँढाड़ी बोली पूर्वी राजस्थान की है। जयपुर इसका प्रमुख केन्द्र है। इसलिए इसे जयपुरिया भी कहते हैं। यह शौर सेनी अपभ्रंश से विकसित है। यह अजमेर एवं किशनगढ़ में भी बोली जाती है।

29. (D) पालि प्राचीन भारत के लोगों की भाषा थी जो पूर्व में बिहार से पश्चिम में हरियाणा-राजस्थान तक और उत्तर से नेपाल, उत्तर प्रदेश से दक्षिण में मध्य प्रदेश तक बोली जाती थी। भगवान बुद्ध भी इन्हीं प्रदेशों में विचरण करते हुए लोगों को धर्म समझाते रहे। आज इन्हीं प्रदेशों में हिन्दी बोली जाती है। इसलिए पालि प्राचीन हिन्दी है।

30. (D) ब्राह्मी एक प्राचीन लिपि है जिससे कई एशियाई लिपियों का विकास हुआ है। देवनागरी सहित अन्य दक्षिण एशियाई, दक्षिण–पूर्व एशियाई तिब्बती तथा कुछ लोगों के अनुसार कोरियाई लिपि का विकास भी इसी से हुआ था।

31. (A) पूर्वी हिन्दी की तीन शाखाएँ मानी गई हैं–बघेली, छत्तीसगढ़ी और अवधी। अवधी बोली अर्द्धमागधी प्राकृत की परम्परा में आती है। यह बोली मुख्यतः अवध में बोली जाती है। अवध में बोली जाने वाली बोली के दो भेद हैं–1. पूर्वी अवधी
2. पश्चिमी अवधी

32. (B) पश्चिमी हिन्दी में कन्नौजी बुंदेली, खड़ी बोली, बांगरू तथा ब्रजभाषा को सम्मिलित किया गया है। खड़ी बोली अपने मूलरूप में मेरठ, बिजनौर, के आसपास बोली जाती है। बांगरू को जाट या 'हरियाणवी' भी कहते हैं। ब्रजभाषा मथुरा के आसपास ब्रजमंडल में बोली जाती है।

33. (D) आर्य भाषाओं का पश्चिमी समूह है जो मुख्यतः भारत में बिहार एवं इसके अन्य पड़ोसी राज्यों में बोली जाती है। कुछ बिहारी भाषाएँ; जैसे–अंगिका, बज्जिका, भोजपुरी, मगही, और मैथिली भारत के साथ–साथ नेपाल में भी बोली जाती है।

34. (C) शौरसेनी नामक प्राकृत मध्यकाल में उत्तरी भारत की एक प्रमुख भाषा थी। यह नाटकों में प्रयुक्त होती थी। बाद में इससे हिन्दी भाषा–समूह व पंजाबी विकसित हुई। दिगम्बर जैन परम्परा के सभी जैनाचार्यों ने अपने महाकाव्य शौरसेनी में ही लिखे जो उनके आदृत महाकाव्य हैं।

35. (B) पूर्वी हिन्दी की तीन शाखाएँ मानी गई हैं– बघेली, छत्तीसगढ़ी और अवधी। अवधी बोली अर्द्धमागधी प्राकृत की परम्परा में आती है। यह मुख्यतः अवध में बोली जाती है। अवध में बोली जाने वाली बोली के दो भेद हैं– 1. पूर्वी अवधी 2. पश्चिमी अवधी।

36. (A) पालि प्राचीन उत्तर भारत के लोगों की भाषा थी जो पूर्व में बिहार से पश्चिम में हरियाणा–राजस्थान और उत्तर में नेपाल–उत्तर प्रदेश से दक्षिण में मध्य प्रदेश तक बोली जाती थी। भगवान बुद्ध भी इन्हीं प्रदेशों में विचरण करते हुए लोगों को धर्म समझाते रहे। आज इन्हीं प्रदेशों में हिन्दी बोली जाती है इसलिए पालि प्राचीन हिन्दी है।

37. (A) कन्नौज और उसके आस–पास बोली जाने वाली भाषा को कन्नौजी या कनउजी भाषा कहते हैं। 'कान्यकुब्ज' से कन्नौज शब्द व्युत्पन्न हुआ और कन्नौज के आस–पास की बोली कन्नौजी नाम से अभिहीत की गई। कन्नौज वर्तमान में एक जिला है जो उत्तर प्रदेश में है। यह भारत का अति प्राचीन, प्रसिद्ध एवं समृद्ध नगर रहा है। अवधी–अवध क्षेत्र की भाषा अवधी कहलाती है जो हिन्दी की एक उपभाषा है। अवधी का प्राचीन साहित्य बड़ा संपन्न है। इसमें भक्ति काव्य और प्रेमाख्यान काव्य दोनों का विकास हुआ। भक्तिकाव्य का शिरोमणि ग्रंथ गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस है। मलूकदास आदि संतों ने भी इसी भाषा में रचनाएँ कीं। प्रेमाख्यान का प्रतिनिधि ग्रंथ मलिक मुहम्मद जायसी रचित 'पद्मावत' है जिसकी रचना 'रामचरितमानस' से चौंतीस वर्ष पहले हुई। अवधी की यह सफल परम्परा आज भी चली आ रही है।

38. (B) बघेली या बघेली हिन्दी की एक बोली है जो भारत के बघेलखण्ड क्षेत्र में बोली जाती है। यह मध्य प्रदेश के रीवा, सतना, सीधी, उमरिया एवं शहडोल, अनूपपुर में, उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद एवं मिर्जापुर जिलों में तथा छत्तीसगढ़ के बिलासपुर एवं कोरिया जनपदों में बोली जाती है। इसे 'बघेलखण्डी' 'रिमही' और 'रिवई' भी कहा जाता है।

39. (C) हिन्दी के प्रमुख रचनाकार पं. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' का जन्म 7 जुलाई, 1883 को पुरानी बस्ती जयपुर में हुआ था। गुलेरी जी अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। आप संस्कृत, पाली, प्राकृत, हिन्दी, बांग्ला, अंग्रेजी, लैटिन और फ्रेंच आदि भाषाओं पर अधिकार रखते थे। निबंधकार के रूप में भी चन्द्रधर जी बड़े प्रसिद्ध रहे हैं इन्होंने सौ से अधिक निबंध लिखे हैं। चन्द्रधर के निबंध विषय अधिकतर–इतिहास, दर्शन, धर्म मनोविज्ञान और पुरातन संबंधी ही हैं।

40. (B) हिन्दी ब्रजभाषा मेवाती, मारवाड़ी, शेखावटी, हाड़ौती, जैसी कई भाषाओं के मिश्रित झुंड को राजस्थानी भाषा का नाम दिया गया। इसे वर्तमान में देवनागरी में लिखा जाता है। राजस्थानी भाषा भारत के राजस्थान प्रांत व मालवा क्षेत्र तथा पाकिस्तान के कुछ भागों में करोड़ों लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है।

41. (B) आर्य भाषाओं का पश्चिमी समूह है जो मुख्यतः भारत में बिहार एवं इसके अन्य पड़ोसी राज्यों में बोली जाती है। कुछ बिहारी भाषाएँ, जैसे–अंगिका, मज्जिका, भोजपुरी, मगही और मैथिली भारत के साथ–साथ नेपाल में भी बोली जाती हैं।

42. (C) जब किसी बोली में साहित्य की रचनाएँ होने लगती हैं और क्षेत्र का विकास हो जाता है, तो वह बोली न रह कर उपभाषा हो जाती है, हिन्दी की पाँच उपभाषाएँ हैं—राजस्थानी, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी, पहाड़ी।

43. (D) मध्य भारतीय आर्य परिवार की भाषा अर्द्धमागधी संस्कृत और आधुनिक भारतीय भाषाओं के बीच की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। यह प्राचीन काल में मगध की साहित्यिक एवं बोलचाल की भाषा थी। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने इसी भाषा में अपने धर्मोपदेश दिए थे। आगे चलकर महावीर के शिष्यों ने भी महावीर के उपदेशों का संग्रह अर्द्धमागधी में किया जो आगम नाम से प्रसिद्ध हुए।

44. (A) विद्यापति भारतीय साहित्य की 'शृंगार' परम्परा के साथ–साथ 'भक्ति परम्परा' के प्रमुख स्तंभों में से एक और मैथिली के सर्वोपरि कृति के रूप में जाने जाते हैं। इनके काव्यों में मध्य कालीन मैथिली भाषा का स्वरूप दर्शन किया जा सकता है। इन्हें वैष्णव, शैव और शाक्त भक्ति के रूप में भी स्वीकार किया गया है।

45. (C) मेरठ भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का एक शहर है। यह प्राचीन नगर दिल्ली से 72 किमी उत्तर पूर्व में स्थित है। मेरठ राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का हिस्सा है। यहाँ भारतीय सेना की एक छावनी भी है। यह उत्तर प्रदेश के सबसे तेजी से विकसित और शिक्षित होते जिलों में से एक है।

❑❑

Section B : English

Chapter 1

Comprehension

A Comprehension Exercise is mainly consisted of a passage, upon which questions are set. The main purpose of this exercise is to test the ability of a student. Therefore student is need to read the passage carefully and choose the correct answer out of the given alternatives.

Important Questions

Direction [Q. No. 1–172] : *Read the passages carefully and answer the following questions by choosing appropriate answer from the alternatives given below.*

Passage-1

1. A man found a cocoon of a butterfly. One day a small opening appeared. He sat and watched the butterfly for several hours as it struggled to force its body through that little hole. Then it seemed to stop making any progress. It appeared as if it had gotten as far as it could, and it could go no further. So the man decided to help the butterfly. He took a pair of scissors and snipped off the remaining bit of the cocoon. The butterfly then emerged easily. But it had a swollen body and small, shriveled wings. The man continued to watch the butterfly because he expected that, at any moment, the wings would enlarge and expand to be able to support the body, which would contract in time.

2. Neither happened! In fact, the butterfly spent the rest of its life crawling around with a swollen body and shriveled wings. It never was able to fly. What the man, in his kindness and haste, did not understand was that the restricting cocoon and the struggle required for the butterfly to get through the tiny opening were God's way of forcing fluid from the body of the butterfly into its wings so that it would be ready for flight once it achieved its freedom from the cocoon.

Word Meaning

cocoon—कृमिकोष, कच्चे रेशम का कोवा, hole—रन्ध्र, कन्दरा, snipped off—काटकर निकाल देना, emerged—उभर कर आना, swollen—फूला हुआ, shriveled—सिकुड़ा हुआ, crawling around—चारों ओर रेंगना, hast—जल्दी, शीघ्रता restricting—परिमित करना, सीमाबद्ध करना, fluid—द्रव पदार्थ।

1. The writer's message in his/her essay is about :
(A) needless struggles in life
(B) not to have any problems
(C) need for struggles in life
(D) escape pain at any cost

2. The essay is .... in form.
(A) argumentative (B) factual
(C) descriptive (D) discursive

3. A man noticed that the ....
(A) butterfly was emerging
(B) butterfly was hidden
(C) cocoon was growing
(D) cocoon was moving

4. The man's first instinct was :
(A) keep watching
(B) leave the cocoon alone
(C) help the butterfly
(D) leave the butterfly alone

5. The natural process would have the wings of the butterfly :
(A) unfold and remain stiff
(B) unfold and stretch out
(C) fold up and remain snug
(D) half open and snug against the body

6. A word that means 'to make or become withered' is :
(A) shriveled (B) moistened
(C) folded (D) wasted

7. What the first word 'A' of the passage is ?
(A) a noun (B) an adverb
(C) a determiner (D) None of these

8. The word 'took' is used in the passage as ....
(A) verb (B) preposition
(C) infinitive (D) None of these

9. Which tense is used in the sentence, A man found a cocoon of a butterfly.
(A) past perfect
(B) present perfect
(C) past indefinite
(D) present indefinite

10. "The butterfly then emerged easily". Which degree of adjective is used in the sentence ?
(A) comparative (B) positive
(C) superlative (D) None

11. Which one is the synonym of the word-freedom.
(A) liberty (B) captivity
(C) limitation (D) servitude

Passage-2

The political system always dominates the entire social scene; and hence those who wield political power are generally able to control all the different social sub-systems and manipulate them to their own advantage. The social groups in power therefore have always manipulated the education systems, especially when these happen to depend upon the state for their very existence to strengthen and perpetuate their own privileged position. But herein lies a contradiction. For the very realization of their selfish ends, the social groups in power are compelled to extend the benefits of these educational systems to the under privileged groups also. The inevitable task is generally performed with three precautions abundantly taken care of; One, the privileged groups continue to be the principal beneficiaries of the educational system, dominate the higher stages of education or the lead core of prestigious and quality institution or the most useful of courses, so as to safeguard their dominant position of leadership in all walks of life; Second, the system is so operated that under-privileged groups can utilize it only marginally in real terms and the bulk of them become either dropouts or push outs and get reconciled to their own interior status in society, Third, the few from the weaker section that survive and succeed in spite of all the handicaps are generally coopted within the system to prevent dissatisfaction.

Word Meaning

dominate—प्रभुत्व रखना, शासन करना, wield—उपयोग करना, sub-system—उप–तन्त्र, manipulate—कुशलतापूर्वक प्रयोग करना, existence—अस्तित्व, perpetuate—स्थिर करना, बनाये रखना, privileged—गौरवान्वित, Contra-diction—विरोधाभास, Compelled—बाध्य करना, inevitable—अपरिहार्य, abundantly—प्रचुर मात्रा में, beneficiaries—लाभान्वित होने वाले, prestigious—प्रतिष्ठित, utilize—उपयोग करना, marginally—मामूली, reconciled—सामंजस्य स्थापित करना, survive—बने रहना या जीवित रखना, co-opted—सहयोगित करना।

12. How do socially powerful people try to maintain their privileged position ?
(A) By maintaining control over political systems
(B) By maintaining control over social systems
(C) By maintaining control over education systems
(D) All of the above

13. Why underprivileged sections have to reconcile to their inferior status ?
(A) They are unable to effectively utilize the education system
(B) They have no interest in the system
(C) They are illiterate
(D) All of the above

14. What is the major idea reflected in the passage ?
(A) Powerful people are unable to fully control the system
(B) Major benefits have been snatched by the underprivileged
(C) Both (A) and (B)
(D) Neither (A) nor (B)

15. While writing a notice, the writer should prefer :
(A) active voice (B) passive voice
(C) any voice (D) None of these

16. Where will you add disclosures in a letter ?
(A) Below the signature and the right side margin
(B) Below the signature and the left side margin
(C) Above the signature and the right side margin
(D) Any of the above

17. 'Phonetics' is basically associated with :
(A) sounds (B) sentences
(C) grammar (D) All of these

18. The political system always dominates the entire scene .... Which tense is used in the above sentence ?
(A) present tense
(B) present indefinite tense
(C) past indefinite tense
(D) present perfect tense

19. The word 'upon' is used in the passage as ....
(A) an adjective (B) a noun
(C) a determiner (D) a preposition

20. .... and the bulk of them become either dropouts or pushouts and get reconciled to their own interior status in society.
The underlined words in the above sentence is :
(A) noun (B) pronoun
(C) conjunction (D) interjection

21. The inevitable task is generally performed with three precautions abundantly taken care of;
The underlined words in the above sentence are :
(A) Article, adjective, adverb
(B) Noun, adjective, adverb
(C) Adjective, adjective noun
(D) Possessive noun, article

Passage-3

If the census tells us that India has two or three hundred languages, it also tells us, I believe, that Germany has about fifty or sixty languages. I do not remember anyone pointing out this fact in proof of the disunity or disparity of Germany. As a matter of fact, a census mentions all manner of petty languages, sometimes spoken by a few thousand persons only; and often dialects are classed for scientific purposes as different languages. India seems to me to have surprisingly few languages, considering its area. Compared to the same area in Europe, it is far more closely allied in regard to language, but because of widespread illiteracy, common standards have not developed and dialects have formed. The principal languages of India are Hindustani (of the two varieties, Hindi and Urdu), Bengali, Gujarati, Marathi, Tamil, Telugu, Malyalam and Kannada. If Assamese, Oriya, Sindhi, Kashmiri, Pushtu and Punjabi are added, the whole country is covered except for some hill and forest tribes. Of these, the Indo-Aryan languages, which cover the whole north, centre and west of India, are closely allied; and the southern Dravidian languages, though different, have been greatly influenced by Sanskrit, and are full of Sanskrit words.

Word Meaning

census—जनगणना, disunity—विभेद, एकता का अभाव, disparity—असमानता, petty languages—संकीर्ण भाषायें, dialects—बोलियाँ या उपभाषाएँ, scientific purpose—वैज्ञानिक उद्देश्य, widespread illiteracy—बड़े पैमाने पर अशिक्षा।

22. In the passage the author :
(A) compares India with Germany
(B) defends the multilingual situation of India
(C) criticises the illiteracy in India
(D) classifies the Indian languages

23. One of the reasons why there are many dialects in India is :
(A) vast area
(B) population
(C) more communities
(D) illiteracy

24. The Dravidian languages have been greatly influenced by Sanskrit. This :
(A) makes them inferior to the Indo-Aryan languages
(B) makes them superior to the Indo-Aryan languages
(C) brings them close to the Indo-Aryan languages
(D) makes them very different from the other Indian languages

25. Which of the following statements is true according to the given passage ?
(A) India has far too many languages
(B) India is a vast country with not too many languages
(C) India has as many languages as Europe does
(D) Indian languages are not as well developed as those of Europe

26. But is a .... of speech.
(A) Part (B) kind
(C) Figure (D) None of these

27. Give the opposite of 'Superior'.
(A) vast (B) inferior
(C) huge (D) din

28. Too is used in .... sense.
(A) positive (B) neutral
(C) negative (D) All of these

29. Give the opposite of 'far.'
(A) near (B) top
(C) bottom (D) below

30. "The principal languages of india are Hindustani .... " The underlined word is ....
(A) a pronoun (B) a noun
(C) a preposition (D) a conjunction

31. Of these, the indo-Aryan languages which cover the whole north, ...
(A) a personal pronoun
(B) a relative pronoun
(C) a distributive pronoun
(D) a reflexive pronoun

32. "............ common standards have not developed and dialects have formed." Here the verb 'have not developed' is in which tense.
(A) past perfect continuous
(B) past perfect
(C) present perfect
(D) future indefinite

Passage-4

Our body is a wondrous mechanism and when subjected to unusual stress over a period of time, it adapts itself to deal more effectively with that stress. Therefore, when you exert your muscles against resistance, they are forced to adapt and deal with this extraordinary workload. This is the principle of weight training. Strands of muscle fibres become thicker and stronger in response to the demands placed on them.

One of the great merits of weight training is the strength of your heart. During weight training, your heart is forced to beat faster and stronger in order to pump sufficient blood to the muscles being worked. In time, your heart, like your body, will adapt to this extra-workload by becoming stronger and more efficient. Since your body needs a given amount of blood to perform its daily tasks, your heart will now need fewer beats to pump the same quantity of blood. Sounds good ? There's more. Your entire circulatory

system is given a thorough workout every time you exercise, which increases its overall efficiency. Even the neural paths from your brain's command centres to each individual muscle become more effective, enabling easier recruitment of muscle fibres for carrying out physical tasks. In essence, your body becomes a well-oiled and finely-tuned piece of machinery, whirring along without any breakdown. In today's stress-filled world, you need all the help you can get.

Word Meaning

wondrous mechanism—चमत्कारिक तन्त्र या क्रियाविधि, unusual—असामान्य, adapts—अनुकूल बनाना, resistance—प्रतिरोध, extra-ordinary—अद्भुत असाधारण, strands—रेशा, circulatory system—संचार प्रणाली, enabling—योग्य बनाना, whirring—फरफराहट, essence—निष्कर्ष, सार या मूलतत्व।

33. The principle of weight training is :
(A) disposing extra workload
(B) thickening of body through extra consumption
(C) helping the body adapt to increased stress
(D) training muscles to exert more pressure

34. Weight training makes the muscles :
(A) thicker and stronger
(B) become stranded
(C) become intense
(D) resist workload

35. During weight training the heart pumps :
(A) required blood
(B) an extraordinary amount of blood
(C) less blood
(D) more blood

36. A stronger and more efficient heart :
(A) can rest longer, reducing its workload
(B) is assisted by muscles of the body
(C) beats faster and more often to pump blood
(D) needs fewer beats to pump the same amount of blood

37. When neural paths become more effective ?
(A) the brain employs various muscles easily for physical tasks
(B) the muscles function effectively and independently
(C) the brain functions at extraordinary speed
(D) the brain opens new pathways for communication

38. What does the term 'well-oiled' in the passage denote ?
(A) Massaged (B) Greased
(C) Healthy (D) Services

39. Which one of the following is the most appropriate title for the passage ?
(A) The Mechanics of Weight Training
(B) How to retain your health ?
(C) Health is Wealth
(D) Stressbusting

40. What does the above passage suggest ?
(A) We should ignore physical exercise
(B) We should subject our body to as much exercise as it can withstand
(C) We should carry out physical exercise as a routine
(D) Physical exercise is necessary occasionally

41. The word 'wondrous' (first line) is–
(A) an adverb (B) an adjective
(C) a verb (D) a noun

42. One of the great merits of weight training is the strength of your heart.
Which degree of adjective has been used in the above sentence ?
(A) Comparative (B) Superlative
(C) Positive (D) Both A & B

43. The most important part of some idea or thought is called :
(A) Reference (B) Context
(C) Essence (D) None of these

44. "During the wait training, your heart is forced to beat faster and stronger ...."
Which words in the above sentence are in comparative degree ?
(A) Fastest and strongest
(B) Fast and strong
(C) Faster and stronger
(D) None of these

45. How many determiners have been used in the following sentence ?
Since your body needs a given amount of blood to perform its daily tasks your heart will now need fewer beats to pump the same quantity of blood.
(A) 2 (B) 1
(C) 4 (D) 3

46. Enabling easier recruitment of muscle fibres for carrying out physical task.
Here the word 'easier' in :
(A) Comparative degree
(B) Positive degree
(C) Superlative degree
(D) None of these

47. What the first word 'our' of the passage is :
(A) Possessive pronoun
(B) Possessive adjective
(C) Reflexive pronoun
(D) Proper noun

48. Which one of the antonym of the word "Strength" ?
(A) Frailty (B) Robustness
(C) Muscle (D) Power

Passage-5

Books are of great value in life. They provide us all that we need in life. Books take us to height and thus they make us great and valuable in life.

Good books are our sincere friends. they are the true friends. Books become our friend in time when we need friends most. They are the storehouse of knowledge. Printing Press has brought books in large numbers. In this world good and evil go side by side. Evil ties to overpower the good and many a time it succeed in its efforts. When evil in man overpowers the good in him, he becomes a Satan but when the good is not subdued by evil, the man remains godly.

Word Meaning

provide—उपलब्ध करना, valuable—मूल्यवान, sincere—गम्भीर, निष्कपट, storehouse of knowledge—ज्ञान भण्डार, good and evil—अच्छाई और बुराई, side by side—साथ–साथ, overpower—पराजित करना, efforts—प्रयास, subdued—वशीभूत।

49. What is the word "life" in the first line of the passage ?
(A) an adjective
(B) an abstract noun
(C) a common noun
(D) a collective noun

50. The word 'sincere' in the above passage is :
(A) an adverb
(B) an adjective
(C) possessive pronoun
(D) None of these

51. Which tense is used in the above passage ?
(A) Past perfect tense
(B) Present perfect tense
(C) Present indefinite tense
(D) Past indefinite tense

52. How many determiners are used in the following sentence. Evil ties to overpower the good and many a time it succeed in its efforts.
(A) 1 (B) 3
(C) 2 (D) 4

53. Printing press has brought books in large numbers. The tense used in the verb 'has brought' is :
(A) Past perfect
(B) Present perfect
(C) Present indefinite
(D) Past indefinite

54. They provide us all that we need in life. Here the word 'us' is in—
(A) Subjective case (B) Objective case
(C) Possessive case (D) None of these

Passage-6

Your body is made up of sixty per cent water and you lose the essential fluid every minute of every day as you breathe, digest and hopefully work up a sweat. It is important that you put back every drop. Starting now, drink eight 230 mL glasses of water every single

day–that's the minimum, your body needs daily. That is the non-negotiable sugar savvy hydration Mantra. Many times when you think you're hungry, sleepy, depressed and/ or irritated, you're actually just dehydrated. Drinking enough water actually helps you combat water retention. Sounds counter intuitive, but think about it. If you are running around in a semi-dehydrated state all the time, your body is going to hang on to every single drop, giving you that puffy, unhealthy appearance. When you are properly hydrating, your body gets the message that all systems are operating smoothly and it continues its work of flushing out your system and ridding itself of the excess fluids.

If your goal is to lose weight, water is a must. When you're dehydrated, your body sends out signals that you need assistance. Many people mistake those thirsty SOS signals for hunger and take in hundreds of extra calories. They also don't solve the real problem–thirst! Drinking water can be a powerful appetite suppressant and allows you to cue into your real hunger. Your body also needs plenty of water for proper digestion, so you can get the most from the foods you eat. You are less susceptible to food cravings when your stomach is full and you're getting all the nutrients you need. Drink two glasses of water before every meal–you'll eat less! Your body uses water for fat.

Word Meaning

non-negotiable—अपरक्राम्य, (that can not be bought or sold depressed) —खिन्नचित, irritated—कुपित, dehydrated—निर्जलित, retention —अवधारणा, intuitive—अंतर्ज्ञानी सहज ज्ञान से उत्पन्न, puffy—स्थूल, smoothy—निर्विघ्न बिना किसी समस्या के, suppressant—दमनकारी, susceptible—अतिसंवेदनशील, cravings—तृष्णा, प्रबल इच्छा, nutrients—पोषक तत्व।

55. Our systems operate satisfactorily
(A) if excess fat is reduced
(B) when we enjoy a sound sleep
(C) when we are properly hydrated
(D) if we consume lots of fruits and vegetables

56. The best way to lose weight is to
(A) eat less starchy food
(B) take weight-reducing pills
(C) exercise atleast twice a day
(D) drink plenty of water

57. When we are dehydrated, we think we
(A) are about to collapse
(B) want to vomit
(C) are tired
(D) need food

58. What is the word 'water' in the first line of the passage ?
(a) a noun
(b) a common noun
(c) a material noun
(d) a possessive noun
(A) Only (a)
(B) Only (c)
(C) Both (a) and (c)
(D) Both (a) and (b)

59. ".................. your body needs daily". Which tense is used in this sentence ?
(A) Present indefinite tense
(B) Present perfect tense
(C) Past perfect tense
(D) None of these

60. "Drinking enough water actually helps you combat water retention."
The underlined words in this sentence are—
(A) Infinitive (B) Gerund
(C) Participle (D) Adverb

Passage-7

As the rulers of the planet, humans like to think that it the large creatures who will emerge victorious from the struggle for survival. However, nature teaches us the opposite: it is often the smallest species which are the toughest and most adaptable. A perfect example is the hummingbird, which is found in the Americas. One species of hummingbird known as the bee hummingbird ranks as the world's smallest and lightest bird and it is rarely visible when it is in flight. Humming birds are the only birds that can fly backwards. They feed mainly on the nectar of flowers, a liquid that is rich in energy. Nectar is an ideal food source, for hummingbirds. They need an incredible amount of energy to sustain their body metabolism. A hummingbird's wings flap at a rate of about 80 times per second and its tiny heart beats more than 1000 times per minute. This is why they must consume relatively large quantities of food. In the course of a day, a hummingbird consumes about half its body weight in nectar.

Word Meaning

ruler—शासक, planet—ग्रह, creatures—जीव, emerge—उभरना, struggle—संघर्ष, survival—उत्तरजीविता, species—जाति, adaptable—अनुकूलनीय, rarely visible—बहुत कम, nectar of flowers—मधु, incredible—अतुल्य, sustain—बनाये रखना, metabolism—चयापचय, consume—उपभोग करना, relatively —अपेक्षाकृत या तुलनात्मक रूप से।

61. Nature has made man realise the fact that :
(A) the large creatures emerge victorious from the struggle for survival
(B) the smallest creatures are the toughest and most adaptable
(C) humans who rule the planet are the most powerful beings on Earth
(D) the largest and the smallest species are equally tough and strong

62. Which of the following statements about the bee hummingbird is true ?
(A) It is obviously visible when it flies.
(B) It escapes our sight when it is in flight.
(C) It could fly high beyond the clouds.
(D) It cannot be seen when it is in flight.

63. Hummingbirds need a lot of energy in order to :
(A) maintain their body metabolism
(B) flap their wings and fly backwards
(C) sustain a steady rhythm of heart-beat
(D) win in the struggle for survival

64. The hummingbirds are exclusive in the sense that :
(A) they subsist only on nectar
(B) their pulse rate is more than 1000 per minute
(C) they consume half their bodyweight everyday
(D) they can fly backwards

65. The word 'incredible' in the passage means :
(A) tremendous (B) inexhaustible
(C) unbelievable (D) phenomenal

66. In the passage "smallest" word is given. Find out the positive degree of this word.
(A) small (B) smaller
(C) small above (D) None of these

67. The word 'planet' is used in the passage as ....
(A) noun (B) adjective
(C) conjunction (D) pronoun

68. Which tense is used in the following sentence ?
'They need an incredible amount of energy to sustain their body metabolism :
(A) present indefinite
(B) present perfect
(C) future indefinite
(D) past indefinite

Passage-8

As you know a great many people in India cannot read or write. They are illiterate. This is not their fault. They have never had the chance to learn to read. But we know, too, that our country cannot progress as it should do if the majority of the people are ignorant and uneducated. If we are to be the best kind of citizens we must be educated. We must at least be able to read books and newspapers and magazines. Now those of us, who have had the chance to go to school and to be educated, have been given something of which many of our neighbours have been deprived off. They, therefore, need our help. In this matter we are in a position to help them, if we are willing to do so. We should show our neighbourliness if we found our next door neighbour lying at the side of the road unable to move because he had broken his leg. Similarly we should show our neighbourliness when we find him unable to make progress because he cannot read.

Word Meaning

illiterate—अशिक्षित, fault—दोष, कमी, progress—प्रगति, उत्थान, majority—बहुमत, बहुसंख्यक, ignorant—अनभिज्ञ, अशिक्षित, educated—शिक्षित, unable—अयोग्य, neighbourliness—मिलनसारिता।

69. Choose the word from the alternatives that is opposite in meaning to the word 'illiterate' as used in the paragraph.
(A) deilliterate (B) non-illiterate
(C) un-illiterate (D) literate

70. The word illiterate is used in the first line of the paragraph as :
(A) an adjective (B) a noun
(C) a pronoun (D) an adverb

71. Which tense is being used in the sentence, 'They have never had the chance to learn or read'?
(A) Present indefinite
(B) Present perfect
(C) Past indefinite
(D) Past perfect

72. Choose an appropriate determiner to fill in the blank :
We should show our neighbourliness if we found one person lying injured at .... side of the road.
(A) a (B) an
(C) the (D) over

73. If we are to be the best kind of citizens, we must be educated.
Which degree of adjective has been used in the above sentence ?
(A) Positive (B) Comparative
(C) Superlative (D) None

74. In India many people especially in rural areas, are still illiterate and ignorant. Here the word **illiterate** is—
(A) a noun (B) a pronoun
(C) an adjective (D) conjunction

75. Many of our neighbours have been deprived.
Here the word **'many'** is a—
(A) noun (B) adjective
(C) determiner (D) preposition

76. Of which many of our neighbours have been deprived off. Change this sentence to past perfect tense.
(A) off which many of our neighbours were deprived off
(B) of which many of our neighbours had been deprived off
(C) of which many of our neighbours were being deprived off
(D) of which many of our neighbour had been depriving off

77. Choose the word from the alternatives that expresses the best meaning to the word 'progress' as used in the paragraph.
(A) growth (B) return
(C) deteriorate (D) None

78. A person who is unable to read and write :
(A) learned (B) illiterate
(C) eligible (D) None

Passage-9

The king turned round and saw a bearded man running towards them. His hands were pressed against his stomach, from which blood was flowing. When he reached the king he fell fainting to the ground. The king and the hermit removed the man's clothing and found a large wound in his stomach. The king washed and covered it with his handkerchief. At last the bleeding stopped.

The man began to feel better. The king brought fresh water and gave it to him. Then the king with the hermit's help carried the wounded man into the hut and laid him on the bed. The king tired by his walk and the work he had done, lay down on the floor and slept through the night. When he awoke, it was several minutes before he could remember where he was or who the strange bearded man lying on the bed was.

"Forgive me!" said the bearded man in a weak voice.

"I do not know you and have nothing to forgive you for," said the king.

"You do not know me, but I know you. I am that enemy of yours who swore revenge on you, because you put my brother to death and seized my property. I know you had gone alone to see the hermit, and I made up my mind to kill you on your way home. But the day passed and you did not return. So I left my hiding place, and I came upon your bodyguard, who recognised me and wounded me. I escaped from them but I should have died if you had not dressed my wounds. I wished to kill you, and you have saved my life. Now, if I live, and if you wish it. I will serve you as your most faithful servant and will order my sons to do the same. Forgive me!"

The king was very glad to have made peace with his enemy so easily and to have won him over as a friend.

Word Meaning

bleeding—रक्तस्राव (खून का बहना), wounded—घायल, seized—अधिकार में करना, hiding place—गुप्त स्थान, recognised—अभिज्ञात, पहचानना, dressed—घाव पर पट्टी बाँधना, serve—सेवा करना, faithful—वफादार, forgive—क्षमा करना।

79. The bearded man was :
(A) a hermit
(B) the king's enemy
(C) the king's bodyguard
(D) the king's servant

80. The king washed and dressed the wound because he wanted to :
(A) make peace with the bearded man
(B) help the hermit
(C) help a wounded man
(D) have the bearded man in his service

81. The bearded man asked for the king's forgiveness because :
(A) he slept on the bed while the king slept on the floor
(B) the king's bodyguard wounded him
(C) he wounded the king's bodyguard
(D) while he wished to kill the king, it was the king who had saved his life.

82. The bearded man swore revenge on the king because :
(A) the king put his brother to death and seized his property
(B) the king had gone alone to see the hermit
(C) the king's bodyguard wounded him
(D) the king wanted him to be his faithful servant

83. The king was very glad because :
(A) he had a peaceful sleep through the night.
(B) he had won an old enemy over as a friend
(C) the hermit had helped him
(D) he had helped a wounded man

84. The word 'against' is used in the second line of the passage as :
(A) conjunction (B) preposition
(C) adjective (D) adverb

85. Which tense has been used in the following sentence.
'The king washed and covered it with his handkerchief'.
(A) Past indefinite
(B) Present indefinite
(C) Present perfect
(D) Past continuous

86. The man began to feel better.
Which degree of adjective has been used in the above sentence ?
(A) positive (B) superlative
(C) comparative (D) None

87. Choose the word from the alternatives that is opposite in meaning to the word 'faithful' as used in the paragraph.
(A) treacherous (B) loyal
(C) devoted (D) good

Passage-10

Have you ever wondered what the qualities of a really professional teacher are ? I know that all teachers want their students to like them, but being liked isn't the be-all and end-all really, is it? I mean teachers have to make some unpopular decisions sometimes. Teachers can be popular just because they are friendly and helpful, but to be truly professional and effective, we need to be able to identify the skills and behaviour we require in a true professional. A professional teacher needs to be confident without being arrogant. Nobody can expect to have all the answers, so, if a student asks a real stinker, the professional teacher should be able to admit defeat but

offer to find out more for the student. And they must carry that promise out. When the teacher enters the classroom, she/he should have all the required materials and the lesson-plan ready. And, in orchestrating the class, the teacher must give everyone their chance to contribute and should be flexible enough to modify lessons if they are obviously not going to plan. Indeed, a fallback position is part of good planning. It stands to reason also that a teacher must observe punctuality and appropriate tidiness and dress : it is not possible to demand such behaviour from students if the teacher doesn't set the standards.

The last thing I would mention is that teacher should be able to feel that their professionalism entitles them to back up from the school directors. If a teacher has a problem class or student, then the school should have procedures for handling the difficulties. The teacher should not have to feel alone and vulnerable if a difficult situation arises. So, yes, professionalism cuts both ways : in the standards we demand of teachers and the framework we have for giving them support.

Word Meaning

professional—व्यावसायिक, पेशेवर, friendly—मित्रवत्, confident—आत्मविश्वासी, arrogant—अभिमानी, stinker—अप्रिय आदमी, flexible—लचीला, contribute—योगदान, modify—रूपान्तर करना, fallback—निवर्तन, पलटाव, mention—उल्लेख करना, entitle—सम्बद्ध होना, procedures—प्रक्रियाएँ, कार्यपद्धति, framework—रूपरेखा, संरचना।

88. The expression .... *isn't the be-all* and *end-all*.... is an assumption that pertains to the ..... point of view.
(A) writer's (B) teachers'
(C) students' (D) general

89. Here, the fallback position is the system where ..... well prepared.
(A) good students are
(B) good teachers are
(C) teachers, even if caught out unexpectedly, are still
(D) students and teachers who support each other are

90. Here *able to admit defeat* implies that :
(A) students can 'catch' a teacher unaware
(B) teachers easily lose self-confidence as they lack professionalism
(C) it doesn't matter if students often contradict what their teacher says
(D) teachers should be confident enough to own up to their 'unpreparedness'

91. Here, *orchestrating the class* suggests :
(A) the teacher controlling the class to ensure high grades
(B) the whole class performing uniformly well
(C) acknowledging the individual differences in the process of achievement
(D) that music helps academic achievement

92. Here, ... *asks a real stinker* ..... suggests that :
(A) teachers are always unprepared
(B) students can be better informed than their teachers
(C) students dislike teachers in general
(D) teachers are unprofessional in students' eyes

93. A word that can best replace the word *entitles* in the passage is :
(A) warrants (B) names
(C) calls (D) gives

94. The writer's view that *professionalism cuts both ways* means :
(A) teachers are faced with students and trustees hold them accountable
(B) teachers teach well when trustees pay them well
(C) trustees and their employee owe each other support
(D) students and teachers owe respect to the management of their school

95. A word from the passage that is the antonym of the word *unshakable,* is :
(A) vulnerable (B) difficult
(C) helpful (D) effective

96. Here, *framework* refers to the overall :
(A) school curriculum
(B) clearly spelt out duties for teachers
(C) system for assessment of teachers' performance
(D) transparency in fixing teachers' salary

97. Choose an appropriate article to fill in the blank—
.... professional teacher needs to be confident without being arrogant.
(A) an (B) the
(C) a (D) many

98. Nobody can expect to have all the answers, ...
Here the word 'Nobody' is a ....
(A) conjunction (B) pronoun
(C) noun (D) adjective

Passage-11

Some researchers suggest that emotional intelligence can be learned and strengthened, while others claim it is an inborn characteristic. The purpose for developing our emotional literacy is to precisely identify and communicate our feelings. When we do this we are helping nature fulfil its design for our feelings. We must know how we feel in order to be able to fill our emotional heeds. And we must communicate our feelings in order to get the emotional support and understanding we need from others, as well as to show our emotional support and understanding to them. Also, one of the first steps to developing our emotional intelligence is to improve our emotional literacy. In other words, to improve ability to identify our feelings by their specific names and the more specific we can be, the better. In the English language we have thousands of words which describe and identify our emotions, we just don't use many of them. If you are interested in working on your emotional literacy, the first step is to start using simple, three word sentences such as these : I feel sad. I feel hurt. I feel offended. I feel appreciated. I feel motivated. I feel disrespected. When we talk about feelings using three word sentences we are sending what have been called 'I messages'. On the other hand, when we say things like "you make me so jealous" we are sending a "You message". These "you messages" typically put the other person on the defensive, which **hurts** communication and relationships rather than helping.

Word Meaning

inborn—जन्मजात, स्वाभाविक, precisely—निश्चित रूप से, heed—ध्यान, literacy—साक्षरता, specific—विशेष, विलक्षण, offended—अपमानित, कुपित, appreciated—सराहा जाना, प्रशंसा करना, motivated—अभिप्रेरित, jealous—द्वेषी, ईर्ष्यालु, defensive—रक्षात्मक, hurt—हानि।

99. Which of the following is the same in the meaning to the word 'support' ?
(A) assist (B) oppose
(C) contradict (D) undermine

100. 'Emotional' is formed from the word :
(A) Emotionalize (B) Emotion
(C) Emotionally (D) None of these

101. Here 'emotional support' suggests :
(A) pity (B) tolerance
(C) wise counsel (D) sympathy

102. The antonym from the passage for the word 'general' is :
(A) nature (B) improve
(C) simple (D) specific

103. In the context 'defensive' means :
(A) support what is right
(B) support a point of view
(C) attack an injustice
(D) expressing anger

104. A word that means 'of a nature' is :
(A) literacy (B) offended
(C) precisely (D) typically

Passage-12

What is the future which awaits our children ? The underlying assumption of the question that Indian children have a common future is itself dubious. It can legitimately be asked whether a student who is well fed, attending a boarding school in the salubrious climate of the hills, and learning to use computers has any future in common with

a malnourished child who goes to a school with no blackboards, if indeed he does go to school. The later may have no worth-while future at all. And it might be worth-while to analyze the significance of this marginalization of more than seventy five percent of the children of this country. The failure to provide an infrastructure for primary education in the villages of India more than 60 years after independence is in sharp contrast with the sophisticated institutions, for technical institutes of higher education are funded by the government, which essentially means that the money to support them comes from taxes. And since indirect taxation forms a substantial part of the taxes collected by the government, the financial burden is borne by all the people. L. K. Jha put it graphically when he observed that 25 paise of every rupee spent on educating an IIT student comes from the pockets of men and women whose children may never enter a proper classroom.

Word Meaning

assumption—पूर्वधारणा, dubious—संदिग्ध, legitimately—जायज, तर्कसंगत तरीके से, fed—सिंचित, पोषित, salubrious—स्वास्थ्यवर्धक, worth-while—उपयुक्त, लाभप्रद, analyze—विश्लेषण करना, marginalization—प्रभावहीन करना, infrastructure—आधारभूत संरचना या बुनियादी ढाँचा, sophisticated—परिष्कृत, प्रगतिशील, substantial—आवश्यक पदार्थ, observed—अवलोकित, निगरानी करना।

105. Which one of the following words in comparative degree ?
(A) proper (B) never
(C) higher (D) legitimately

106. Which one is the compound word among the following ?
(A) classroom (B) education
(C) provide (D) failure

107. Identify the word closest in meaning to the word "DUBIOUS"
(A) unarguable (B) uncertain
(C) undoubted (D) undeniable

108. Identify the word opposite in meaning to the word "SOPHISTICATED"
(A) complicated (B) stylish
(C) difficult (D) facile

109. What is the major concern reflected in the passage ?
(A) The gap between different sections in Indian society is increasing
(B) Indian children do not enjoy common future
(C) both (A) and (B)
(D) only (B)

Passage-13

People in the villages of Rajasthan lead a very simple life. Their way of living has not changed over the years. They live in circular huts. The walls of these huts are covered with cowdung. Every hut has a small place for worship. The life of these people is full of difficulties. It is very hot in summers and cold in winters. Water is a major problem. Sometimes they have to walk a long distance to get drinking water. For their agriculture they depend on rains. But these people are very brave. They have learnt to face difficulties and they never lose hope. They also like to enjoy their life. Women like to wear dresses full of bright colours. People living in villages in Rajasthan have a rich tradition of music and dance. The people of Rajasthan are very proud of their culture.

Word Meaning

lead—निर्वाह या संचालन करना, circular huts—वृत्ताकार झोपड़ियाँ, cowdung—गोबर, tradition—परम्परा, culture—संस्कृति या सभ्यता।

110. The word 'cowdung' is a :
(A) blend
(B) primary derivative
(C) second derivative
(D) compound word

111. Which synonym of the word 'rich' is misspelt ?
(A) wealthy (B) afluent
(C) opulent (D) prosperous

112. Which of the following words is a synonym for 'brave' ?
(A) hardworking (B) valiant
(C) prosperous (D) enthusiastic

113. The antonym of 'bright' is :
(A) colourful (B) transparent
(C) dull (D) dark

114. Which of the following words is correctly spelt ?
(A) definition (B) defination
(C) difination (D) definetion

115. The adjective 'simple' can give us the noun :
(A) simplify (B) simply
(C) simplistic (D) simplicity

116. 'The way of living' can be replaced with the word :
(A) livelihood (B) liveliness
(C) lifelike (D) lifestyle

117. Which of the following is an adjective formed from the noun 'music' ?
(A) musician (B) musical
(C) musically (D) musicality

Passage-14

Our country gave birth to a mighty soul and he shone like a beacon not only for India but also for the whole world. And yet he was done to death by one of our own brothers and compatriots. How did this happen ? You might think that it was an act of madness but that does not explain this tragedy. It could only occur because the seed for it was sown in the poison of hatred and enmity that spread throughout the country and affected so many of our people. Out of that seed grew this poisonous plant. It is the duty of all of us to fight this poison of hatred and ill-will. If we have learnt anything from Gandhiji, we must bear no ill-will or enmity towards and person. The individual is not our enemy, it is the poison within him that fight and which we must put an end to.

Word Meaning

mighty—पराक्रमी, शक्तिशाली, beacon—संकेत द्वीप, प्रकाश, compatriots—स्वदेशवासी, tragedy—दुखान्त, प्रासरी, hatred—द्वेष, enmity—वैमनस्य, ill-will—ईर्ष्या।

118. Which one of the following is the synonym of the word 'beacon' ?
(A) light (B) dark
(C) black (D) stator

119. Ill-will is :
(A) an acronym
(B) a blend
(C) a compound word
(D) a primary derivative

120. Who is 'the Mighty soul' referred to in the above passage ?
(A) Nathuram Godsey
(B) Almighty God
(C) Mahatma Gandhi
(D) None of these

121. What do we learn from Gandhiji ?
(A) That we must hate all our enemies.
(B) That we must have no ill-will or enmity towards any person.
(C) That Indians should provoke communal riots.
(D) That all may live in India but some of them have right to be Indian.

122. What is the poison referred to in the above passage ?
(A) Hatred and goodwill to all other persons.
(B) Poisonous seeds and plants.
(C) Hatred and ill-will towards other persons.
(D) Love and patriotism.

Passage-15

He has reservations on the treatment of dance in Indian films, but, given a chance to work on his own terms, legendary Kathak Dancer Pandit Birju Maharaj would like to work more in Bollywood. The 75-year-old tells us, "In my opinion, dance is adulterated in Bollywood. To make it more dramatic, the dancers are asked to perform in an exaggerated manner. That makes any kind of dance impure, especially classical dance. I'd like to work more in Hindi films, provided my dance is not tampered with."

The kathak maestro tells us that over the years he's been highly impressed with how some female actors have showcased classical dance on screen. On being asked on how he

sees the passion for dance among youngsters in the country, Birju Maharaj says, "I see that the young generation is divided in their response to classical dance. But in all my interactions with the younger lot, I have been impressed. These children have such amazing presence of mind, listening and learning while I talk and teach them." It is often said that classical dance doesn't receive due credit, but the man who is an authority on the subject thinks Delhi receives the art well. "I feel that classical dance might not be on a rise, in popularity, but I have always been overwhelmed by the response that I have received in Delhi. My performances have always been applauded by packed houses in the Capital," he opines.

Word Meaning

Terms—शर्त, legendary—पौराणिक, to perform—निष्पादन करना, क्रियान्वित करना, exaggerated—अतिशयोक्तिपूर्ण, impure—दूषित, अशुद्ध, tampared with—विलयन, maestra—संगीतज्ञ, कलाकार, interaction—परस्परक्रिया, amazing—विस्मयकारी, over-whelmed—अभीभूत, applauded—सराहना, ताली बजाकर प्रशंसा करना, opine—विचार करना।

123. Something that was used in ancient times and is now no longer used :
(A) modern (B) tradition
(C) classical (D) none of these

124. Which one of the following is a secondary derivative ?
(A) response (B) capital
(C) younger (D) art

125. The information presented here about Birju Maharaj can be found in a/an :
(A) encyclopaedia
(B) autobiography
(C) newspaper article
(D) diary

126. The observation that 'dance is adulterated' means that the dance form is :
(A) performed only in films
(B) suitable to be performed by adults
(C) not practiced according to tradition
(D) found in adult entertainment

127. A 'packed house' during his performance suggests that it was :
(A) exceeding allotted time
(B) well attended
(C) jammed in tightly
(D) filled into

128. The younger dancers have 'presence of mind' means that they
(A) can combine to perform in the traditional and modern styles
(B) are calm while they prepare to perform
(C) are open to learning the pure form of the dance
(D) prefer traditional styles of dancing

129. A word that can replace the phrase 'tampered with' in the passage is :
(A) disturbed (B) misused
(C) falsified (D) misrepresented

130. An antonym for the word 'showcased' is :
(A) abridged (B) withheld
(C) advertised (D) published

131. A synonym for the word 'inspired' from the text is :
(A) received (B) divided
(C) adulterated (D) impressed

Passage-16

Something is radically wrong with the entire structure of human relationships that make man delight in killing man, whether it be in the name of civilization or religion or anything else. Two wrongs do not make a right, hatred must beget hatred. It is this fundamental truth that women have got to bring home to the people in their respective countries. No peace treaties can avail that have revenge as their basis and self righteous arrogance and hypocrisy in the so called victors. But women are the natural preservers of Life.

Word Meaning

radically—मौलिक रूप से, delight—हर्षित या आनंदित करना, religion—धर्म, पंथ, beget—उत्पन्न करना, treaty—सन्धि, avail—प्राप्त करना, revenge—प्रतिशोध, righteous—न्यायसंगत, arrogance—अभिमान, hypocrisy—पाखण्ड, preserver—संरक्षक।

132. Choose the word which is the most nearly the same meaning as the word 'righteous' as used in passage :
(A) virtuous (B) corrupt
(C) slut (D) unfair

133. Which one of the following words is spelt correctly ?
(A) avail (B) aveil
(C) aviel (D) evail

134. The expression "Two wrongs do not make a right" means that :
(A) a wrong action in retaliation does not mend matters.
(B) hatred destroys the person who perpetrates it.
(C) a tit for tat policy aggravates hatred.
(D) even repeated assertions of a wrong statement do not make it right.

135. Which word is opposite in meaning to 'preserver' as used in the passage ?
(A) enemy (B) destroyer
(C) rival (D) belligerent

136. Which of the following would sum up most suitably the central idea of the passage ?
(A) The role of women in the world of hatred and violence
(B) Man's instinct of destroying others
(C) Hatred leads to further hatred
(D) The significance of peace treaties

Passage-17

The massive fort of Jodhpur looked down from the hill at the new city **which** had sprawled out around the old one. The desert lay beyond the city. It crouched there like a lion, and was the colour of one, its rippled tawny pelt flea-specked here and there with small clumps of scrub. A gritty wind blew out of it, little rivers of sand eddied briefly down the pavements, then were snatched back into the air and flung like challenge to the south. At the edge of the city, herds of camels twined their long necks around stunted trees, as though they were snakes. Then there were no more trees. Tall whirl-winds of sand marched down towards us from the horizon.

The desert enclosed us for the next ten days. There was a glare and dazzle on the skyline at dawn, then the ferocious eye of summer opened for a long look at its domain. For the next twelve hours it scowled down at the sand. We closed our eyes, visualized shadow and water, narrowed them open once more to the parch and scald of the desert wind. The shifting wind caused the dunes constantly to collapse and reform, or drifted them lazily out as bulwarks across the road. The car had to stop at frequent intervals, so that we could clear the heaped sand away, or because one of the tyres, hissing on the burning surface of the tarmac, had exploded. During those prolonged and sweaty intervals by the roadside, we were passed, sometimes, by the ghostly herds of livestock moving south.

Word Meaning

massive—मध्यकाय, विशाल, looked down—नीचे देखा, sprawled—अव्यवस्थित रूप से फैल जाना, crouched—दबक, झुकाव, gritty—रेतीला, किसकिसा, flung—फटका, फेंकान, whirl winds—चक्रवात, बवंडर, marched—कूच किया, glare—चमक, dazzle—चकाचौंध, ferocious—उदण्ड, क्रूर, domain प्रान्त, रियासत, scowled down—गुस्से से देखना, parch and scald—झुलसाना, dune—टीला, बालूकूट, bulwarks—चारदीवारी, परकोटा, tarmac—पक्की सड़क, prolonged—दीर्घकालीन।

137. Which one of the following is a secondary derivative ?
(A) collapse (B) reform
(C) desert (D) back

138. Which one is the compound word among the following ?
(A) tall (B) shadow
(C) whirl-winds (D) tarmac

139. The only objects that actually broke the monotony of the vast desert were ....
(A) lions living in it
(B) rivers of sand in it.
(C) clumps of scrub here and there
(D) shadow and water.

140. Between the fort and the desert there is/ are :

(A) a hill (B) two cities
(C) three cities (D) no city

141. .... are compared to snakes.
(A) Herds of camels
(B) Edges of the city
(C) Stunted trees
(D) Long necks of camels

142. The narrator's style of description is :
(A) scholarly (B) poetic
(C) philosophic (D) analytical

143. '............ The new city **which** had sprawled ....' Which part of speech is the bold word in the above clause ?
(A) Noun (B) Pronoun
(C) Adjective (D) Conjunction

144. The desert enclosed us for the next ten days. Voice in the above sentence has been correctly changed in :
(A) We were enclosed by the desert.
(B) We had been enclosed by the desert.
(C) The desert had been enclosed.
(D) The desert was enclosed by us.

Passage-18

Raja Ram Mohan Roy is considered the pioneer of modern Indian Renaissance for the remarkable reforms he brought about in the 18th century India. Among his efforts, the abolition of the Sati-pratha–a practice in which the widow was compelled to sacrifice herself on the funeral pyre of her husband–was prominent. His efforts were also instrumental in eradicating the Purdah system and child marriage. In 1828, Ram Mohan Roy formed the Brahmo Samaj, a group of people, who had no faith in idol-worship and were against the caste restrictions.

Raja Ram Mohan Roy's father was a wealthy Brahmin and strictly performed the duties set by the religion. Ram Mohan himself was also devoted to Lord Vishnu and in his 14th year, he wanted to become a monk but his mother, Tarini Devi objected to his desire.

Ram Mohan viewed education as a medium to implement the social reforms. So, in 1815, Ram Mohan came to Calcutta and the very next year, started an English College by putting in his own savings. He was well aware that the students should learn the English language and scientific subjects and that's why he criticised the government's policy of opening only Sanskrit schools. According to him, Indians would lag behind if they do not get to study modern subjects like Mathematics, Geography and Latin. The government accepted this idea of Ram Mohan and also implemented it but not before his death. Ram Mohan was also the first to give importance to the development of mother tongue. His Gaudiya Byakaran in Bengali is the best of his prose works. Rabindranath Tagore and Bankimchandra also followed in the footsteps of Ram Mohan Roy.

Ram Mohan Roy was a staunch supporter of free speech and expression and fought for the rights of Vernacular Press. He also brought out a newspaper in Persian called Miratul-Akhbar (the Mirror of News) and a Bengali weekly called Sambad Kaumudi (the Moon of Intelligence). In those days items of news and articles had to be approved by the government before being published. Ram Mohan protested against this control by arguing that newspapers should be free and that the truth should not be suppressed simply because the government did not like it.

Word Meaning

pioneer—अग्रदूत, पथप्रदर्शक, indian renaissance—भारतीय, पुनर्जागरण, remarkable reforms—उल्लेखनीय सुधार, brought about—सम्पादित करना, abolition—उन्मूलन, compelled do—बाध्य करना, funeral pyre—चिता, prominent—प्रख्यात, मुख्यतः, eradicating—उन्मूलन करना, निर्मूल करना, staunch supporter—कट्टर समर्थक।

145. Raja Ram Mohan Roy is known for his :
(A) economic reforms
(B) literary reforms
(C) political reforms
(D) social reforms

146. When he was a teenager, Raja Ram Mohan Roy expressed his desire to become a :
(A) journalist (B) monk
(C) teacher (D) businessman

147. Raja Ram Mohan Roy believed that Indians would lag behind if they :
(A) forgot their cultural roots
(B) did not learn traditional skills
(C) gave up study of Sanskrit
(D) did not study modern subjects

148. Raja Ram Mohan Roy strongly supported
(A) rituals and observances
(B) physical education
(C) freedom of speech and expression
(D) moral education

149. Which synonym of the word renaissance is misspelt ?
(A) reuvenation (B) renewal
(C) comeback (D) alternation

150. Choose the one word which means-women whose husband is died ?
(A) widow (B) lady
(C) spinster (D) None of these

151. Which one of the following is a compound word ?
(A) restrictions (B) idol-worship
(C) viewed (D) scientific

Passage-19

There is no short cut to success. The route to success is hard and long. Consistent hard work is the main secret of success. Those who shun work are bound to fail. The second ingredient of success is perseverance. Perseverance is the steadfast pursuit of an aim without any let-up or hindrance. There may be difficulties, obstacles, hurdles and barriers in your path, but you don't have to get discouraged, disheartened and frightened. You have to push on with fortitude. Temptations of comfort and enjoyment have to be brushed aside.

Another important and indispensible requirement for success is concentration. All your attention and energy should be riveted to your aim in life. You should not be able to think of anything except your goal. No digressions and deviations.

Word Meaning

hard and long—जटिल, shun—बचना, नकारना, ingredient—संघटक, अवयव, let up or hindrance—ह्रास और अवरोध, frightend—भयभीत, temptations—प्रलोभन, fortitude—धैर्य, सहन–शक्ति, indispensible—अपरिहार्य, concentration—एकाग्रता, riveted—खूँटी से जड़ना, ध्यान आकर्षित करना, digressions and deviation—विषयान्तर और विचलन।

152. In the above paragraph the word 'second' indicates :
(A) sequence (B) addition
(C) emphasis (D) time

153. Which one of the following is the most appropriate title for the passage ?
(A) Aim of life
(B) Hard work and success
(C) Shortcut of success
(D) The secret of success

154. Hard work ...... in success.
(A) result (B) results
(C) resulted (D) None of these

155. In the above passage the author wants to convey :
(A) success is the result of hard work
(B) perseverance is essential for success
(C) to get success, get rid of all obstacles
(D) All of the above

156. People do hard work, hard work is essential for success, so people are hard working. Above lines contain :
(A) the fallacy of hasty generalization
(B) the fallacy of false analogy
(C) the fallacy of equivocation
(D) the fallacy of composition.

157. Another important and indispensible requirement for success is :
(A) energy (B) attention
(C) courage (D) concentration

158. The synonym of 'Fortitude' is :
(A) Fear (B) cowardice
(C) Patience (D) weakness

159. The opposite of 'success is :
(A) achievement (B) gain
(C) forfeit (D) winner

160. Which one of the following is a secondary derivative ?
(A) requirement (B) path
(C) another (D) goal

Passage-20

Raja Ravi Verma was the Indian King and painter whose paintings brought a momentous turn in Indian art. His works on great Indian epics Ramayana and Mahabharata brought the omnipresent deities to the surroundings of earthy world. This showed excellent fusion of Indian traditional art with European realism. These paintings influenced future generation artists and also influenced the literature and films. His representation of mythological characters has become a part of the Indian imagination of the classics. His style is criticized for being too gaudy and sentimental.

Ravi Verma was born on April 29th, 1848 in Kilimanoor Palace in Kerala. Ravi Verma was brought up in an environment of art and culture. At the age of seven he started painting the figures of animals, acts and scenes from daily life on the wall with charcoal. As he grew up, he was exposed to the famous paintings of Italian painting. Here he was using indigenous paints made from leaves, flowers. He enhanced his creativity by listening to the music of veterans, watching Kathakali, a folk dance form, going through the manuscripts preserved in ancient families and listening to the artistic interpretation of the epics.

Raja Ravi Verma is most remembered for his paintings of beautifully sari-clad women, who were depicted as graceful and shapely.

Word Meaning

momentus—महत्त्वपूर्ण, omnipresent—सर्वत्र, fusion—विलय, traditional art—पारम्परिक कला, mythological—ऐतिहासिक पौराणिक, gandy—भड़कीला, indigenous—स्वदेशी, enhanced—परिकृत, बढ़ा हुआ, interpretation—प्रस्तुतीकरण, निर्वचन, epics—ग्रन्थ, महाकाव्य।

161. In the extract, 'artistic interpretation of the epics' means he was interested in :
(A) unusual and rare myths found in legends.
(B) popular writing of his time.
(C) unique rendering of old mythologies.
(D) standards interpretation of the Indian epics.

162. Find a word in the passage which is the opposite of 'minimized' :
(A) enhanced (B) influenced
(C) criticized (D) exposed

163. The article is a/an
(A) autobiography (B) fiction
(C) essay (D) biography

164. The focus is on the subject's association with :
(A) dance (Kathakali)
(B) sculpture
(C) painting
(D) music

165. The themes of Ravi Verma's famous paintings were :
(A) female figures
(B) deities
(C) animals and habitats
(D) natural scenery

166. He was especially able to access historical documents in the possession of :
(A) his family members in Kilimanoor
(B) national museums that curate them
(C) certain individuals
(D) families who inherited them

167. As he matured in his craft, Ravi Verma's skills were influenced by :
(A) Ancient manuscripts
(B) Italian artists
(C) Indian cinema
(D) None of these

168. '*His style is criticized for being too gaudy and sentimental*' means that his work was characterized by :
(A) strong colours and emotionally appealing
(B) pale colours and sad atmosphere
(C) unrealistic images
(D) lacking intellectual and emotional depth

169. A synonym for 'omnipresent' is :
(A) magnificent (B) conspicuous
(C) universal (D) partly invisible

170. Which one of the following words is spelt correctly ?
(A) environment (B) figurs
(C) indegenous (D) anecient

171. "Sentimental" is formed from the word :
(A) sentement (B) sentiment
(C) sintimono (D) None of these

172. Choose the one word which means one present everywhere :
(A) omnipresent (B) atheist
(C) ascetic (D) braggart

Answers

1. (C)	**2.** (D)	**3.** (A)	**4.** (C)	**5.** (B)
6. (A)	**7.** (C)	**8.** (A)	**9.** (C)	**10.** (D)
11. (A)	**12.** (C)	**13.** (A)	**14.** (D)	**15.** (B)
16. (B)	**17.** (A)	**18.** (B)	**19.** (D)	**20.** (C)
21. (A)	**22.** (A)	**23.** (D)	**24.** (B)	**25.** (A)
26. (A)	**27.** (B)	**28.** (C)	**29.** (A)	**30.** (D)
31. (B)	**32.** (C)	**33.** (C)	**34.** (A)	**35.** (A)
36. (D)	**37.** (A)	**38.** (B)	**39.** (A)	**40.** (C)
41. (B)	**42.** (C)	**43.** (C)	**44.** (C)	**45.** (D)
46. (A)	**47.** (B)	**48.** (A)	**49.** (B)	**50.** (B)
51. (C)	**52.** (C)	**53.** (B)	**54.** (B)	**55.** (C)
56. (D)	**57.** (D)	**58.** (C)	**59.** (A)	**60.** (C)
61. (A)	**62.** (D)	**63.** (A)	**64.** (B)	**65.** (C)
66. (A)	**67.** (A)	**68.** (A)	**69.** (D)	**70.** (B)
71. (B)	**72.** (C)	**73.** (C)	**74.** (C)	**75.** (C)
76. (B)	**77.** (A)	**78.** (B)	**79.** (B)	**80.** (C)
81. (D)	**82.** (A)	**83.** (D)	**84.** (B)	**85.** (A)
86. (C)	**87.** (A)	**88.** (B)	**89.** (C)	**90.** (D)
91. (B)	**92.** (B)	**93.** (A)	**94.** (C)	**95.** (A)
96. (A)	**97.** (C)	**98.** (B)	**99.** (A)	**100.** (B)
101. (D)	**102.** (D)	**103.** (D)	**104.** (D)	**105.** (C)
106. (A)	**107.** (B)	**108.** (D)	**109.** (C)	**110.** (D)
111. (B)	**112.** (B)	**113.** (C)	**114.** (A)	**115.** (D)
116. (D)	**117.** (A)	**118.** (A)	**119.** (C)	**120.** (C)
121. (B)	**122.** (C)	**123.** (C)	**124.** (C)	**125.** (C)
126. (C)	**127.** (B)	**128.** (C)	**129.** (D)	**130.** (B)
131. (D)	**132.** (A)	**133.** (A)	**134.** (D)	**135.** (B)
136. (C)	**137.** (B)	**138.** (C)	**139.** (C)	**140.** (A)
141. (B)	**142.** (B)	**143.** (B)	**144.** (A)	**145.** (D)
146. (B)	**147.** (B)	**148.** (C)	**149.** (A)	**150.** (A)
151. (B)	**152.** (A)	**153.** (D)	**154.** (B)	**155.** (D)
156. (A)	**157.** (D)	**158.** (C)	**159.** (C)	**160.** (A)
161. (C)	**162.** (A)	**163.** (C)	**164.** (C)	**165.** (B)
166. (D)	**167.** (B)	**168.** (A)	**169.** (C)	**170.** (A)
171. (B)	**172.** (A)			

अध्याय 3

शिक्षण में रुचि

रुचि का अर्थ
(Meaning of Interest)

सामान्यतः रुचि से तात्पर्य व्यक्ति की पसन्द से होता है। कोई व्यक्ति जिस वस्तु अथवा क्रिया को पसन्द करता है और उसकी ओर आकर्षित होता है तो हम कहते हैं कि उसकी उसमें रुचि है, परन्तु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से रुचि मनुष्य की वह मानसिक संरचना है जो उसे किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा क्रिया आदि से स्वाभाविक रूप से जोड़ती है, वह उसकी ओर स्वाभाविक रूप से आकर्षित होता है और उसकी ओर स्वाभाविक रूप से अपना ध्यान केन्द्रित करता है।

'रुचि' शब्द अंग्रेजी भाषा के Interest शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। 'Interest' शब्द की उत्पत्ति, लैटिन भाषा के शब्द 'Interesse' से हुई है। **स्टाउट** के अनुसार—"इसके कारण अन्तर होता है।" "It makes a difference."

रॉस के अनुसार इस शब्द का अर्थ है—"यह महत्त्वपूर्ण होती है।" "It matters" या "इसमें लगाव होता है।" "It concerns." इस प्रकार जिस वस्तु में हमें रुचि होती है, वह हमारे लिए दूसरी वस्तुओं से भिन्न और महत्त्वपूर्ण होती है एवं हमें उससे लगाव होता है। रुचि में व्यक्तिगत विभिन्नता होती है। जैसे—बहुत-से लोगों की सिनेमा देखने में रुचि होती है तो बहुत-से लोगों की उपन्यास पढ़ने में। शिक्षा के लिए तो रुचि बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

रुचि की विशेषतायें
(Characteristics of Interest)

रुचि की विशेषतायें निम्नलिखित हैं—

विशेषताएँ

- रुचियाँ परिवर्तनशील होती हैं।
- रुचियाँ सामाजिक स्थिति, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर प्रभावित होती हैं।
- रुचियों के निर्धारण में प्रेरकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- रुचियों का निर्धारण व्यक्तित्व के विकास से होता है।
- रुचियाँ समय के अनुसार परिवर्तित होती हैं।

रुचि के प्रकार
(Types of Interest)

रुचि का विभाजन मनोवैज्ञानिकों ने अनेक प्रकार से किया है। कुछ विद्वानों का ऐसा मत है कि रुचियों का सम्बन्ध आदतों से होता है। किसी वस्तु या क्रिया में रुचि लेने का अर्थ है—उस वस्तु या क्रिया को आत्मसात करना। उन्होंने रुचि को निम्नांकित दो प्रकार का बताया है—

(i) **जन्मजात रुचि** (Inborn Interest)—जन्मजात रुचियों से अभिप्राय मूल प्रवृत्तियों से है। बच्चों में खेलने, खाने, हँसने आदि की प्रवृत्तियाँ होती हैं। माता की रुचि संतान में, भूखे व्यक्ति की रुचि भोजन में, बालक की रुचि खेल में होती है। ऐसी रुचियों को ही जन्मजात रुचि कहते हैं।

(ii) **अर्जित रुचि** (Derived Interest)—भावनायें, संवेदनायें व आवश्यकताओं से उत्पन्न रुचि को अर्जित रुचि कहते हैं। इस रुचि के कारण व्यक्ति किसी विशिष्ट कार्य में कौशल अर्जित (Acquisition of Skill) करता है। घड़ी-साज घड़ी की चाल देखते ही यह जान लेता है कि गड़बड़ कहाँ है ? इसी प्रकार कुशल अध्यापक भी यह जान लेता है कि बालक में कमी कहाँ है?

रुचि का स्वरूप
(Nature of Interest)

आधुनिक शिक्षा, सिद्धान्त तथा प्रयोग—दोनों में ही रुचि शब्द प्रायः प्रयुक्त होता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह वह आंतरिक शक्ति है जो किसी व्यक्ति विशेष को अपने पर्यावरण में वस्तु, व्यक्ति तथा क्रियाकलाप की ओर प्रदत्त करती है या उसे उनसे विमुख करती है। मनोवैज्ञानिक कोश के अनुसार—'रुचि' शब्द की प्रकृति अग्र प्रकार बताई गई है—

रुचि शब्द का अभिप्राय उस आन्तरिक इच्छा से है, जो व्यक्ति-विशेष को उसके पर्यावरण में विभिन्न वस्तु, व्यक्ति और क्रियाकलाप की ओर आकृष्ट करती है अथवा उसे उनसे विमुख करती है। यह तत्व मुख्य रूप से प्रभावशाली होता है। इसकी बलपूर्ण आत्मनिष्ठ अभिव्यक्ति अनुभूति का एक अंग है। इसका अनुमान हम निरीक्षण अथवा व्यवहार द्वारा कर सकते हैं। इस प्रकार के कर्म को हम इच्छा या अनिच्छा उसी प्रकार कह सकते हैं; जिस प्रकार हम मौखिक या लिखित वक्तव्यों को कह सकते हैं। फलतः व्यक्ति विशेष को किसी समाज, व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति रुचिपूर्ण कहा जा सकता है यदि वह या तो उसके प्रति इच्छा प्रकट करे या उसकी गतिविधि, व्यक्ति या वस्तु के प्रति अपने चयन की अभिव्यक्ति करे। रुचि व्यक्ति विशेष के अन्दर रहने वाली वह आंतरिक शक्ति है, जो उसे वस्तु, व्यक्ति तथा कार्य की ओर आकृष्ट करती है या इनसे विमुख करती है। यदि कोई व्यक्ति किसी वस्तु में रुचि लेता है तो वह उसमें बहुत समय तक बड़ी तत्परता से अपने को केन्द्रित कर देगा। वह हर दृष्टिकोण से उसका परीक्षण करेगा। थके होने पर भी वह इसमें तन्मय हो जायेगा।

रुचि भावात्मक तथा निजी होती है। यह व्यक्तिनिष्ठ या आत्मनिष्ठ होती है। **जॉन डीवी** ने रुचि के भावात्मक तथा निजी विषय के सम्बन्ध में अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया है—"जब हम किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में यह कहते हैं कि वह इस या उस वस्तु में रुचि लेता है तो हमारा बल व्यक्ति की निजी अभिव्यक्ति या उसके रवैये पर होता है। रुचि के रखने का अभिप्राय वस्तु विशेष में तल्लीनता होना है, संश्लिष्ट हो जाना और समा जाना है। किसी वस्तु में रुचि लेने का अभिप्राय उसके प्रति चौकन्ना रहना, उसकी देखभाल करना और उसके प्रति सावधान रहना है।"

रुचि की मुख्य कसौटी सावधानी है। यदि कोई व्यक्ति विशेष किसी वस्तु विशेष में रुचि लेता है तो उसका ध्यान उस पर लग जायेगा और वह अपना मस्तिष्क उस पर केन्द्रित कर देगा। उदाहरणार्थ—यदि हम कहें कि कोई बेरोजगार व्यक्ति विशेष अपने लिये रोजगार तलाश करने में रुचि रखता है। यदि यह व्यक्ति किसी समाचार-पत्र को देखेगा तो सबसे पहले इसका ध्यान 'आवश्यकता है' के स्तम्भ (Wanted Column) में जायेगा। यदि कोई व्यक्ति खेल में रुचि रखता है तो वह खेल के समाचार पर अपना ध्यान केन्द्रित करेगा। यह सब होने पर भी केवल रुचि ही सावधानी को दृढ़ करने का एकमात्र साधन नहीं है।

वस्तुतः कार्यकलाप तथा व्यक्ति का चुनाव भी रुचि की कसौटी है। उपलब्धि भी रुचि की एक कसौटी है। व्यक्ति विशेष अपनी रुचि के क्षेत्र में बड़ी द्रुत गति से उन्नति करता है। यदि कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यवसाय को अपनाता है जिसमें उसकी रुचि नहीं होती है तो वह उसमें बहुत कम सफलता प्राप्त करेगा। यदि किसी विद्यार्थी की किसी विषय विशेष में रुचि नहीं है तो वह उसमें उन्नति नहीं कर पायेगा, भले ही वह उसमें उत्तीर्ण हो जाये, किन्तु इतना होने पर भी रुचि ही वह घटक नहीं है जो उपलब्धि पर प्रभाव डालता है।

संलग्नता भी एक तत्व है जो यह बताता है कि व्यक्ति विशेष किसी काम में लगा हुआ है। कोई भी व्यक्ति उस काम में संलग्न नहीं होगा, जिसमें उसकी रुचि नहीं होगी।

योग्यता को भी रुचि की ही एक कसौटी मानना चाहिए। फिर भी यह बात ध्यान देने योग्य है कि योग्यता रुचि अथवा अरुचि के साथ सदा नहीं रहती है। उस समय बड़ा दुःख होता है जब किसी व्यक्ति-विशेष की किसी विशेष क्रियाकलाप में तीव्र रुचि तो होती है किन्तु उसमें उसकी उपयुक्त योग्यता नहीं होती है।

सावधानी, चुनाव, उपलब्धि, संलग्नता तथा योग्यता के अतिरिक्त पूर्वानुकूलता, भावना, मनोभाव तथा संवेग भी रुचि की कसौटियाँ मानी जाती हैं।

रुचि का मापन
(Measurement of Interest)

मनोवैज्ञानिकों ने रुचियों सम्बन्धी अध्ययनों के आधार पर 33 से अधिक रुचियों की परिकल्पना की है और इनके मापन के लिए उन्हें चार भागों में बाँटा है—अभिव्यक्त रुचियाँ (Expressed interests), प्रदर्शित रुचियाँ (Manifested interests), निष्कर्षात्मक रुचियाँ (Inferred interests) और सूचित रुचियाँ (Inventories interests)।

1. **अभिव्यक्त रुचियाँ एवं उनका मापन**—अभिव्यक्त रुचियाँ वे रुचियाँ हैं जो कोई व्यक्ति पूछने पर बताता है। जब किसी व्यक्ति से किसी वस्तु, व्यक्ति, क्रिया अथवा विचार के बारे में पूछा जाता है और वह उनके बारे में अपनी पसन्द या नापसन्द बताता है तो इससे उसकी रुचियाँ अभिव्यक्त हो जाती हैं।

   अभिव्यक्त रुचियाँ प्रायः अविश्वसनीय होती हैं, क्योंकि पूछने पर व्यक्ति अपनी वास्तविक रुचियों या पसन्दों को छिपाकर विभिन्न कारणों से गलत उत्तर दे सकता है। ये कारण अनेक हो सकते हैं—व्यक्ति का अपना पूर्व अनुभव, सामाजिक बन्धन, पारिवारिक मर्यादा, आर्थिक स्थिति या व्यक्ति की सफलता-असफलता या अन्य कोई। परन्तु इन त्रुटियों के बावजूद अभिव्यक्त रुचियों का शिक्षा के क्षेत्र में मार्गदर्शन के लिए काफी महत्व है।

   अभिव्यक्त रुचियों का मापन प्रायः प्रश्नावली (Questionnaire) द्वारा किया जाता है। प्रश्नावली के उत्तर व्यक्ति स्वयं बोलकर या लिखकर देता है। प्रश्नावली के प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर व्यक्ति की रुचियों का आकलन किया जाता है।

2. **प्रदर्शित रुचियाँ और उनका मापन**—प्रदर्शित रुचियाँ वे रुचियाँ हैं जो किसी व्यक्ति के प्रतिदिन के व्यवहार एवं कार्यों में प्रकट होती हैं। कोई व्यक्ति प्रतिदिन क्रिकेट खेलता है, टी. वी. देखता है, गाता है या ज्ञानवर्धक पुस्तकों को पढ़ता है तो ये क्रियाएँ उसकी रुचि को प्रकट करती हैं।

   प्रदर्शित रुचियाँ प्रायः अस्थायी होती हैं। इन रुचियों के पीछे कोई प्रेरक होता है और जब वह प्रेरक हट जाता है तो इस प्रकार की रुचियाँ भी समाप्त हो जाती हैं। यदि प्रेरक बदल जाए तो रुचि भी बदल जाती है। इस प्रकार ये रुचियाँ व्यक्ति की वास्तविक रुचियाँ नहीं होती हैं। प्रदर्शित रुचियों का मापन अवलोकन (Observation) द्वारा किया जाता है। अवलोकन से तात्पर्य व्यक्ति के प्रतिदिन के कार्यों एवं व्यवहारों के अवलोकन से है।

3. **निष्कर्षात्मक रुचियाँ और उनका मापन**—निष्कर्षात्मक रुचियाँ वे रुचियाँ हैं जो किसी परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर प्रकट होती हैं। उदाहरणार्थ—यदि एक छात्र गणित में 36% अंक प्राप्त करता है और हिन्दी साहित्य में 80% अंक प्राप्त करता है तो इन अंकों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि छात्र की रुचि हिन्दी साहित्य में अधिक है।

   निष्कर्षात्मक रुचियों का मापन उपलब्धि परीक्षणों द्वारा किया जाता है। विभिन्न विषयों की परीक्षाएँ आयोजित कर उन पर प्राप्त प्राप्तांकों से व्यक्ति की रुचि का आकलन किया जाता है। निष्कर्षात्मक रुचियों का मापन प्रत्येक विषय या रुचि के लिए पृथक् प्रश्न-पत्र द्वारा किया जाता है। यह कार्य अधिक व्यय एवं परिश्रमसाध्य है।

4. **सूचित रुचियाँ एवं उनका मापन**—सूचित रुचियाँ वे रुचियाँ हैं जिन्हें व्यक्ति किन्हीं प्रमापीकृत रुचि सूचियों पर प्रकट करता है। सूचित रुचियों का मापन प्रमापीकृत रुचि सूचियों के आधार पर सावधानीपूर्वक किया जाता है। व्यक्ति इन क्रियाओं पर अपनी पसन्द या नापसन्द को अभिव्यक्त करता है अथवा विभिन्न क्रियाओं पर अपनी तुलनात्मक पसन्द को दर्शाता है। तुलनात्मक पसन्द को ज्ञात करने के लिए प्रायः 5 बिन्दु पैमाना तैयार किया जाता है—अधिक पसन्द, पसन्द, उदासीन, कम पसन्द, बहुत कम पसन्द। व्यक्ति द्वारा व्यक्त की गई पसन्द, नापसन्द या तुलनात्मक पसन्द के आधार पर उसकी रुचियों का मापन किया जाता है।

रुचि और अवधान का सम्बन्ध
(Relation Between Interest and Attention)

रुचि का मूलाधार मूल–प्रवृत्तियाँ होती हैं। किसी वस्तु की ओर नैसर्गिक रूप से आकर्षित होना ही रुचि कहलाता है। ध्यान दी जाने वाली वस्तुओं का हमारे द्वारा चुनाव होता है। यह चुनाव हमारी रुचि के कारण ही होता है। जब हम तमाम वस्तुओं को देखते हैं तो जिस वस्तु में हमारी रुचि होती है, हमारा ध्यान उधर ही प्रबलता से आकर्षित होता है।

ध्यान और रुचि का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। रुचि एक ऐसी दशा है जिसमें हमारा मस्तिष्क सहनशील हो उठता है। ध्यान और रुचि साथ–साथ चलती हैं। हम जिस वस्तु की ओर ध्यान देते हैं उस वस्तु में प्रायः हमारी रुचि रहती है। ध्यान रुचि को जानने का एक महत्त्वपूर्ण लक्षण है। रुचि हमारे स्वभाव का एक अंग हो जाती है। हमारी रुचि जितनी प्रबल होगी हमारा ध्यान भी उतना ही प्रबल होगा। यदि किसी छात्रा की रुचि हिन्दी में है तो वह हिन्दी के पठन–पाठन की ओर विशेष ध्यान देगा। जिस वस्तु की ओर हमारी रुचि नहीं होती उसकी ओर हम उपेक्षा की दृष्टि रखते हैं। जिस छात्रा की रुचि संस्कृत में नहीं होती वह संस्कृत की ओर ध्यान भी नहीं देता है। इस प्रकार अवधान (ध्यान) व रुचि में बहुत ही गहरा सम्बन्ध होता है।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. निम्न में से कौन–सा कथन रुचि के बारे में सत्य नहीं है–
(A) रुचियाँ जन्मजात और अर्जित दोनों होती हैं।
(B) रुचियाँ समय के अनुसार बदलती रहती हैं।
(C) रुचियाँ योग्यताओं एवं अभिक्षमताओं से सम्बन्धित नहीं होती हैं।
(D) रुचियाँ व्यवहार में आकर्षण एवं विकर्षण के प्रतिबिम्ब नहीं हैं।

2. रुचि वह प्रवृत्ति है, जिससे हम किसी अनुभव में उद्दीप्त होकर उसे जारी रखना चाहते हैं। किसका कथन है।
(A) मॅग्डूगल
(B) भाटिया
(C) क्रो एवं क्रो
(D) बिंधम

3. Interest शब्द की उत्पत्ति हुई है।
(A) अंग्रेजी (B) लैटिन
(C) ग्रीक (D) इनमें से कोई नहीं

4. इसमें से जन्मजात रुचि नहीं है–
(A) हँसना (B) खाना
(C) रोना (D) भावनायें

5. प्रदर्शित रुचियों का मापन होता है।
(A) अवलोकन
(B) प्रश्नावली
(C) (A) और (B) दोनों
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

6. रुचि का सम्बन्ध है–
(A) योग्यता
(B) अवधान
(C) (A) और (B) दोनों
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

7. अभिव्यक्त रुचि होती है–
(A) अविश्वसनीय
(B) अस्थायी
(C) स्थायी
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

8. रुचि की विशेषता है–
(A) रुचियाँ परिवर्तन शील होती है।
(B) रुचियों का निर्धारण व्यक्तित्व के विकास से होता है।
(C) रुचियाँ समय के अनुसार परिवर्तित होती है।
(D) उपर्युक्त सभी

9. रुचि के प्रकार है–
(A) जन्मजात रुचि
(B) अर्जित रुचि
(C) (A) और (B) दोनों
(D) इनमें से कोई नहीं

10. बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए आप कौन–सी विधि का चयन करेंगे–
(A) बच्चों को पढ़कर आने को कहेंगे और प्रश्न पूछगें
(B) स्वयं गति विधि करेंगे तथा बच्चों को बतायेगें
(C) आप गतिविधि में बच्चों को शामिल करेंगे।
(D) बच्चों को स्वयं गतिविधि करने के लिए देंगे

उत्तरमाला

1. (D)	**2.** (D)	**3.** (B)	**4.** (D)	**5.** (A)
6. (B)	**7.** (A)	**8.** (D)	**9.** (C)	**10.** (D)

अध्याय
5

लुप्त पदों को ज्ञात करना

इन प्रश्नों में एक आकृति या आकृतियों का एक समूह, मैट्रिक्स, वर्ग, आयत आदि में एक निश्चित संख्या होती है जिनमें परस्पर एक सम्बन्ध होता है। यह सम्बन्ध अंकों व संख्याओं का जोड़, घटाना, गुणा, भाग, वर्ग व घनों का योग आदि हो सकता है। परीक्षार्थी को इनके सम्बन्ध को ज्ञात कर अगली आकृति में प्रश्न-चिह्न के स्थान पर सही मान लिखना होता है।

इसे निम्न उदाहरणों द्वारा समझा जा सकता है :

उदा. 1.

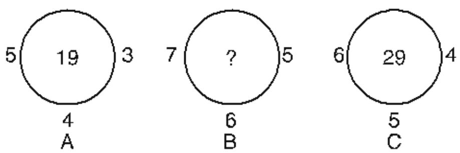

(A) 25 (B) 37
(C) 41 (D) 47

हल (C) : जिस प्रकार आकृति A में,

$5 \times 3 + 4 = 19$

तथा आकृति C में

$6 \times 4 + 5 = 29$

उसी प्रकार आकृति B में

$7 \times 5 + 6 = 35 + 6 = 41$

उदा. 2.

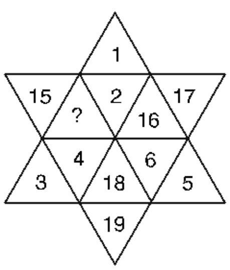

(A) 13 (B) 14
(C) 20 (D) 21

हल (B) : चित्र में दो अनुक्रम हैं।
1, 2, 3, 4, 5, 6
तथा 14, 15, 16, 17, 18, 19
अतः दूसरे अनुक्रम की बाईं ओर की संख्या 14 लुप्त है।

उदा. 3.

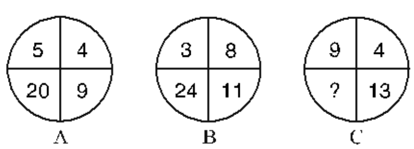

(A) 117 (B) 36
(C) 32 (D) 26

हल (B) : चित्र A में, $5 \times 4 = 20,\ 5 + 4 = 9$
चित्र B में, $3 \times 8 = 24,\ 3 + 8 = 11$
अतः चित्र C में, $9 \times 4 = 36,\ 9 + 4 = 13$

उदा. 4.

2	4	0
1	2	4
3	1	3
36	?	91

(A) 25 (B) 48
(C) 59 (D) 73

हल (D) : पहली कतार में $2^3 + 1^3 + 3^3 = 36$

दूसरी कतार में $4^3 + 2^3 + 1^3 = \boxed{73}$

तीसरी कतार में $0^3 + 4^3 + 3^3 = 91$

उदा. 5.

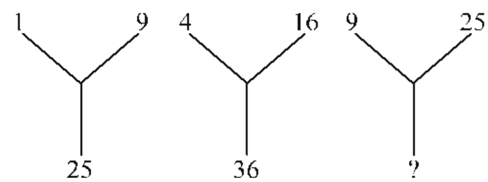

(A) 47 (B) 49
(C) 50 (D) 57

हल (B) : पहली आकृति दूसरी आकृति तीसरी आकृति

पहली आकृति	दूसरी आकृति	तीसरी आकृति
$1^2 = 1$	$2^2 = 4$	$3^2 = 9$
$3^2 = 9$	$4^2 = 16$	$5^2 = 25$
$5^2 = 25$	$6^2 = 36$	$7^2 = \boxed{49}$

उदा. 6. $6 \times 8 \times 5 \Rightarrow 568$

$2 \times 4 \times 3 \Rightarrow 324$

$9 \times 7 \times 2 \Rightarrow ?$

(A) 297 (B) 279
(C) 927 (D) 972

हल (A) : $6 \times 8 \times 5 \Rightarrow 568 \rightarrow$

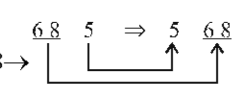

$2 \times 4 \times 3 \Rightarrow 324 \rightarrow$

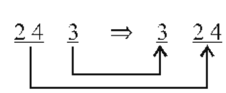

इसी प्रकार,

$9 \times 7 \times 2 \Rightarrow ? \rightarrow$

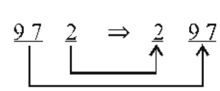

अतः $\boxed{? \Rightarrow 297}$

महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

निर्देश (प्रश्न संख्या 1 से 25 तक)

दिये गये प्रश्नों में लुप्त पद ज्ञात कीजिए।

1.

(A) 38 (B) 39
(C) 40 (D) 44

2. 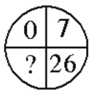

(A) 45 (B) 50
(C) 60 (D) 63

3.

1	7	9
2	14	?
3	105	117

(A) 26 (B) 20
(C) 16 (D) 12

4. 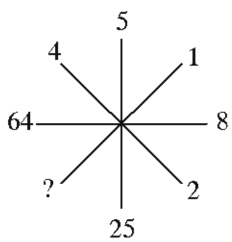

(A) 1 (B) 2
(C) 3 (D) 4

5.

1	3	7
2	4	4
4	5	9
3	2	3
50	70	?

(A) 23 (B) 115
(C) 118 (D) 220

6. 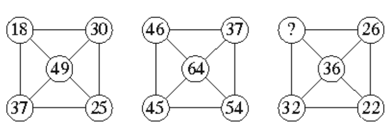

(A) 19 (B) 16
(C) 28 (D) 26

7.

4	9	1
6	8	4
34	113	?

(A) 9 (B) 4
(C) 28 (D) 16

8.

18	2	16
15	7	8
18	6	?

(A) 20 (B) 14
(C) 4 (D) 12

9.

754	(111)	421
730	(?)	427

(A) 121 (B) 222
(C) 101 (D) 333

10. 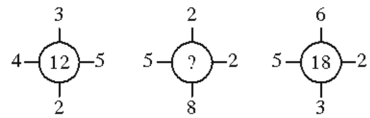

(A) 12 (B) 14
(C) 18 (D) 16

11. 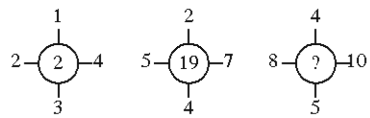

(A) 60 (B) 20
(C) 40 (D) 45

12. 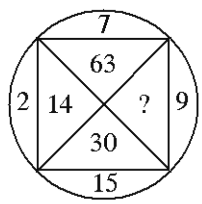

(A) 33 (B) 145
(C) 135 (D) 18

13. 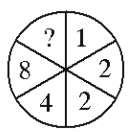

(A) 16 (B) 8
(C) 32 (D) 20

14. 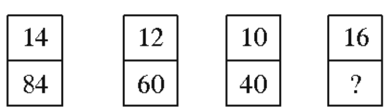

(A) 32 (B) 48
(C) 112 (D) 138

15. 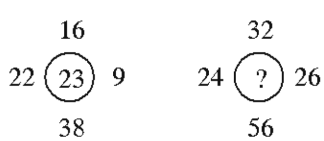

(A) 29 (B) 10
(C) 46 (D) 38

16. 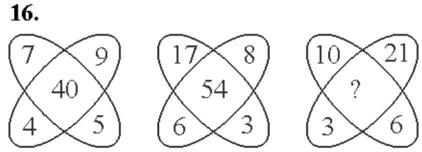

(A) 60 (B) 62
(C) 64 (D) 66

17. 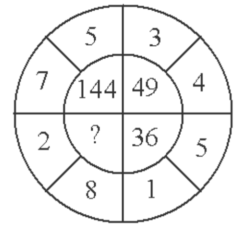

(A) 82 (B) 124
(C) 68 (D) 100

18. 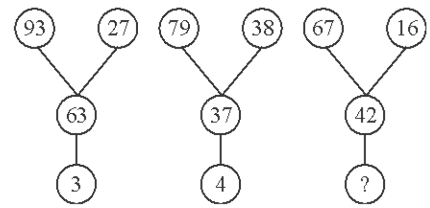

(A) 5 (B) 6
(C) 8 (D) 9

19. 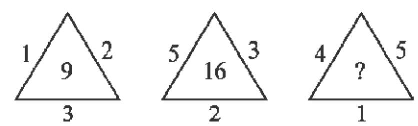

(A) 7 (B) 8
(C) 9 (D) 12

20. 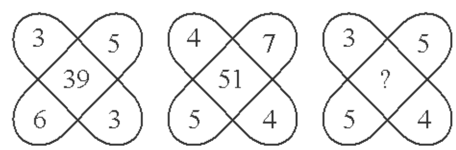

(A) 35 (B) 37
(C) 45 (D) 47

21. 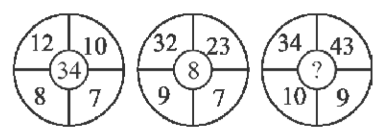

(A) 23 (B) 16
(C) 5 (D) 13

22. 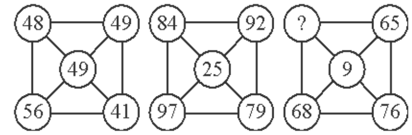

(A) 78 (B) 79
(C) 71 (D) 81

23. 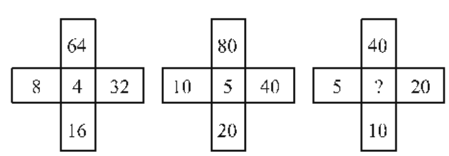

(A) 0 (B) 2.5
(C) 10 (D) 20

24.

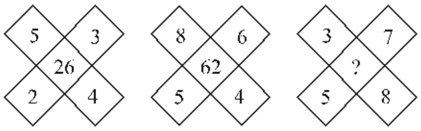

(A) 55 (B) 59
(C) 62 (D) 71

25.

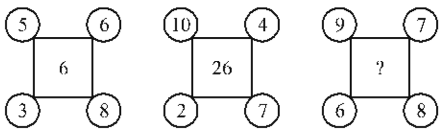

(A) 13 (B) 15
(C) 16 (D) 36

व्याख्यात्मक हल

1. (A) ∵ $9 + 2^2 = 13$

$13 + 3^2 = 22$

$22 + 4^2 = \boxed{38}$

∴ लुप्त संख्या = 38

2. (D) $1^3 - 1 = 0$

$2^3 - 1 = 7$

$3^3 - 1 = 26$

$4^3 - 1 = \boxed{63}$

∴ लुप्त संख्या 63 होगी

3. (D) $3 = 1 \times 2 + 1$

$105 = 7 \times 14 + 7$

$117 = 9 \times \boxed{12} + 9$

4. (A) $8^2 = 64, 2^2 = 4, 5^2 = 25$

$1^2 = \boxed{1}$

5. (B) $1 + 2 + 3 + 4 = 10 \Rightarrow 10 \times 5 = 50$

$3 + 4 + 5 + 2 = 14 \Rightarrow 14 \times 5 = 70$

∴ $7 + 4 + 9 + 3 = 23 \Rightarrow 23 \times 5 = 115$

∴ $? = 115$

6. (B) पहली आकृति में,

$25 - 18 = 7$

$37 - 30 = 7$

$7 \times 7 = 49$

दूसरी आकृति में,

$54 - 46 = 8$

$45 - 37 = 8$

$8 \times 8 = 64$

तीसरी आकृति में,

$32 - 26 = 6$

$22 - ? = 6$

$? = 22 - 6 = \boxed{16}$

7. (A) $(4)^2 + \frac{(6)^2}{2} = 16 + 18 = 34$

$(9)^2 + \frac{(8)^2}{2} = 81 + 32 = 113$

$(1)^2 + \frac{(4)^2}{2} = 1 + 8 = \boxed{9}$

8. (D) $18 - 2 = 16$

$15 - 7 = 8$

$18 - 6 = \boxed{12}$

9. (C) $\frac{754 - 421}{3} = \frac{333}{3} = 111$

$\frac{730 - 427}{3} = \frac{333}{3} = \boxed{101}$

10. (D) $\frac{2 \times 4 \times 3 \times 5}{10} = 12$

$\frac{3 \times 5 \times 6 \times 2}{10} = 18$

इसी प्रकार,

$\frac{8 \times 5 \times 2 \times 2}{10} = \boxed{16}$

11. (C) $(4 \times 2) - (3 \times 1) \times 2 = 8 - 6 = 2$

$(7 \times 5) - (4 \times 2) \times 2 = 35 - 16 = 19$

इसी प्रकार,

$(10 \times 8) - (5 \times 4) \times 2$

$= 80 - 40 = \boxed{40}$

12. (C) $2 \times 7 = 14$

$15 \times 2 = 30$

$7 \times 9 = 63$

$9 \times 15 = \boxed{135}$

13. (B) $1 \times 4 = 4$

$2 \times 4 = 8$

$2 \times 4 = \boxed{8}$

14. (B) $14 \times 6 = 84$

↓–1

$12 \times 5 = 60$

↓–1

$10 \times 4 = 40$

↓–1

$16 \times 3 = \boxed{48}$

15. (D) जिस प्रकार,

$22 + 16 = 38$

$2 \times 16 - 9 = 32 - 9 = 23$

उसी प्रकार,

$32 + 24 = 56$

$2 \times 32 - 26 = 64 - 26 = 38$

16. (D) जिस प्रकार,

$9 \times 4 = 36 + 4 = 40$

$7 \times 5 = 35 + 5 = 40$

तथा

$17 \times 3 = 51 + 3 = 54$

$8 \times 6 = 48 + 6 = 54$

उसी प्रकार,

$10 \times 6 = 60 + 6 = 66$

$21 \times 3 = 63 + 3 = 66$

17. (D) जिस प्रकार,

$5 + 7 = 12 \Rightarrow 12^2 = 144$

$3 + 4 = 7 \Rightarrow 7^2 = 49$

$5 + 1 = 6 \Rightarrow 6^2 = 36$

$2 + 8 = 10 \Rightarrow 10^2 = 100$

18. (D) $93 - (27 + 63) \Rightarrow 93 - 90 \Rightarrow 3$

$79 - (38 + 37) \Rightarrow 79 - 75 \Rightarrow 4$

$67 - (16 + 42) \Rightarrow 67 - 58 \Rightarrow \boxed{9}$

19. (C) $(1 + 2) \times 3 = 9$

$(5 + 3) \times 2 = 16$

$(4 + 5) \times 1 = \boxed{9}$

20. (B) $39 = (6 \times 5) + (3 \times 3)$

$51 = (5 \times 7) + (4 \times 4)$

$37 = (5 \times 5) + (4 \times 3)$

21. (D) $8 \times 7 - (12 + 10) = 34$

$9 \times 7 - (32 + 23) = 8$

∴ $10 \times 9 - (34 + 43) = \boxed{13}$

22. (B) $(56 - 49) \times (48 - 41) = 49$

$(97 - 92) \times (84 - 79) = 25$

$(68 - 65) \times (? - 76) = 9$

∴ $= 76 + 3 = \boxed{79}$

23. (B) $4 \times \underline{2} = 8$, $4 \times \underline{4} = 16$,

$4 \times \underline{8} = 32$, $4 \times \underline{16} = 64$

$5 \times \underline{2} = 10$, $5 \times \underline{4} = 20$,

$5 \times \underline{8} = 40$, $5 \times \underline{16} = 80$

इसी प्रकार,

$\boxed{2.5} \times \underline{2} = 5$, $2.5 \times \underline{4} = 10$,

$2.5 \times \underline{8} = 20$, $2.5 \times \underline{16} = 40$

अतः $\boxed{? = 2.5}$

24. (B) $(5 \times 4) + (3 \times 2) \Rightarrow 26$

$(8 \times 4) + (6 \times 5) \Rightarrow 62$

इसी प्रकार,

$(3 \times 8) + (5 \times 7) \Rightarrow 59$

अतः $\boxed{? = 59}$

25. (B) $5 \times 6 - 3 \times 8 \Rightarrow 6$

$10 \times 4 - 2 \times 7 \Rightarrow 26$

इसी प्रकार,

$9 \times 7 - 6 \times 8 \Rightarrow 15$

अतः $\boxed{? = 15}$

❑❑